राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-ग्रंथों के अन्तर्गत प्राचीन राजस्थानी-गुजराती-हिन्दी भाषाके जो ग्रन्थ प्रेसोंमें छप रहे हैं उनकी नामावलि ।

पद्यात्मक रचनाएं –

१ कान्हडदे प्रबन्ध कर्ता जालोर निवासी कवि पद्मनाभ ।
२ गोराबादल-पदमिणी चउपई कर्ता कवि हेमरतन ।
३ वसन्तविलास–फागु काव्य ।
४ सूर्यवंशप्रकाश अपर नाम लावारासा कर्ता चारण कवि गोपालदान
५ क्यामखां रासा – कर्ता मुस्लिम कवि जान ।

गद्यात्मक रचनाएं –

६ बांकीदासरी ख्यात ।
७ मुंहता नैणसीरी ख्यात ।
८ राठोड़ वंसरी वरसावि ।
९ खींची गंगेव नींबावतरा दोपहरो, राजान राउतरा बात वणाव आदि ।
१० दातारा एकलगिरडरी बात ।

छपनेके लिये तैयार होनेवाले कुछ ग्रन्थ

राजस्थानी सुभाषित रत्नाकर ।
पुरातन राजस्थानी पद्य संग्रह ।
चहुंमिर पद्मचन्द्रिका कवि केशवदास कृत ।
रणमलछन्द कवि श्रीधरव्यास कृत ।
जलाल बूबनारी बात ।
कुतबदी साहजादेरी बात ।
हिंगोळीराव पमारोंरी माथा
खेताव पाबूजीरी बात । इत्यादि इत्यादि ।

चारण कविया गोपालदान विरचित

कूर्मवंश यश प्रकाश

अपर नाम

लावारासा

विस्तृत भूमिका एवं टिप्पणीआदिसे समलंकृत

संपादन कर्त्ता

महताब चन्द्रजी खारैड

प्रकाशन कर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर

जयपुर, (राजस्थान)

[प्रथमावृत्ति प्रति सं ७५]

विक्रमाब्द २०१०] मूल्य [illegible] 3.50 [खिस्ताब्द १९५३

मुद्रक—जी एन मथन, एसोसिएटेड एडवर्टाइजर्स एण्ड प्रि लि., ५०५ आर्थर रोड बम्बई ७

लावारासा - अनुक्रमणिका

प्रधान संपादकीय किंचित् प्रास्ताविक		
संपादन कर्त्ताकी भूमिका	पृष्ठ	१–५०
लावारासा प्रथम प्रसंग	,,	१– ९
,, लावा युद्ध प्रसंग	,,	१०–१८
,, सदाना युद्ध प्रसंग	,,	१९–३६
,, उणियारा युद्ध प्रसंग	,,	३७–४८
,, द्वितीय लावा युद्ध प्रसंग	,,	४९–८६

किंचित् प्रास्ताविक

'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'में प्राचीन राजस्थानी एवं हिन्दीके जिन कतिपय ग्रन्थोंके प्रकाशन करनेका निश्चय पिछले वर्षके प्रारंभमें किया गया था उनमेंका प्रस्तुत ग्रन्थ चारण कविया गोपालदान विरचित 'कर्मचंद्रवंशप्रकाश' अपरनाम 'लावारासा' भी एक है जो अब इस प्रकार सुसंपादित और संमुद्रित होकर, प्रथम बार प्रकाशमें आ रहा है और विद्वानोंके कर कमलोंमें उपस्थित हो रहा है।

जिस समय प्रस्तुत ग्रन्थके संपादनकर्ता श्री महताब चन्द्रजी खारैडसे इस कृतिके विषयमें कुछ परिचय मिला और इनकी की हुई प्रतिलिपि देखनेमें आई, उस समय यह ज्ञात नहीं हुआ था कि इस ग्रन्थकी और भी प्रतियां कहींसे उपलब्ध हो सकती हैं। खारैडजीने जिस मूल प्रति परसे अपनी प्रतिलिपि की थी वह प्रति भी मुझे प्रत्यक्ष देखनेको नहीं मिली। अतः जैसी प्रतिलिपि खारैडजीकी थी उसीको छपनेके लिये प्रेसमें भेज दी गई। प्रेसने ग्रन्थका आधेसे अधिक भाग एकसाथ कंपोज करके भेज दिया और उसका संशोधन वगैरह हो कर उतना भाग छप गया तब फिर प्रेसने बाकीका भाग भी एकसाथ कंपोज करके करेक्शनके लिये भेजा। उस समय अकस्मात् भगतपुरा (जूड) के निवासी उत्साही राजपूत युवक श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत द्वारा ज्ञात हुआ कि इस ग्रन्थकी दो-एक प्रतियां तो उनके निजके पासमें हैं और कुछ अन्य प्रतियां अन्य सज्जनोंके पास भी उनने देखी हैं इत्यादि। प्राचीन ग्रन्थोंके संपादनकी हमारी अपनी शैली है कि प्रकाशनके लिये जो ग्रन्थ तैयार किया जाय उसकी जितनी भी प्राचीन प्रतियां ज्ञात या उपलब्ध हो सकती हों उन्हें प्राप्त करना, देखना एवं उनका परस्पर मिलान करना और फिर उनके आधार पर उसका यथाशक्य शुद्ध पाठ तैयार करके उसे प्रेसमें छपनेके लिये भेजना। लेकिन प्रस्तुत कृतिके विषयमें हम अपनी इस शास्त्रीय संपादन शैलीका प्रयोग नहीं कर सके। क्यों कि जिन अन्य प्रतियोंके अस्तित्वका जब हमें परिचय मिला तब तो इसके पाठका मुद्रण कार्य प्राय समाप्त होने पर था। इसलिये इस ग्रन्थका प्रस्तुत प्रकाशन केवल एक ही प्रतिकी प्रतिलिपिके आधार पर किया जा रहा है और इससे इसमें शब्द, वाक्य पंक्ति आदिकी दृष्टिसे कई प्रकारकी अशुद्धियोंका होना अनिवार्य है। यदि भविष्यमें इसके पुनर्मुद्रणका प्रसंग उपस्थित हुआ तो उपलब्ध अन्यान्य प्रतियोंका मिलान कर, उन परसे एक विवेचनात्मक और अनुसन्धानात्मक आवृत्ति–जिसे इंग्लीशमें क्रिटिकल एडिशन कहते हैं–तैयार होनी चाहिये।

श्रीयुत सौभाग्यसिंहजी शेखावत हमें सूचित करते हैं कि–

लावारासा की मेरे पास ३–४ प्रतियां हैं। एक तो मैंने हाजिर कर ही दी थी १ प्रतियां और हैं। ये प्रतियां मुझे विभिन्न व्यक्तियोंसे उपलब्ध हुई हैं। इनमेंसे (१) एक प्रति तो मेरे प्रपितामहके पास ही थी जो कि ठिकाना जूडमें कामदार थे। (२) दूसरी कुमार श्री देवीसिंहजी मंडावावालोंसे मिली है। (३) तीसरी गुमानजी मिश्रवास ग्राम दुलचासकी बकसी

बारैठ प्रभुदानजी कवीश्वरसे मिली है। कहते हैं कि यह प्रति गोपालदानजीकी हस्तलिखित प्रतिसे अनुकृत हुई है जो सबसे अच्छी है और मेरी प्रतिसे अधिक मिलती है। इसके सिवाय ठाकुर बहादुरसिंह मानूका (बूड़) के पास भी एक प्रति है जो पहली और तीसरी प्रतिसे मिलती है। इसके अतिरिक्त कल्याणदानजी मानदानजी कविया दीपपुरा सीकर ठाकुर किशनसिंहजी परस रामपुरा (उदयपुरवाटी) एवं रावराजा सरदारसिंहजी उनियाराके पास भी इसकी प्रतियां हैं। यद्यपि जैसा कि ऊपर सूचित किया गया है प्रस्तुत आवृत्ति केवल एक ही प्रतिकी प्रतिलिपिके आधार पर संपादित हुई है अतः इसमें पाठभेद पंक्तिभेद छन्दभेद आदि स्थान-स्थान पर दृष्टि गोचर होंगे – तथापि इसके संपादक श्री सारस्वतजीने इसे यथासंभव शुद्ध रूपमें तैयार करनेका यथेष्ट श्रम किया है और मूलके नीचे कठिन एवं अल्पपरिचित शब्दोंका अर्थ आदि देकर ग्रन्थके समझने समझानेका यथोचित प्रयत्न किया है। साथ ही में अच्छी विस्तृत भूमिका लिख कर ग्रन्थगत इतिहासका भी स्पष्ट दिग्दर्शन करानेका प्रयत्न किया है इससे ग्रन्थके अध्ययनकी उपयोगिता अधिक सिद्ध होगी।

सर्वोदय साधना आश्रम
चंदेरिया (मेवाड़)
दि. १०-८-५९

जिनविजय मुनि

भूमिका

वीरभूमि राजस्थान अपनी अमर वीर संतानोंकी वीरता त्याग एवं उदारताके लिये जगप्रसिद्ध है। इसके सपूतोंकी गौरव-गाथाएँ गा कर अनेक महाकवि अपने यशको अक्षुण्ण बना गये हैं। इन महाकवियोंने अपनी रचनाएँ राजस्थानकी प्रसिद्ध काव्यभाषा डिंगलमें की हैं। कहना नहीं होगा कि यह काव्यभाषा वीर-रसके व्यंजित करनेमें अन्य भाषाओंसे अपना स्थान कुछ ऊँचा रखती है, किन्तु यह भी बात नहीं है कि इस भाषामें अन्य रस उत्तमतासे व्यंजित ही नहीं हुए हों। इस भाषामें करुण शृंगार और शांत रस भी बहुत सुंदरतासे व्यंजित किये गये हैं, जिनका अनूठापन चित्तको बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है।

राजस्थानकी वीर गाथाओंको गाने वाले इन महाकवियोंमेंसे अनेक तो ऐसे थे जो स्वयं युद्धक्षेत्रमें अपनी वाणी और भुजाओं दोनोंका चमत्कार बताते थे जिनके रचित ग्रंथोंका उपयोग इतिहासकारोंने अपने इतिहासग्रंथोंमें किया है। इन महाकवियोंका उद्देश्य अपने आश्रयदाताओंका अत्युक्तिपूर्ण यशोगान ही नहीं था वरन् ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित करना भी था। ऐसे ही कवि-शिरोमणियोंमें कविया गोपाल भी थे जिनके रचित 'कूर्मवंशयशप्रकाश' अर्थात् 'लावारासा' में दोनों उद्देश्योंका सफलतापूर्वक निर्वाह हुआ है।

प्रस्तुत पुस्तक अर्थात् कूर्मवंशयशप्रकाश (लावारासा) स्व. पुरोहित हरिनारायणजी बी. ए., विद्याभूषणको किसी राजपूत सज्जनसे प्राप्त हुई थी जिसका विचार इसे प्रकाशित करा देनेका था। श्रद्धेय पुरोहितजीने यह पुस्तक सम्पादन करनेको मुझे दी। सम्पादन और टिप्पणियोंका कार्य सन् १९३७ ई. के आसपास ही समाप्त हो चुका था। भूमिकार्थ देनेके लिये ऐतिहासिक-सामग्री एकत्रित की जा रही थी इधर महासमर आरंभ हो जानेसे कागज दुष्प्राप्य हो गया। सुतराम् इस पुस्तकका प्रकाशन-कार्य रुक गया। संवत् २ २ वि में पुरोहितजी साहबके निधनसे भूमिकामें जो कुछ उनके विचार लिखे जानेको थे वह उन्हींके साथ चले गये। अब भूमिकाका भार भी मेरे ऊपर ही आ पड़ा। मेरे लिये यह कार्य बिलकुल नवीनतम ही रहा। पुरोहितजी भूमिकामें क्या-क्या देना चाहते थे यह मुझे इस विषयमें उनसे हुई बातचीतसे मालूम हो गया था। उसी आधार पर चल कर, प्रस्तुत सामग्री एकत्रित कर उपस्थित कर रहा हूँ। यद्यपि इसमें अनेक प्रकारकी त्रुटियाँ पाठकोंको प्राप्त होंगी तथापि मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि विद्वान् पाठकगण मेरी अल्पज्ञता एवं प्रथम प्रयासको ध्यानमें रख कर क्षमा करेंगे।

कविया गोपालजीका यह दूसरा ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। इससे पूर्व इनका एक ग्रंथ श्रद्धेय स्व. पुरोहित श्री हरिनारायणजी द्वारा संपादित "शिखरवंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक" (सीकरका इतिहास) नागरी प्रचारणी सभा काशी द्वारा संचालित "बालाबक्स राजपूत चारण पुस्तकमाला" में प्रकाशित हो चुका है। उस पुस्तककी भूमिकामें कविका जो परिचय अन्वेषणके पश्चात् दिया है, उसका सार पाठकोंके लिये यहाँ दे दिया जाता है –

कविया गोपालका पूरा नाम गोपालदान कविया था। यह अनेक डिंगल-पिंगल ग्रंथोंके ज्ञाता अनन्य साहित्यसेवी एवं 'बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला' के संस्थापक बारहठ श्री बालाबख्श पालावतके मामा थे। इन्होंने उक्त दोनों ग्रंथोंके अतिरिक्त 'कृष्णविलास' एवं अनेक स्फुट गीत छंद बनाये थे। यह भी सुना जाता है कि उन्होंने 'काव्य प्रकाश भाषा' और 'सभा-प्रकाश भाषा' नामक दो ग्रंथ और बनाये थे। ये अभी अप्रकाशित हैं। कविने अपना परिचय 'कृष्णविलास' और 'लावारासा' में दिया है, वह क्रमशः इस प्रकार है—

कृष्णविलाससे—

कवि जन कवियो दिव्यकुल चारन चंडीजाल।
'अनूभक्त'के वंशमें प्रगट नाम गोपाल॥
'अलू' नंद 'नरपाल' भय 'नरू' नंद 'भवदान'।
'भैरवराम'के सुत भये 'गिरधर' नाम सुजान॥
'गिरधर' सुत 'माहू' भये 'माहू' सुत 'हरिराम'।
पुत्र भये हरिरामके 'किसनराम' पुन नाम॥
'किसनरामके' पुत्र फिर, 'दौलतराम' बखान।
सुत भये 'दौलतरामके' ताको नाम जु 'ज्ञान'॥
पुत्र भये फिर 'ज्ञानके' 'अनूदान' 'खुमान'।
'रामनाथ' 'स्योनाथ' ये चार बंधु समजान॥
इम भये पुत्र 'खुमानके' नाम 'गुपाल' कहाय।
बरन्यूं ग्रंथ नवीन यह, नृपकी आज्ञा पाय॥

लावारासासे—

दांतोपुर दक्खिन दिसा सीकर उत्तर कोस।
झूंझर पश्चिम जानिये पूर्व जीणको मोस॥
ताके मध्य उदैपुरो बसत सुकविको ग्राम।
प्रगट 'पर्वतहर्ष'को तहँ भैरवको धाम॥
कविजन कवियो दिव्यकुल चारन चंडीजाल।
'अनूभक्तके' वंशमें यह मम नाम गुपाल॥

इन उद्धरणोंके आधार पर चारण-कुलभूषण 'गोपालदान' कविया सीकर के 'उदयपुरा' अपर नाम 'गोपालका बास' ग्रामके निवासी थे। यह ग्राम सीकरसे ५ कोस दक्षिणकी तरफ हर्षके ऐतिहासिक पर्वतसे १ कोस और जीणमाताके स्थानसे दो कोस है। इनके पिताका नाम 'खुमान' था। इनके तीन भाई और एक बहिन थी। इनके दो विवाह हुए थे और पांच पुत्र और २ पुत्रियां थी। इनकी जन्मतिथि ठीक ठीक तो ज्ञात नहीं हुई, किन्तु इनका स्वर्गवास भाद्रपद कृष्ण ४ सं

१९४२ विक्रमाब्दमें १५ दिनकी बीमारीके पश्चात् अपने ग्राम उदयपुरामें ७ वर्षकी अवस्थामें हुआ। इससे इनका जन्म संवत १८७२ वि निकलता है। इन्होंने अपनी शिक्षा अपने काका कवि रामनाथसे और तिजारेमें—जो इलाका अलवरमें है—रह कर श्रीबलवंतसिंह रईससे प्राप्त की थी। यह श्रीबलवंतसिंह अलवरके रावराजा श्रीबख्तावरसिंहकी पासवान 'मूसी'के पुत्र थे।

'शिखरवंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक'में कविने ग्रंथ निर्माणका समय सं १९२६ वि दिया है इस प्रकार इस ग्रंथ लावारासामें नहीं दिया। यह ग्रंथ किस समय लिखा गया इसका ठीक ठीक समय प्रमाणाभावमें कुछ बताया नहीं जा सकता है। किन्तु अनुमान ऐसा होता है कि लावारासाके पांचवे प्रसंगमें जिस युद्धका कविने वर्णन किया है, उस युद्धका होना "तवारिखे महमूदाबाद नामे टोंकके' लेखक सैयद मुहम्मद अलवरवासी "आवस"ने हिजरी सन् १२६५ में लिखा है। हिसाबसे यह हिजरी सन् संवत् १९१ वि में पड़ता है। इससे यह तो निश्चय हो जाता है कि सं १९१० से पूर्व यह ग्रंथ नहीं बना। और यह भी निश्चित ही है कि इस समयके पांच दस वर्ष बाद भी इतना जल्दी यह ग्रंथ नहीं बना होगा। मेरा अनुमान यह कि इस ग्रंथका निर्माण "शिखर वंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक"के पश्चात् सं १९२६ वि के पश्चात् होना चाहिए। एक ऐतिहासिक ग्रंथकी समाप्तिके बाद वैसा ही दूसरा ग्रंथ लिखनेकी प्रवृत्ति होना स्वभावतः उचित प्रतीत होती है। 'लावारासा'में कविने ग्रंथ-निर्माणका उद्देश्य भी कुछ ऐसा ही प्रकट किया है—

> सूरवीर रजपूत कुल कवि चारन कुल जानि।
> जो न कहत निज धर्मयुत यहुं कुल धीरज हानि ॥
> आदि धर्म क्षिति छत्रकुल पूरन वेद प्रतीत।
> दान करन मारन मरन रजपूतों यह रीत ॥
> संग रह्यो संपति-विपति सुख दुख सह्यो सत्य।
> चीरत कह्यो दान भुव कुल चारन यह कृत्य ॥
> याते हम यह ग्रंथमें परिश्रम कियो अपार।
> सुयश कच्छ कुलको कियो अपनी मति अनुसार ॥

इससे यह प्रकट है कि कविने अपना पूर्ण अधिकार समझ कर इस ग्रंथकी रचना की। इसका रचना-काल जैसा कि ऊपर अनुमान किया गया है—सं १९२६ वि के पश्चात् सं १९३ वि के आसपास होना चाहिए।

प्रस्तुत ग्रंथ 'लावा रासामें' कविने अपनी डिंगल भाषाको छोड़ कर शताब्दियोंसे क्रमशः विकसित होती आ रही उस राजस्थानी भाषाका प्रयोग किया है, जो उत्तर-भारतमें गुजरातसे अंतरवेद (प्रयाग) तक प्रचलित थी। इसके साथ ही इस ग्रंथमें फारसी अरबी संस्कृत डिंगल और राजस्थानके देशी शब्दोंका कविने प्रयोग किया है। इनके अतिरिक्त मुसलमानोंके मुखसे खड़ी बोली

और पंजाबीके पुटसे युक्त भाषाका कविने प्रयोग कराया है। ग्रंथमें वर्णन प्रसंग और रसके अनुकूल काव्यके रीतिग्रंथोंके अनुसार किया गया है। स्थान २ पर वर्णनको सजीव करनेके लिए उपमा रूपक उत्प्रेक्षादिका प्रयोग उत्तम रीतिसे किया गया है। जैसे–

"धम्मूर रज्ज रज्जके, धिरेमरते रहै करै ।
"हूर अपच्छर भूर वरि, बैठि विमाननि जात।
सम्पति मानहु दीन दिन्, दुलहुर बैठि दुकात" ॥
चच्छ सौर साथात मनहु अंकुर धूर धन" ।

और भी "कितेक हूर अच्छरी विमान बैठि उत्तरी कितेक जात व्योमको मनो भरट्ठ की भरी"। एक स्थान पर उत्प्रेक्षाओंकी छटा देखिये–

आतुरके उर मध्य वस्त्र अस्तक सम वसिय ।
मानहु रम्भ मुखाल कंम ज्वाला गनि पैसिय ।।
बसन बेधि कटाछ कोर कुम्भा धूम कढ्ढिय ।
हृदय बेधि जम हृदय, पेम रंग पारक कढ्ढिय ।।
उभरी बानि सम्पा बरुद, मुक्त मीन रंग कढ्ढियो ।
मानहु कुमारि जावक सहित करवालायस कढ्ढियो ।।

इसके अतिरिक्त और भी कई स्थल है जिन्हें पाठकगण यथास्थान देखेंगे। सम्पूर्ण ग्रंथ वीररस प्रधान है। अत इस रसके अनुकूल ही छंदोंका प्रयोग कर वर्णनीय युद्धको साकार बना दिया है। वैसे इस ग्रंथमें दोहा सोरठा छप्पय दुमिल भुजंगप्रयात मोतीदाम भुजंगी त्रोटक निसानी और पद्धरी छंदोंका प्रयोग बहुलतासे है, इसके साथ ही त्रिभंगी केसरी नाराच दीर्घनाराच और बेताल छंदोंका भी कहीं-कहीं प्रयोग है। परन्तु इन छंदोंके प्रयोगमें कविने बड़ी दक्षता दिखाई है। किस वर्णन अथवा विषयमें कौन सा छंद उपयुक्त होगा जिससे प्रसंग सजीव एवं साकार हो उठे, वैसी ही उस भावका छंद प्रयोग कर, कविने अपनी विशेषता प्रकट की है। यथास्थान पाठकगण इसका अनुभव करेंगे। इसके साथ ही पाठकगण यह भी अवलोकन करेंगे कि जिस विषयका कविने वर्णन आरंभ किया है, उसका शब्दों द्वारा अविकल चित्र सामने उपस्थित कर दिया है। इससे यह न समझा जावे कि वर्णनमें कविने कोई दोष ही नहीं आने दिया है। एकाध ऐसे भी स्थल हैं, जहाँ कवि वर्णन-प्रवाहमें बह भी गया है। यथा–

"चलन्त अंकुसर्ते हुलसार, मनो गिरिके सिर वज्र प्रहार" ।
"भरि चल्ल चल्ल गजनीहि करि ऐम असुर हिन्दुव भिड्ढ ।
मानहु अनेक दिन भीहरे, उर मिलाप बंधव भिड्ढ" ॥

उक्त दोनों स्थल चिन्तनीय हैं। एक स्थान पर वर्णन कुछ टूटा हुआ-सा ज्ञात होता है। 'उदयसागर' प्रसंगमें जहां भीमसिंह अपने परिवारके कैद होने पर शोक प्रकट कर रहा है उस स्थान पर शोक करते करते ही एक दम चढ़ाईका वर्णन उचित प्रतीत नहीं होता। ऐसा लगता है कि इन दोनों स्थलोंके मध्यमें कुछ अंश छूट गया हो यदि इनको जोड़नेके लिए कवि कुछ बीचमें और कहता तो ठीक होता। ऐसे एकाध स्थलको छोड़ कर सब प्रकारसे ग्रंथ सुंदर है। फिर भी हणुतिया ग्रामके पाल्हावत बारैठ श्री चतरदानने जो स्व. श्री बालाबक्सजीके काका थे निम्नांकित दोहा 'लावारासा'के विषयमें रच कर कविया गोपालदानकी खिल्ली उड़ाई है—

"चोर चोर तुक चंदकी ग्रंथ बणायो गोप।
भीखण सूरजमल्लकी उपमा लई कहु ओर।।

इस दोहे में उक्त पाल्हावत बारैठने लावारासाको महाकवि चंदके पृथ्वीराज-रासासे और बूंदीके महाकवि सूर्यमल्लके 'वंशभास्कर'से तुकें और उपमायें चुरा कर बनाया हुआ इंगित किया है। मैंने पृथ्वीराज रासा और वंशभास्करका कई स्थलोंसे अध्ययन किया है। मुझे तो पृथ्वीराज रासाकी भाषामें और लावारासाकी भाषामें कहीं भी समानता प्रतीत नहीं हुई, तुकोंकी चोरीकी बात तो अलग रही। महाकवि चंद और कविया गोपालदानकी भाषा और वर्णन शैलीमें रातदिनका अन्तर है। इसका निश्चय तो पाठकगण स्वयं भी पृथ्वीराज रासाके अध्ययनसे कर सकते हैं। रही उपमाओंको चुरानेकी बात उपमा उत्प्रेक्षा आदिकी चोरी चोरी नहीं कही जा सकती है। पूर्ववर्ती कवियों द्वारा प्रयुक्त उपमा उत्प्रेक्षा आदिका ग्रहण परवर्ती कवियों द्वारा होता ही आ रहा है। इसमें चोरीका दोष नहीं। माना कि एक कविने मुखको चंद्रमा कहा और अन्य कवियोंने उसका अनुकरण किया तो इसमें चोरी क्या? इसमें तो कहनेकी शैलीका पार्थक्य ही मौलिकता का मूल कारण है। कविया गोपालदान और महाकवि सूर्यमल्ल समवयस्क और समकालीन थे। कविया गोपालने अपने काका रामनाथके साथ महाकवि सूर्यमल्लसे बूंदीमें भेंट की थी और कवि गोपालने वंशभास्करका श्री रामनाथसे अध्ययन भी किया था जिसका प्रभाव उसके चित्त पर पड़ा था। लावारासामें यह प्रभाव झलकता अवश्य है परन्तु इसे चोरी कदापि नहीं कही जा सकती। वास्तवमें बात यह है कि उक्त दोहा केवल हास्य मात्र है क्योंकि कवि गोपालदान और पाल्हावत श्री चतरदान आपसमें भ्याई (समधी) थे। इसके साथ-साथ आपसमें गहरे स्नेही भी। इसमें आपसमें हास्य उपहास्य निरंतर होता रहता था जिसके पचासों छंद प्रसिद्ध हैं। श्री चतरदान गोपालदानकी और श्री गोपालदान श्री चतरदानकी इस प्रकार अवसर प्राप्त होने पर हँसी उड़ाया ही करते थे जिसमें मनमुटाव लेश मात्र भी नहीं रहता था। कविया गोपालदानने भी एक दोहे में श्री चतरदान पाल्हावतकी खूब खबर ली है—

"सांपिन बीछिन साहरी स्यामल पाल्हण-भार।
भाल रहेंगे बहुत पुन भ्यावे भरत विगार।।"

अस्तु, उक्त "चोर चोर तुक चंदकी" दोहेमें सिवाय हास्यके और तथ्य नहीं है।

कूर्मवंश यशप्रकाश में' (लावारासा में) कविने कछवाहों एवं उसकी नरूका शाखाके वीरों द्वारा लड़ी हुई लड़ाइयोंका रोचक ढंगसे ओजपूर्ण शब्दोंमें वर्णन किया है। इस ग्रंथमें ५ युद्धों का ५ प्रसंगोंमें वर्णन है जिसका कथासार क्रमश: इस प्रकार है –

[१] प्रथम प्रसंग

इस प्रसंगमें शिव स्तुतिके पश्चात् जयपुराधीश महाराज श्री जगतसिंह और जोधपुरपति महाराज श्री मानसिंहके युद्धका वर्णन है। इसमें पोकरणके ठाकुर चांपावत सवाईसिंहने जोधपुरकी गद्दीका उत्तराधिकारी धोकलसिंहको मान कर, मानसिंहके विरुद्ध सवाईजगतसिंहको अपनी ओर करके आक्रमण किया। इस युद्धमें स. जगतसिंहके साथ बीकानेरके राजा अमरसिंह महाजनके ठाकुर अभयसिंह दीवान रायचंद बोगावत रायचंद, सीकरके लक्ष्मणसिंह खंडेलेके नवलसिंह दांता उनियारा चूरू सिवाय माधावत और राजावत सरदार बीकानेरके सूरतसिंह और अमीरखां अपनी अपनी सेना सहित सम्मिलित हुए। यह युद्ध परबतसर (जोधपुर राज्य) के पास हुआ। युद्धके कुछ दिन बाद महाराज मानसिंहके सहायक गण कुचामन ठाकुरके अतिरिक्त उनका साथ छोड़कर महाराज स. जगतसिंहकी ओर मिल गये। इससे महाराज मानसिंहको भाग कर जोधपुरके किलेकी शरण लेनी पड़ी। महाराज स. जगतसिंहने धोकलसिंहको नागौरमें गद्दी पर बैठा कर जोधपुर पर आ कर घेरा डाल दिया। फिर महाराज सवाई जगतसिंह तो जयपुर लौट आये। इधर महाराज मानसिंहने अमीरखांको अपनी ओर मिला लिया। उसने छलबल करके मारवाड़को लूटा। सवाईसिंहको मार डाला। फिर ढूंढाड़में आ कर लूटमार करने लगा। महाराज जगतसिंह अपने राग रंगमें ही लगे रहे।

[२] द्वितीय प्रसंग – प्रथम लावा युद्ध

अमीरखांने ढूंढाड़में बहुत लूटमार की किन्तु महाराज स. जगतसिंहने इसका कोई प्रबंध नहीं किया। इस प्रकार लूटमार करता हुआ वह लावाके समीप आया और वहीं अपने डेरे डाले करवा दिये। उस समय मुसाहिबने कहा कि किलेमें बहुत बल है। यदि आज्ञा हो तो युद्ध किया जावे अथवा कुछ लेने-देनेकी बात की जावे। इस पर नवाबके चाचा मीर मुस्ताखांने कहा कि ये नरूके राजपूत सदासे बहुत ही प्रबल रहे हैं इससे युद्ध करना उचित नहीं है। देखो सैन्यदोंने आमेर और जोधपुरसे सांभर पर युद्ध किया था उस समय वे दोनों जो हार गये थे तब इन नरूके राजपूतोंने ही सेनापति उसी स्थान पर लोहा लिया था और बादशाही सेनाके माही मुरातब छीन कर आंबेरपति सवाई जयसिंहको ला दिये थे। इससे इन नरूकोंसे तो 'लेने-देनेकी' ही बात तै करनी

चाहिए। किन्तु अमीरखांने इसकी बात नहीं मानी और किलेको घेर लिया। भावा-पतिने भी प्रत्युत्तर अच्छा दिया। इस प्रकार यह युद्ध छै मास तक चलता रहा। इसमें भक्तोंका प्रसिद्ध वीर सहलसिंह मारा गया मीरखांकी भी बहुत हानि हुई। इससे वह बहुत घबरा गया। अंतमें लेने देनेकी बातचीत आरंभ कर धोखेसे कुंवर हनुमंतसिंहको पकड़ कर और डेरा उठा कर चल दिया।

[३] तृतीय प्रसंग — मण्डाना-युद्ध

इस प्रकार हनुमंतसिंहको ले कर अमीरखां वहांसे चला गया। यह बात सुमानसिंहको बहुत ही खटकी। वह आवासे लड़ने गया और वहां कुंवर भारतसिंहसे बातचीत की। भारतसिंहने युद्धकी तैयारी की और माधवगढ़का (माधवरामपुरका) किला अपने अधीन कर, एक पत्र अमीरखांको लिखा कि या तो तुम कुंवर हनुमंतसिंहको छोड़ दो या युद्धके लिये तैयार हो जाओ। पत्र पाने पर अमीरखां बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने पत्रका प्रत्युत्तर दिया कि हमने कावाके युद्धमें दो लाख रुपये खर्च किये हैं इसलिये हनुमानसिंहको छुड़ानेके लिए दो लाख रुपय दो नहीं तो हम भी युद्धके लिये तैयार हैं। यह बात जब आसमानखांने सुनी तब उसने अमीरखांसे अर्ज की कि आपको ऐसा उत्तर देना उचित नहीं है। मुझे कल ही एक स्वप्न आया है कि उसने (भारतसिंहने) आपकी स्त्रियों आदिको कैद कर लिया है। इस पर बड़ा भयंकर युद्ध हुआ है। इस युद्धमें हमारी बहुत बड़ी हानि हुई है। इसलिए अब सोच समझ कर भेजा जावे। इस तरह आसमानखांने बहुत समझाया किन्तु अमीरखांने एक भी बात नहीं सुनी। अंतमें दूतको उत्तर दिया कि वह (भारतसिंह) हमारे पांवोंमें आ कर गिरे और दंड स्वरूप हमको रकम दे। यह समाचार दूतने आ कर भारतसिंहको कहे। भारतसिंहने क्रुद्ध हो कर अमीरखांकी बेगमोंको जो उस समय 'टोरडीमें' थीं पकड़ लिया। जब यह बात अमीरखांको ज्ञात हुई तो वह अत्यन्त ही क्षोभित हुआ और उसने माधवरामपुरे पर चढ़ाई कर दी। यह युद्ध नौ महिने तक चलता रहा। इसमें अमीरखांकी बहुत हानि हुई। अंतमें उसने एक दूत भारतसिंहके पास भेजा और कहलाया कि आप हमारे कुटुम्बको छोड़ दीजिये हम हनुमंतसिंहको छोड़ देंगे। भारतसिंहने इसका उत्तर भेजा कि तुम हनुमंतसिंहको तो छोड़ ही दो और अपनी बेगमोंको छुड़ानेके लिए एक लाख रुपया हर्जानेका दो। यदि यह अस्वीकार हो तो युद्धके लिए तैयार रहो। अंतमें विवश हो कर अमीरखांको हनुमंतसिंहको छोड़ना पड़ा और एक लाख रुपय और अनेक वस्तुएं भारतसिंहको भेजीं। इस प्रकार अपनी बेगमोंको छुड़ा कर अमीरखां वहांसे चला गया।

[४] — चतुर्थ प्रसंग — उणियारा-युद्ध

वहांसे अमीरखां अजमेर जियारतको गया। वापिस आते समय उसने सांभरको लूटा। इस समय तक राजस्थानमें अंग्रेजोंके पांव बहुत कुछ जम गये थे। अंग्रेजोंने सांभर पर

लुटेरों द्वारा आये दिन रौंदे जा रहे थे। मुगल सम्राटके हाथ नाम मात्रकी सत्ता थी। वह इनका कुछ भी प्रतिकार करनेमें असमर्थ था। राजस्थानके नरेश भी बलहीन हो रहे थे। ये लोग इन लुटेरोंको इनके उपद्रवोंसे बचनेके लिये अच्छी रकम देते थे किन्तु ये लोभी लुटेरे अधिक प्राप्तिके लिए अपने उपद्रव बंद ही नहीं करते थे। इन दस्युओंमें पठानों की संख्या अधिक थी। इनका प्रमुख अमीरखां अत्यन्त चतुर बुद्धिमान एवं शक्तिशाली था। उसने राजस्थान विशेष कर ढूंढाड़में अपनी कार्यवाहियाँ अधिक दिखलाई थीं जिससे जन धनकी इतनी अधिक हानि हुई थी कि उसका अनुमान लगाना कठिन है। इसके साथ इतने अधिक भयंकर और बर्बरतापूर्ण युद्ध हुए थे जिनकी कथा सुनने मात्रसे कायरोंके जी दहल उठते हैं और वीरोंके भुजदंड फड़क उठते हैं। उस समयमें बहुत ही कम मनुष्य ऐसे रहे होंगे जो इन युद्धोंमें सम्मिलित न हुए हों और इन युद्धोंमें इतने अधिक व्यक्ति काममें आये थे कि जिनका स्मरण आज भी जयपुरमें एक कहावत द्वारा किया जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्तिकी खोज करता हुआ किसीसे प्रश्न करता है तो उसे उत्तर मिलता है कि वह तो मीरखांकी लड़ाईमें मारा गया। अस्तु। इस ग्रंथ अर्थात् 'कायारासा' में अमीरखां और उसके द्वारा हुए युद्धका चार प्रसंगोंमें वर्णन है। यह अमीरखां ढूंढाड़ में अमीरखां पींडारीके नामसे प्रसिद्ध था। यद्यपि वह पिंडारी नहीं था पिंडारी दस्युओंकी भांतिही पिंडारियों जैसे कार्य करनेसे (लूटमार करनेसे) वह इस नामसे विख्यात हो गया था। यह पठान था जैसा कि निम्नांकित अवतरणोंसे प्रकट होगा—

इनमें विशेषता थी कि एक एक दिनमें चालीस-पचास मीलका रास्ता तय कर जाते थे। यही कारण था कि इनका पीछा नहीं किया जा सकता था। इन्हें वेतन नहीं दिया जाता था। ये लूटके द्रव्यसे संतोष कर लेते थे। इन दिनों करीमखां वासिल मुहम्मद और चीतू पिंडारियोंके मुख्य सरदार थे। सिंधिया और होल्करने करीम और चीतूको नर्मदाके किनारे जागीरें दे रखी थीं। अतः ये नवाब कहलाते थे। इन लोगोंने दस्युवृत्तिमें आशातीत धन और शक्ति संचय कर ली थी। इनके डर आसपासमें सिंधिया भी भयभीत हो गया था। अंतमें कुछ लेन दे कर इन्हें कैद कर लिया था। चीतूने ७ लाख रुपया दे कर ४ वर्ष पश्चात् मुक्ति प्राप्त की। मुक्ति प्राप्त कर इनके हृदयमें प्रतिहिंसानल धधक उठी। जिससे होकर नर्मदा पर सिंधियाके अधिकृत प्रदेशोंमें घोर अत्याचार करने आरंभ कर दिये। अंतमें सिंधिया दौलतरावने भूपालके पश्चिम [illegible] प्रदेशमें और भी ५ जागीरें दे कर इनसे अपना पिंड छुड़ाया। करीमको उसकी माताने [illegible] लाख रुपया दे कर छुड़ाया। इसने भी छूटते ही इसमें सम्मिलित होते ही सिंधियासे बदला लेना आरंभ किया। किन्तु वह सिंधियाका अच्छी तरह सामना न कर सका और भाग कर अमीरखांकी शरणमें आ गया। इन पिंडारियोंके दमन अत्याचारों। मालवा, राजस्थान, दक्षिण और ब्रिटिश शासनाधिकृत प्रांतमें अत्यन्त त्रस्त हो गये थे। तब अंतमें लार्ड हेस्टिंग्सने इन दस्युओंकी १४ [illegible] सैनासे दमन करनेके लिए एक लाख १ हजार सेना एकत्रित की। [illegible] के अनुसार, मराठोंकी शक्ति अच्छी तरह कुचली गयी। फिर पिंडारियों पर चारों ओरसे आक्रमण आरंभ किये गये। इनकी कहीं [illegible] सामना करना ऐसी [illegible] नहीं था। करीमखांने हथियार डाल दिये अतः गोरखपुर जिलेमें एक जागीर दे दी गई। वासिल मुहम्मदने निराश हो कर आत्महत्या कर ली। चीतू कुछ दिनों तक लड़ता रहा अंतमें वह जंगलमें भाग गया जहां उसको एक चीतेने खा डाला। इसके दल छिन्नभिन्न कर दिये गये। इस तरह सन् १ १ ई में पिंडारियोंका अंत हो गया।

कहते हैं कि सुलतान करीमने व्यक्तियों पर राज्य करनेके लिए मलिक तालूतको उत्पन्न किया। उसके दो पुत्र हुए, बुरहिया और अरमिया। अरमियाके अफगानिया नामक पुत्र हुआ और बुरहियाके आसफ नामक। आसफ राज्यका मंत्री नियुक्त हुआ और अफगानिया राज्यका सेनापति। इसी अफगानियाकी सन्तानें अफगान नामसे प्रसिद्ध हुईं और उनकी जीविकाका आधार शस्त्र रहा। अफगानियाकी संतानोंमें आगे चल कर अब्दुलरशीद नामक व्यक्ति बहुत ख्यात हुआ जिसने पठान की उपाधि धारण की। तबसे ये अफगान 'पठान' कहलाने लगे।

इन पठानोंमेंसे कालेखां गुलरखास साकारजईका पुत्र तालिबखां उर्फ तालेखां बोहर अमीर देहलीके मुहम्मदशाह बादशाहके समयमें भारतमें आ कर नवाब अली मुहम्मदके यहाँ नौकर हुआ। जब मुहम्मदशाह बादशाहने नवाब अली मुहम्मद पर चढ़ाई की तो तालेखां भी दूसरे अफगानोंके साथ साथ नवाबका साथ छोड़ कर तरीनासरायके निकट जा कर बस गया। नवाब अलीमुहम्मदके मरनेके कुछ समय पश्चात् तालेखां भी यहीं पर मर गया। उसके पुत्र मुहम्मदखांको नवाब अलीमुहम्मदके सेनापति दूंदेखांने फिर अपने पास नौकर रख लिया। दूंदेखांके मरनेके बाद मुहम्मद हयातखांने नौकरी छोड़ दी और कुछ जमीन ले कर खेतीबाड़ीका कार्य आरंभ कर दिया। सन् ११८२ हिजरी तदनुसार सन् १७६४ के मई मासमें उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम अमीरखां रखा गया। अमीरखां बाल्यावस्थासे ही होशियार और चालाक मालूम होता था। छः सात वर्ष खेल कूदमें व्यतीत हुए। वह बादशाह और वजीरका खेल अधिक पसंद करता था। वह स्वयं बादशाह बन जाता था। अपने दूसरे साथियोंमेंसे किसीको वजीर किसीको सेनापति किसीको सिपाही आदि बना कर अपने बाल-स्वभावानुसार क्रीड़ा किया करता था। यहाँ तक कि जो कुछ उसे खरचनेको पैसे अपने माता-पितासे प्राप्त होते वे इस खेलमें अपने साथियोंमें बांट दिया करता था। उसके इस स्वभावसे उसके माता-पिता अप्रसन्न थे। वे कई दफा डांट भी चुके थे कि यदि तेरी ऐसी ही आदत रही तो तू घरमें कुछ भी न रख सकेगा। लेकिन इस महत्वाकांक्षी बालकके हृदय पर इन बातोंका कुछ भी असर नहीं होता था। उसका यह स्वभाव जैसेका तैसा बना रहा। एक दिन एक पहुँचे हुए मुसलमान महात्माने इसे महत्वाकांक्षी और भाग्यशाली देख कर कहा कि क्या तू महत्वाकांक्षाका दूध पियेगा? दूधका नाम सुन कर अमीरने बाल स्वभावानुसार पीने की इच्छा प्रकट की। उस महात्माने शराब का प्याला भर कर अपने होठों से लगाकर अमीरको दिया। अमीरने कभी शराब देखी भी नहीं थी। जैसे ही उसने प्याला अपने होठोंसे लगानेके लिए ऊँचा उठाया कि शराबकी गंध नाकमें पहुँची और प्याला जमीन पर फेंक कर उसने महात्माको सैकड़ों गालियां दीं। उस महात्माने उसकी गालियोंकी ओर ध्यान न दे कर उससे कहा "अरे मूर्ख तेरी आशाओं और महत्वाकांक्षाओंका प्याला तेरे हाथमें था जिसको तूने नासमझीसे फेंक दिया था तेरे भाग्यमें नहीं था।" अमीर उस समय तो कुछ समझ नहीं सका किन्तु बड़े होने पर इस घटनाका स्मरण कभी उसे सुखद प्रतीत नहीं हुआ।

जा कर अमीरखांको घेर लिया। फिर अंग्रेजी सरकारने अमीरखांको टोंक आदि दिला कर उसे नवाब बना दिया। कुछ दिनों बाद अमीरखांका देहान्त हो गया। अब टोंकका स्वामी उसका पुत्र वजीरउद्दौला हुआ। टोंककी सीमा पर उणियारा एक ठिकाणा है। वहांके स्वामीका भी स्वर्गवास हो गया। उनके स्थान पर फतहसिंह वहांके स्वामी हुए। स्वर्गवासी उणियारे नरेशने बमोरका किला अपने दूसरे पुत्रको दिया था। उसने आपसी झगड़ेसे यह किला टोंक वालोंको दे दिया। जब यह किला टोंक वालोंके हाथमें आ गया तब उणियारे वालोंकी कुछ और जमीन भी अपने अधिकारमें कर ली। जब यह बात फतहसिंहको ज्ञात हुई तो उसने अपने सिपाही वहां भेजे। इस स्थान पर एक छोटा युद्ध हो गया जिसमें २ व्यक्ति मुसलमानोंके मारे गये और बाकीके भाग गये। वजीरउद्दौलाको जब यह समाचार ज्ञात हुआ तो उसने एक सेना उणियारेकी ओर भेजी। उस सेनाने वहां जा कर बहुत उत्पात किया। फतहसिंहने भी मुसलमानी सेनाको दबानेके लिये अपनी सेना भेजी। कई दिन तक घमासान युद्ध चलता रहा। अंतमें मुसलमानी सेनाके पांव उखड़ गये और वे युद्धस्थल छोड़ कर टोंक भाग गये।

[५] पंचम प्रसंग – द्वितीय लावा-युद्ध

द्वितीय लावा-युद्धके समय लावाके स्वामी कर्णसिंह थे। एक समय भावनगरका एक पहलवान टोंकमें आया। नवाब वजीरउद्दौलाने उसका बहुत सम्मान किया और उसे अपना उस्ताद बना लिया। जब वह जाने लगा तो नवाबने उसे बहुत द्रव्य आदि भेंटमें दिये। जब वह पहलवान टोंकसे विदा हो कर जा रहा था उस समय आगे आ कर मार्ग भूल गया और वह अपने साथियों सहित लावाकी ओर आ निकला। वह लावाके बाहर तालाबके किनारे महादेवके मंदिरके पास ठहरा। प्रातःकालका समय था। लावाका कोई राजपूत गुमट महादेवकी पूजन करनेको आया था। उसने महादेवकी पूजन की और गाल बजा कर स्तुति करने लगा। उसके कपोलोंकी आवाज उन पहलवानने बाहरसे सुनी और सुनकर वह जूते पहिने हुए ही मंदिरमें प्रवेश करने लगा उसको कई व्यक्तियोंने अंदर जानेसे रोका परन्तु वह उन्मत्त नहीं रुका। अंदर जाने पर उस गुमटने भी पहलवानको निकालना चाहा इस पर दोनों ओरसे तलवारें निकल पड़ीं। एक छोटा-सा युद्ध हो गया सम्पूर्ण देवालय रक्तसे रंग गया। वह पहलवान अपने साथियों सहित मारा गया। एक छोटा लड़का बचा वह भाग कर रोता-पीटता नवाबके पास आया और उसने सम्पूर्ण कथा सुनाई। इस पर नवाब बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने लावा पर चढ़ाई करनेकी आज्ञा दे दी। इस पर स्वर्गवासी नवाबके चाचाने उसे बहुत समझाया किन्तु उसने एक भी नहीं सुनी और अपनी सेना ले कर लावा पर चढ़ाई कर दी। बनास नदीके किनारे अपने डेरे डाले। इस युद्धमें नवाबके साथ जावरे जामनगर आदिकी भी सेना थी। लावाके स्वामी कर्णसिंहने भी प्रतिकारका प्रबंध किया। इस युद्धमें फतहसिंह उणियारेसे हणुवंतसिंह स्योरासे भारतसिंह बरालेसे और चोरू बहादुरके

स्वामी भी आपाकी सहायतार्थ सम्मिलित हुए। कर्णसिंहके एक भाई मकवरमें थे। उनको भी सूचना भेजी गई। वह अपनी और अकबरकी सेना सहित आये। मारोठके मेड़तिया राठौड़ सुजानसिंह भी इस युद्धमें अपने दलबल सहित सम्मिलित हुए। युद्ध आरंभ हो गया। इधर पसारसिंहने टोंकको जा घेरा और वहां लूटमार करने लगा। यह समाचार नवाबको भी मिले। युद्ध भयंकर होता जा रहा था। नवाबका सेनापति मंसूरखां मारा गया। तब कुतबअलीखांने बड़े कौशलसे हमला किया। इस हमलेको सुजानसिंहके बरोदा हाजरखाने बड़ी वीरतासे रोका और अंतमें वह वीरगतिको प्राप्त हुआ। इधर कुतबअलीखां भी मारा गया। अब युद्धकी बागडोर स्वयं नवाबने संभाली। बहुत भयंकर युद्ध हुआ। मुसलमानी सेनाके पांव उखड़ गये। वह छिन्नभिन्न हो कर इधर उधर भाग निकली। नरूकोंकी सेनाने बहुत दूर तक उनका पीछा किया और छोड़ी हुई युद्ध-सामग्रीको अपने अधिकारमें करके वापिस लौट आई।

इसके अनन्तर कविने अपना परिचय तथा ग्रंथनिर्माणका कारण बताया है।

ऊपर कूर्मवंशयशप्रकाशके (लावारासा) के पांचों प्रसंगोंका जो कथासार दिया गया है वह सत्य घटनाओंके आधार पर कवि द्वारा कल्पना शक्तिसे काव्यरूपके रूपमें प्रस्तुत किया गया है। इनमें प्रथम प्रसंगकी घटनाको छोड़ कर बाकी चारों प्रसंगकी घटनायें कछवाहोंकी नरूका शाखा और मुसलमान लुटेरोंके मध्य हुए युद्धोंके वर्णनकी हैं। इनका परिचय देनेसे पूर्व तत्कालीन परिस्थितियों और वातावरणका सिंहावलोकन कर लेना उपयुक्त होगा।

अठारहवीं शताब्दीका अंतिम चरण और उन्नीसवीं शताब्दीका आदि चरण सम्पूर्ण भारतीय जनताके लिए दुर्भाग्यपूर्ण अशांत एवं निकृष्टतम था। देशमें चारों ओर लूटमार एवं अराजकताका साम्राज्य था। बंगालमें ईस्ट इंडिया कम्पनीके कर्मचारियोंके अत्याचारोंसे जनता पिसती जा रही थी। मध्यप्रदेश और राजस्थान प्रांत मराठे, *पिंडारी और पठान

---

* पिंडारी लोग दक्षिणमें कर्णाटकके निवासी थे। खास धन्धा था केवल लूटमार मुख्य आजीविका धर्म था। ये पहिले हिन्दू थे बादमें मुसलमान हो गये। ये गोमांस नहीं खाते थे और देवताओंकी पूजा और व्रत उपवास भी करते थे। इनमें अनेक जातियोंके मिल जानेसे यह संकर जाति बन गई। कहते हैं कि ये लोग पिंड नामक शराबका अधिक सेवन करनेसे पिंडारी कहलाने लग गये। बादमें इन लोगोंने अपनी आजीविकाका साधन दस्युवृत्ति बना लिया था। औरंगजेबके शासनकालमें इन पिंडारी दस्युओंका नेता पुनप्पा बहुत प्रसिद्ध हुआ है। मुगल सेनाओंसे इनके कई युद्ध हुए थे। जब मुगल दक्षिणमें अपना आधिपत्य फैला रहे थे उस समय ये पिंडारी मराठा सेनामें भरती हो गये थे। धीरे धीरे ये लोग भयंकर अत्याचारी और स्वतन्त्र प्रभावशाली हो गये थे। अठारहवीं सदीके तीसरी दशाब्दिमें चिमनी और हुल नामक दो सरदार पंद्रह हजार सवारोंके साथ उपस्थित थे। पेशवा बाजीराव प्रथमने जब मालवा पर आक्रमण किया था, उस समय गाजीउद्दीन पिंडारीने पेशवाकी सहायता की थी। इसी समयसे ये लोग मालवामें बस गये थे। मालवामें इनके बसनेके पश्चात् तुकोजीराव होलकर और महादजी सिंधियाने इन लोगोंको अपनी सेनामें भरती कर लिया था। तभीसे इनके दल होलकरशाही और सिंधिया-शाहीके नामसे विख्यात हो गये थे। तलवार और भाला इनके मुख्य शस्त्र थे। कोई व्यक्तिविशेष इनके पास बंदूक भी इन लोगोंके पास थी। घोड़ेकी सवारीमें ये लोग बहुत ही तेज थे। ये

लुटेरों द्वारा आये दिन रौंदे जा रहे थे। मुगल सम्राट्के हाथ नाम मात्रकी सत्ता थी। वह इनका कुछ भी प्रतिकार करनेमें असमर्थ था। राजस्थानके नरेश भी बलहीन हो रहे थे। ये लोग इन लुटेरोंको इनके आक्रमणोंसे बचनेके लिये अच्छी रकम देते थे किन्तु ये लोभी लुटेरे अधिक प्राप्तिके लिए अपने उपद्रव बंद ही नहीं करते थे। इन दस्युओंमें पठानों की संख्या अधिक थी। इनका प्रमुख अमीरखां अत्यन्त चतुर बुद्धिमान एवं शक्तिशाली था। उसने राजस्थान विशेष कर ढूंढाड़में अपनी कार्यवाहियाँ अधिक दिखलाई थी जिससे जन धनकी इतनी अधिक हानि हुई थी कि उसका अनुमान लगाना कठिन है। इसके साथ इतने अधिक भयंकर और बर्बरतापूर्ण युद्ध हुए थे जिनकी कथा सुनने मात्रसे कायरोंके भी दहल उठते हैं और वीरोंके भुजदंड फड़क उठते हैं। उस समयमें बहुत ही कम मनुष्य ऐसे रहे होंगे जो इन युद्धोंमें सम्मिलित न हुए हों और इन युद्धोंमें इतने अधिक व्यक्ति काममें आये थे कि जिनका स्मरण आज भी जयपुरमें एक कहावत द्वारा किया जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्तिकी खोज करता हुआ किसीसे प्रश्न करता है तो उसे उत्तर मिलता है कि वह तो मीरखांकी लड़ाईमें मारा गया। अस्तु। इस ग्रंथ अर्थात् 'कावारासा' में अमीरखां और उसके पुत्रसे हुए युद्धका चार प्रबंधोंमें वर्णन है। यह अमीरखां ढूंढाड़ में अमीरखां पींडारीके नामसे प्रसिद्ध था। यद्यपि यह पिंडारी नहीं था पिंडारी दस्युओंकी भांतिसे पिंडारियों जैसे कार्य करनेसे (लूटमार करनेसे) यह इस नामसे विख्यात हो गया था। यह पठान था जैसा कि निम्नांकित अवतरणोंसे प्रकट होगा–

इनके घोड़े इतने तेज थे कि एक एक दिनमें चालीस-पचास मीलका सफर कर जाते थे। यही कारण था कि इनका पीछा नहीं किया जा सकता था। इन्हें वेतन नहीं दिया जाता था। ये लूटके द्रव्यसे संतोष कर लेते थे। इन दिनों करीमखां, वासिल मुहम्मद और चीतू पिंडारियोंके मुख्य सरदार थे। सेंधिया और होल्करने करीम और चीतूको नर्मदाके किनारे जागीरें दे रखी थी। अतः ये [illegible] कहलाते थे। इन लोगोंने दस्युवृत्तिमें असाधारण धन और शक्ति संचय कर ली थी। इनकी इस अभ्युदयसे सेंधिया भी भयभीत हो गया था। अंतमें कुछ लोग भेज कर इन्हें कैद कर लिया था। चीतूने ७ लाख रुपया दे कर ४ वर्ष पश्चात् मुक्ति प्राप्त की। मुक्ति लाभ कर इसके हृदयमें प्रतिहिंसाकी आग भड़की। फिरसे सेना एकत्रित कर सेंधियाके अधिकृत प्रदेशोंमें घोर अत्याचार करने आरंभ कर दिये। अंतमें सेंधिया दौलतरावने भूपालके पश्चिम प्रान्तमें [illegible] और भी ५ जागीरें दे कर उससे पिंड छुड़ाया। करीमको [illegible] सेंधियाको छै लाख रुपया दे कर छुड़ाया। इसने भी अपने दलमें सम्मिलित होते ही सेंधियासे लड़ना लूटना आरंभ किया। किन्तु जब सेंधियाका अच्छी तरह सामना न कर सका और भाग कर अमीरखांकी शरणमें आ गया। इन पिंडारियोंके ताण्डव अत्याचारोंसे मालवा, राजस्थान, दक्षिण और ब्रिटिश राज्यान्तर्गत प्रान्तवासी अत्यन्त त्रस्त हो गये थे। अतः अंतमें लार्ड हेस्टिंग्सने इन दस्युओंको १४ [illegible] सेनाका दमन करनेके लिए [illegible] लाख १ [illegible] सेना एकत्रित की। अंग्रेजी [illegible] के अनुसार, मराठोंकी शक्ति अच्छी तरह कुचली गयी। फिर पिंडारियोंके [illegible] आत्मसमर्पण कर दिये गये। इनमें वही [illegible] सामना करना ऐसी [illegible] नहीं था। करीमखांने हथियार डाल दिये [illegible] गोरखपुर जिलेमें एक जागीर दे दी गई। वासिल मुहम्मदने [illegible] आत्महत्या कर ली। चीतू कुछ दिनों तक [illegible] जंगलमें भागा गया [illegible] चीतेने खा डाला। इनके दल छिन्नभिन्न कर दिये गये। इस तरह सन् १ १ में पिंडारियोंका अंत हो गया।

कहते हैं कि सुभानल करीमने व्यक्तियों पर राज्य करनेके लिए मलिक तालूतको उत्पन्न किया। उसके दो पुत्र हुए, बुरहिया और अरमिया। अरमियाके अफ़ग़ानिया नामक पुत्र हुआ और बुरहियाके आसफ नामक। आसफ राज्यका मंत्री नियुक्त हुआ और अफ़ग़ानिया राज्यका सेनापति। इसी अफ़ग़ानियाकी सन्तानें अफ़ग़ान नामसे प्रसिद्ध हुईं और उनकी जीविकाका आधार शस्त्र रहा। अफ़ग़ानियाकी संतानोंमें आगे चल कर अब्दुलरशीद नामक व्यक्ति बहुत ख्यात हुआ जिसने पठान की उपाधि धारण की। तबसे ये अफ़ग़ान 'पठान' कहलाने लगे।

इन पठानोंमेंसे कालेखां सुनरवाल साकारजईका पुत्र तालिबखां उर्फ़ तालेखां जोहर अमीर देहलीके मुहम्मदशाह बादशाहके समयमें भारतमें आ कर नवाब अली मुहम्मदके यहाँ नौकर हुआ। जब मुहम्मदशाह बादशाहने नवाब अली मुहम्मद पर चढ़ाई की तो तालेखां भी दूसरे अफ़ग़ानोंके साथ साथ नवाबका साथ छोड़ कर सरीनासरायके निकट आ कर बस गया। नवाब अलीमुहम्मदके मरनेके कुछ समय पश्चात् तालेखां भी यहीं पर मर गया। उसके पुत्र मुहम्मदखांको नवाब अलीमुहम्मदके सेनापति दूदेखांने फिर अपने पास नौकर रख लिया। दूदेखांके मरनेके बाद मुहम्मद हयातखांने नौकरी छोड़ दी और कुछ जमीन ले कर खेतीबाड़ीका कार्य आरंभ कर दिया। सन् ११८२ हिजरी तदनुसार सन् १७६४ के मई मासमें उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम अमीरखां रखा गया। अमीरखां बाल्यावस्थासे ही होनहार वीर मालूम होता था। छ सात वर्ष खेल कूदमें व्यतीत हुए। वह बादशाह और वज़ीरका खेल अधिक पसंद करता था। वह स्वयं बादशाह बन जाता था। अपने दूसरे साथियोंमेंसे किसीको वज़ीर, किसीको सेनापति किसीको सिपाही आदि बना कर अपने बाल-स्वभावानुसार क्रीड़ा किया करता था। यहाँ तक कि जो कुछ उसे खरचनेको पैसे अपने माता-पितासे प्राप्त होते थे इस खेलमें अपने साथियोंमें बाँट दिया करता था। उसके इस स्वभावसे उसके माता-पिता अप्रसन्न थे। वे कई दफ़ा डांट भी चुके थे कि यदि तेरी ऐसी ही आदत रही तो तू घरमें कुछ भी न रख सकेगा। लेकिन इस महत्वाकांक्षी बालकके हृदय पर इन सबका कुछ भी असर नहीं होता था। उसका यह स्वभाव जैसेका तैसा बना रहा। एक दिन एक पहुँचे हुए मुसलमान महात्माने इसे महत्वाकांक्षी और भाग्यशाली देख कर कहा कि क्या तू महत्वाकांक्षाका दूध पियेगा दूधका नाम सुन कर अमीरने बाल स्वभावानुसार पीने की इच्छा प्रकट की। उस महात्माने शराब का प्याला भर कर अपने होंठों से लगाकर अमीरको दिया। अमीरने कभी शराब देखी भी नहीं थी। जैसे ही उसने प्याला अपने होंठोंसे लगानेके लिए ऊँचा उठाया कि शराबकी गंध नाकमें पहुँची और प्याला जमीन पर फेंक कर उसने महात्माको सैकड़ो गालियां दी । उस महात्माने उसकी गालियोंकी और ध्यान न दे कर उससे कहा अरे मूर्ख तेरी आशाओं और महत्वाकांक्षाओंका प्याला तेरे हाथमें था जिसको तूने नासमझीसे फेंक दिया जा तेरे भाग्यमें नहीं था। अमीर उस समय तो कुछ समझ नहीं सका किन्तु बड़े होने पर इस घटनाका स्मरण कभी उसे सुखद प्रतीत नहीं हुआ।

इस प्रकार अमीर अपनी बाल्यावस्था व्यतीत कर बड़ा हुआ। जब यह १५ वर्षके लगभग हुआ होगा इसने अपनी महत्वाकांक्षाको पूर्ण करने और भाग्यकी परीक्षा करनेका विचार किया। इससे इसके माता-पिता अत्यंत स्नेह रखते थे और इसे कहीं जाने नहीं देते थे अतः माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त किये बिना ही यह घरसे निकल पड़ा। यह घरसे लखनऊ गया फिर वहाँसे मेरठ आया। यहाँ गुलाम कादिरखांकी सेनामें संमिलित हो गया। किन्तु इच्छानुसार सफलता प्राप्त नहीं हुई। इससे यह समझ कर कि बिना माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त किये ही आनेसे सफलता नहीं मिली है यह वापिस घर लौट कर आ गया। जब यह यौवनावस्था प्राप्त युवक २ वर्षका हो चुका था—उस समय इसका शरीर गठीला और मांस-पेशियां दृढ़ थी। शरीर की ऊंचाई मध्यम थी। आकृतिसे साहस और वीरत्व प्रकट होता था इस कारण मुखाकृति अत्यंत प्रभावोत्पादक थी। इसके साथ ही शरीर और मुखाकृतिसे अत्यंत भाग्यशाली प्रतीत होता था। महत्वाकांक्षाएँ इसकी मुखाकृति पर अपना घर बनाये हुए थीं। इस प्रकारका व्यक्ति घर कब तक रह सकता था। एक दिन अपने माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त कर कुछ आदमियों सहित घरसे जीविकोपार्जनार्थ चल ही तो पड़ा। घरसे निकल कर घूमता हुआ मालवे पहुँचा वहाँ सेनामें भरती हो गया। यहाँ कुछ दिन रहनेके बाद यह गुलुक्खां रिसालदारके पास आया। रिसालदारने इसे भाग्यशाली देख कर अपने पास रख लिया। यहाँ कई दिन रहनेके पश्चात् रिसालदार और अमीरखां दोनों जोधपुरके महाराज विजयसिंहके पास आये। इन्हीं दिनों रिसालदार अपनी पुत्रीका विवाह अमीरके साथ करना चाहता था किन्तु अमीरको यह सम्बन्ध नहीं जँचा अतः उसका साथ छोड़ कर अमीर ईडर चला आया दो मास यहाँ रह कर वह बड़ौदा आ गया। इस समय इसके पास १ ०–४ आदमी एकत्रित हो चुके थे। इन आदमियों सहित इसने गायकवाड़की नौकरी कर ली। यहाँ भी यह अधिक दिन नहीं ठहर सका घूमता हुआ सूरत पहुँचा जहाँ गायकवाड़के पंडितसे इसका परिचय हुआ जो सूरतमें चौथ वसूल करता था। अंग्रेज व्यापारियोंके कारण चौथ वसूल नहीं हो रही थी अतः अमीरने सहायता करके चौथ वसूल करा दी। यहाँसे अमीर भोपाल चला आया। भोपालमें इस समय छत्तेखांकी सन् १७९८ ई मृत्यु हो जाने से भिन्न भिन्न दलों द्वारा सेना एकत्रित की जा रही थी। अमीर अपने आदमियों सहित नवाब हयात मुहम्मदखांके पास नौकर हो गया। यहीं पर इसका परिचय दोस्तमुहम्मद फैजउल्लाखां वंशज मुरीद मुहम्मदसे हो गया। इसने यहाँ कई काम किये जिससे इसकी प्रसिद्धि हो गई। यहाँ एक वर्ष रह कर अमीर राघुगढ़के राजा जयसिंह और दुर्जनसाल खीचीके पास आ गया। इस समय यह खींची राजा अत्यन्त कठिनाईमें थे क्यों कि सेंधियाने किसी बातसे बिगड़ कर अपने यहाँसे इनको निकाल दिया था। ये लोग दस्युवृत्तिसे अपना निर्वाह कर रहे थे। इन्हीं दिनोंमें राजा राघुगढ़ और सेंधियामें युद्ध आरम्भ हो गया। अमीरने खीचियोंकी सहायता की जिससे सेंधियाको पीछे हटना पड़ा किन्तु खीचियोंके एक सरदारसे अमीरका झगड़ा हो जानेके कारण अमीर

वहाँ भी अधिक नहीं ठहर सका। वहाँसे अलग होकर मराठा सरदार बालाराव इंगलियाके पास जो भोपालका प्रबंधक था आ कर नौकर हो गया। अमीरको फतहगढ़के किले और नवाब गौसमुहम्मदकी रक्षाका भार सौंपा गया। किन्तु मुराद मोहम्मदकी मृत्यु हो जाने और बालाराव इंगलियाका वहाँसे संबंध टूट जानेके कारण अमीरका संबंध भी फतहगढ़से छूट गया। कुछ दिन अमीर इस प्रयत्नमें रहा कि अमीरखाँके यहाँ नौकर हो जावे परन्तु सफलता नहीं प्राप्त हुई।

अमीरखाँने अब तक अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली थी। इस ख्यातिने ही अमीरके भाग्यको जसवंतराव होल्करके भाग्यसे जा मिलाया। इसी समय अर्थात् हिजरी सन् १२१४ तदनुसार १७९९ ई से अमीरखाँ और जसवंतराव होल्कर तब तक साथ साथ रहे जब तक कि अंग्रेजोंने इन्हें अलग अलग होनेके लिए विवश नहीं किया। इस समय जसवंतराव होल्कर बड़ी विपत्तिमें था। इसके बड़े भाई काशीरावने सब कुछ छीन कर इसे राज्यसे बाहर निकाल दिया था। होल्करने अमीरसे प्रतिज्ञा की कि जैसे जैसे प्राप्ति होगी उसका आधा भाग कर दिया जायेगा। सर्व प्रथम काशीरावसे ही इनका युद्ध हुआ जिसमें इनकी विजय हुई। जसवंतराव अब सम्पूर्ण मालवेका स्वामी हो गया।

यद्यपि अमीरखाँ जसवंतरावका नौकर था किन्तु उसने अमीरके साथ कभी भी नौकरों जैसा व्यवहार नहीं किया। आपसमें इनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण था। यहाँ तक कि अमीरखाँ हर काम करनेमें स्वतंत्र था जिसे चाहता सेनामें रख लेता था जिसे चाहता उसे निकाल देता था। इस स्वतंत्रताके साथ साथ इसे कष्ट भी बहुत उठाने पड़ते थे। रुपयेकी कमीके कारण जब सेनाको वेतन नहीं मिलता था तो वह स्थान स्थान पर लूटमार किया करती थी और जब इस प्रकार भी आवश्यकताकी पूर्ति नहीं होती थी तो नवाब अमीरखाँको सेना अत्यन्त दुखी करती थी। यहाँ तक कि उसे तोपके मुहँसे बाँध कर देर तक धूपमें रखती थी। लेकिन समय पड़ने पर यही सेना अपने स्वामीके लिए अपने प्राणों की आहुती देनेमें जरा भी पीछे नहीं हटती थी। होल्करने इस सेनाके खर्चेके लिए अमीरको कई गाँव जागीरमें भी दे रखे थे किन्तु इससे उसका व्यय अधिक ही था। इस कारण अमीरखाँकी यह सेना राजस्थान मालवा बुन्देलखंड आदि स्थानों पर धावाकर वसूली किया करती थी। धीरे-धीरे यह दस्युओंका दल बढ़ता ही गया यहाँ तक कि इस दलमें १५ हजार व्यक्ति और ११५ तोपें एकत्रित हो गयीं थीं। अस्तु।

अमीरखाँके इस प्रकार स्वतंत्र होने तथा होल्करके सम्मान सहित अमीरके साथ व्यवहार करनेसे होल्करके कई एक सरदार अमीरसे असंतुष्ट रहते थे। ये लोग होल्करके कान भरने लगे जिससे उसके हृदयमें संदेहने घर कर लिया। यह बात अमीरसे गुप्त न रह सकी। सुतराम् अमीरखाँने एक दिन समय पा कर एकान्तमें होल्कर को पकड़कर

और उसके कमरबंदसे एक छोटी कटार निकाल कर कहा—"मैं इस समय एकाकी हूँ यदि मेरे मार डालनेमें तुम्हारी भलाई होती हो तो यह छूरी लो और मुझे मार डालो जरा भी विलंब न करो। इस पर होल्कर लज्जित हो कर कहने लगा कि ऐसी कोई भी बात नहीं होगी जिससे तुम्हें कष्ट हो। इसके पश्चात कभी भी ऐसी कोई घटना नहीं हुई। तबसे यह बराबर मिल कर कार्य (वस्तुतः) करते रहे।

उसी समयमें महादजी सिंधिया पूनासे उज्जैन आया था। होल्करकी सेनाने इसे लूट लिया। इस पर महादजी सिंधिया चित्तौड़में लकवाके पास चला गया। होल्कर और लकवामें शाहजहाँपुरके किलेमें युद्ध हुआ जिसमें लकवा हार कर भाग गया। उधर दौलतराव सिंधियाका अंग्रेज सेनापति कुफ्ससाहब दक्षिणसे सिरोंजमें आया। सिरोंज अमीरखां को होल्करकी ओरसे जागीरमें मिला हुआ था। अतः वहाँ अमीरखांकी ओरसे एक प्रबंधक अधिकारी मुमुक्खां रहता था। उसने अमीरको कुफ्स साहबके आनेकी सूचना भेजी। अमीरखांने सिरोंज पहुँच कर उसे वहाँसे भगाया। फिर नागपुरके राजाको ३।। घंटेके युद्धके पश्चात् देवरीके निकट परास्त किया। इधर फिर दौलतराव सिंधिया बलवंत राव बोकया और चीरस साहब जिसके साथ बीस हजार पिंडारी थे उज्जैन आये। होल्करके पास इस समय सेना कम थी अतः वह केसूरी चला गया और वहां उसने उन दो सेनाओंको लूट लिया जो बलवंतरावकी सहायताके लिए दक्षिणसे आई थी। फिर अमीरखां को चीरस साहब आदिके साथ युद्ध करनको भुकमा। होल्कर और अमीरखांने मिल कर उन्हें भागनेके लिए विवश कर दिया। इसके पश्चात् दोनोंने मिल कर स्थान स्थान पर बड़ी लूटमार की। कुछ दिन साथ रह कर फिर अलग अलग हो कर काम करने लगे। सन् १८ ५ ई. में यशवंतराव होल्कर और अंग्रेजोंके बीच युद्ध हुआ। यह युद्ध डीगमें हुआ था जिसमें होल्करको परास्त होना पड़ा और भरतपुरमें शरण लेनी पड़ी। लार्ड लेकने होल्करका पीछा किया और भरतपुरके राजा रणजीतसिंहको कहलवाया कि यशवंतराव को उन्हें सौंप दें। किन्तु राजा रणजीतसिंहने यशवंतरावको देनेके लिए इनकार कर दिया इस पर भरतपुरका किला घेर लिया गया। इस समय अमीरखां भी होल्करकी सहायताके लिए आ गया था। उसने अंग्रेजोंके सिपाहियोंको हैरान करना आरंभ किया। उसका विचार था कि जो सहायता और रसद कर्नल भेरीके साथ अंग्रेजोंके लिए आती है उसे भरतपुर न पहुँचने दी जावे किन्तु वह सफल नहीं हो सका। इस पर राजा रणजीतसिंहने इन्हें सलाह दी कि एक व्यक्ति तो यहाँ भरतपुरमें रहे और दूसरा जमुनाके देशमें जा कर लूटमार करे। यशवंतरावका जानेका साहस नहीं हुआ क्यों कि वह फर्रुखाबाद और डीगके युद्धमें हार चुका था। अतः अमीरखां वहाँसे रुहेलखंडकी ओर चला। जैसे ही अमीरखां रवाना हो कर चला जनरल स्मिथने अपने सवारों और तोपखानेके साथ उसका पीछा किया। अमीरखां आगरा फर्रुखाबाद आदिको लूटता हुआ मुरादाबाद पहुँचा। वहाँ अंग्रेज कुछ सिपाहियोंके

साथ पड़े हुए थे। दो दिन तक वे उससे लड़ते रहे। इतने हीमें अमरचन्द सिंघ भी आ पहुँचा। अमरचन्द सिंघके पहुँचनेसे अमीरखाँ अपनी सेनाको ले कर पहाड़ोंकी ओर भागा अमरचन्द भी उसके पीछे पीछे चला। अफजलगढ़के पास दोनोंका युद्ध हुआ किन्तु अमीरखाँ ठहर न सका। युद्धस्थल छोड़ कर रुहेलखंडके गाँवोंको लूटता हुआ गंगापार हो गया। इस समय इसके साथ केवल १ सिपाही रह गये थे। इसलिए फिर इसने सेना एकत्रित की और जसवंतरावके पास चला आया। इधर लार्ड लेकने जसवंतरावको संधि कर लेनेके लिए विवश कर दिया। जब संधि होने लगी तो लार्ड लेकने जसवंतरावसे यह कहा कि इस संधिपत्र पर अमीरखाँके भी हस्ताक्षर होने चाहिए। अमीरखाँको यह स्वीकार नहीं था। इस पर जसवंतरावने अमीरखाँकी बहुत खुशामद की और कहा कि मुझे इस समय एक करोड़ बीस लाख मिला है जिसमेंसे मैं आधा दे दूंगा। इस समय १ लाखके गाँव देता हूँ, बाकी दक्षिणा और मांग प्राप्त कर दे दूंगा। इस पर बड़ी कठिनाईसे अमीर राजी हुआ। उसने अपने प्रतिनिधि भेज कर जसवंतरावसे गाँवोंका लेखा मंगवा लिया। जसवंतरावने नवाबकी इच्छानुसार गवर्नर जनरलसे टोंक अलीगढ़ मालवेसे सिरौंज और पचावा मेवाड़से नीमाहेड़ा बीचीवाड़ेसे छबड़ा नवाबको खर्चमें लिख दिये।

अमीरखाँको अब रहनेके लिए, अच्छा स्थान मिल चुका था और उसकी अवस्था भी बढ़ चुकी थी। अतः उसने मुहम्मद अय्याज खाँकी पुत्रीसे सन १२२१ हिजरी तदनुसार सन् १८ ६ ई. में अजमेरमें विवाह कर लिया। इस स्त्रीसे हिजरी १२२२ (सन् १८ ६) में इसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम वजीर मुहम्मद रखा गया। इस समय तक इसका (अमीरखाँका) दल बहुत बढ़ गया था। उसका आतंक चारों ओर छाया हुआ था। कुछ दिन बाद अमीरखाँको जयपुरके राजा सवाई जगतसिंहने जोधपुरके राजा मानसिंहसे युद्ध करने के लिए अपनी सहायतार्थ बुला लिया।

घटना इस प्रकार हुई कि उदयपुरके राणा भीमसिंहकी कन्या कृष्णा कुमारी अत्यन्त सुन्दर थी। उसका वाग्दान (सगाई) राणाने जोधपुर नरेश भीमसिंहके साथ किया था। जब भीमसिंहका निसंतान स्वर्गवास हो गया और जोधपुरकी गद्दी पर मानसिंह बैठे तो राणाने कृष्णा कुमारीका विवाह उसके साथ करना चाहा। इस पर मानसिंहने उत्तर दिया कि कृष्णा कुमारीकी सगाई उसके पिता भीमसिंहके साथ हुई थी अतः माताके साथ मैं विवाह नहीं कर सकता। इसलिए राणाने जयपुरके महाराज जगतसिंहसे संबंध करना चाहा। महाराज जगतसिंहने जोधपुर नरेश महाराज मानसिंहसे पूछ कर और उनके इनकार होने पर विवाह संबंध स्वीकार कर लिया।

तत्कालीन समयमें पोकरणके ठाकुर सवाईसिंह बहुत ही प्रभावशाली एवं विख्यात व्यक्ति थे जिनके पितामह देवीसिंहको महाराजा भीमसिंहने मरवा दिया था। देवीसिंहके

दो पुत्र थे। सबलसिंह और श्यामसिंह। सबलसिंहके पुत्र सवाईसिंह पोकरनके स्वामी हुए और श्यामसिंहने जयपुरमें गीजगढ़की जागीर प्राप्त की। महाराज मानसिंह जब जोधपुरकी गद्दी पर बैठे उस समय सवाईसिंह अपनी कन्याका विवाह जयपुरके महाराज जगतसिंहसे करनेकी तैयारी जयपुरमें कर रहे थे। महाराज मानसिंहने सवाईसिंहसे कहलाया कि आजतक राठौड़ों ने जयपुरवालोंको कभी डोला नहीं दिया है। आप डोला दे रहे हो इससे राठौड़ोंका बहुत ही अपयश होगा। सवाईसिंहने जो मानसिंहसे पहिलेसे ही इस बात पर खिन्न हुआ था कि उसकी बिना सम्मतिके ही जोधपुरकी गद्दी पर बैठ गया था उत्तर भिजवाया कि मेरे काका जयपुरमें ही रहते हैं वहींसे यह विवाह होगा परन्तु यह कहां तक उचित है कि जोधपुरकी मांगको जयपुर वाले ब्याह ले जावें। मानसिंहको यह बात बहुत चुभी और उसने उदयपुरके राणाको विवाहके लिए कहलाकर वह स्वयं विवाहकी तैयारी करने लगा। इधर जयपुरमें भी विवाहकी तैयारी हो रही थी। उदयपुरके राणा जयपुरसे संबंध स्थापित कर देनेके कारण कृष्णा कुमारीका विवाह जयपुर नरेशसे ही करना चाहते थे। इस कारण इस युद्धका श्रीगणेश हो गया।

इधर पोकरन ठा० सवाईसिंहने प्रचारित किया कि स्वर्गीय महाराज भीमसिंहकी रानीसे धौकलसिंह नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ है जो शेखावाटीमें पोषण पा रहा है। वही जोधपुरकी गद्दीका उत्तराधिकारी है। साथ ही जयपुर नरेश जगतसिंहको कृष्णाकुमारीसे विवाह करनेके लिए उत्साहित किया और आश्वासन दिया कि समय पड़ने पर हम सब राठौड़ आपके साथ हैं। हम केवल यही चाहते हैं कि भीमसिंहका पुत्र धौकलसिंह ही जोधपुरका स्वामी बने।

ऊपर लिखा जा चुका है कि राजस्थानमें अमीरखां और उसका दल अपने कार्य कलापोंके कारण भयंकरतामें अति प्रसिद्ध हो चुका था। वह दल पैसेके लिए सब कुछ करनेके लिए हर समय तैयार रहता था। जो अधिक रकम देता था उसीकी ओर हो जाता था। इस कारण जयपुर और जोधपुर नरेश दोनोंने अच्छी रकम देनेकी प्रतिज्ञा कर अमीरखांके दलसे सहायता प्राप्त करनी चाही। इसमें जगतसिंहको सफलता मिल गई। और मानसिंहको किसी भी ओरसे सहायता प्राप्त न हो सकी। जगतसिंहके साथ इस युद्धमें अमीरखांके अतिरिक्त हैदराबादके मीरमहबूब नायिनखां पृथ्वीचन्द और मधुदीन और मरदान अली नवाब आदि जहां बीकानेर नरेश सूरतसिंह और पोकरनके ठा० सवाईसिंह सम्मिलित हुए थे। परबतसर पर जहां जयपुर और जोधपुरकी सीमाएँ मिलती हैं, ये लोग एकत्रित हुए। उधरसे महाराज मानसिंह इन्हें रोकनेके लिये साठ हजार सेना सहित आगे बढ़े। दोनों सेनाओंमें भयंकर काटमार हुई, और अंतमें सवाईसिंहके उद्योगसे राठौड़ी सेना मानसिंहका साथ छोड़ कर, जगतसिंहकी ओर मिल गई। इससे मानसिंह किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया। जैसे तैसे करके बचे हुए व्यक्तियोंको साथ ले जोधपुरकी ओर रवाना हुआ। महाराज जगतसिंह अब

विवाहार्थ उदयपुर जाना चाहते थे किन्तु सवाईसिंहके अनुरोधसे पहिले मानसिंहसे निबट लेना उचित समझ कर जोधपुरकी ओर बढ़े। मड़ताके पास फिर राठौड़ी सेनासे मुठभेड़ हुई। और वहां विजय प्राप्त कर कुछ जमीन बीकानेर नरेशको दी। अब मानसिंहके पास केवल जोधपुर और जालोर ही रह गये थे। महाराज जगतसिंहने पीपाड़ पहुँचकर मारवाड़की २२ तोपें और प्राप्त की। मंडोवर और जोधपुरके निकट सूर्यास्तके समय महाराज जगतसिंह धौंकलसिंहके डेरेमें गये। वहाँ धौंकलसिंहने महाराजका अच्छा आदर-सत्कार किया। वहां दरबार हुआ जिसमें बीकानेरके सूरतसिंह भी थे। धौंकलसिंहको जोधपुरका स्वामी घोषित कर आगे बढ़े जहाँ सिंघी रामचन्द्र बक्सी और अमीरखांकी सेनाएँ इनसे आ कर मिल गई। उसी दिन ये लोग आसानीसे जोधपुर नगर अधिकृत करनेवाले थे। अतः इन्होंने विजय घोषित कर दी और धौंकलसिंहके नामसे ११ अप्रैल सन् १८०७ ई को दुहाई फेर दी और जोधपुर आ कर घेरा डाल दिया।

अब तो जोधपुर नरेश बड़ी कठिनाईमें पड़े। एक बार फिर गुलामखां अफगानके द्वारा अमीरखांसे सहायताकी याचना की किन्तु अमीर सहायता देनेसे साफ इनकार कर गया। घेरा कई दिन तक चलता रहा। राठौड़ोंने बड़ी वीरता पूर्वक सामना किया। अंतमें तोपोंके गोलोंसे किलेका कुछ हिस्सा गिरा दिया गया। उधर किलेकी खाद्य-सामग्री दिन दिन कम होती जा रही थी। ऐसी परिस्थितिमें महाराज मानसिंहने अब सवाईसिंहको कहलवाया कि राठौड़ोंकी इज्जत अब आपके हाथ है। धौंकलसिंह अंततोगत्वा राठौड़ ही है। अतः मारवाड़के दो हिस्से करके एक हिस्सा धौंकलसिंहको दिया जावे जिसकी राजधानी नागौर रहे, दूसरा अर्द्ध भाग मेरे लिये रहे जिसका राजधानी जोधपुर रहे।" इस पर सवाईसिंहने प्रत्युत्तर दिया कि आप किला परित्याग कर दीजिए और अपने लिए एक अच्छी जागीर ले लीजिए। इस पर मानसिंहने साका करके वीरोंकी तरह युद्धक्षेत्रमें प्राणोत्सर्ग करनेका विचार किया। इसी समय इंद्रराज सिंघी और भंडारी गंगारामने जो किसी कारणवश किलेमें कैद थे—मानसिंहको कहा कि अब यह समय हमारी स्वामिभक्तिका है, आप हमारा विश्वास कीजिए और हमें छोड़ दीजिये। हम आपको दिखा देंगे कि हम क्या कर सकते हैं? अंतमें ये दोनों कर्मचारी छोड़ दिये गये। इन्होंने किलेसे बाहर निकल कर मरहठा सरदारों द्वारा अमीरखांसे कहलवाया कि यदि आप हमारी सहायता करें तो हम आपको ४ लाख रुपया तत्काल और आपकी सम्पूर्ण सेनाका खर्चा देंगे तथा आपको एक अच्छी जागीर भी देंगे। इस पर अमीर सिंघी इन्द्रराजसे बातचीत करनेके लिए घेरेसे हट गया और मरहठा सरदारोंसे मिल कर, मारवाड़को लूटता हुआ अरक्षित जयपुर पर आक्रमण कर दिया।

जब यह बात महाराज जगतसिंहको ज्ञात हुई तो प्रथम तो वह बहुत घबड़ाया फिर तुरन्त ही बक्सी शिवलालको अमीरके विरुद्ध भेज दिया। शिवलालने आगे बढ़ कर अमीरकी

सेनाको फागीके पास परास्त किया। तत्पश्चात् अपनी सेनाको छोड़ कर किसी कार्यवश जयपुर चला आया। जब अमीरखाँको अपनी हारका हाल ज्ञात हुआ तो उसने मुहम्मदखाँ और राजा बहादुरको जो ईसरदाको घेरे हुए थे कूच किया और जल्दी शिवलालकी सेनाकी ओर बढ़े। रास्तेमें इन दोनों सेनाओंकी टक्कर हुई। कई स्थानों पर नवाबकी सेना परास्त हुई, किन्तु वर्षाकी अधिकताके कारण कछवाही सेनाको सांगानेर तक पीछे हटना पड़ा और नवाबकी सेनाने उसका पीछा किया। यहांसे जयपुर शहर सिर्फ ५ कोस दूरी पर था। शहर जयपुर पर चढ़ाई करना नवाबके लिए उचित नहीं था। अतः नवाब अमीरखाँ सैंधिया और राठौड़ोंके साथ मारवाड़की ओर चला।

इधर अभी तक अम्बाजी इंगलिया और स जगतसिंह जोधपुर पर घेरा डाले हुए थे जब कि अन्य सरदार अमीरखाँकी तरह घेरा छोड़ कर जा चुके थे। अतः जगतसिंहने भी घेरा उठा लेनेका विचार कर बीकर्णसिंह और सवाईसिंहको नागौर ठहरनेके लिए कहा। और उनकी रक्षार्थ अन्य लोगोंको वहाँ छोड़ा। साथ ही कुछ सेना शेखावाटीमें भी सहायतार्थ छोड़ी और आप स्वयं जयपुरकी ओर रवाना हुआ। इस प्रकार यह घेरा उठाया गया। इससे मानसिंह बड़ा ही भाग्यशाली प्रमाणित हुआ जो बिना किसी उद्योगके घेरेसे निकल गया।

अब रही कृष्णा कुमारीके विवाहकी बात उसका हाल यह है कि अमीरखाँने पहिले जगतसिंह और सवाईसिंहसे अच्छी मित्रता स्थापित की तत्पश्चात् पैसेके लोभसे इनका साथ परित्याग कर दिया और मानसिंहसे जा मिला। लेकिन उसके साथ भी अपनी कुटिलताका परिचय दिया। उसने सवाईसिंह इंद्रराज सिंघी और महाराजा मानसिंहके गुरु देवनाथकी हत्या की जिससे मानसिंहको अत्यन्त दुःख हुआ। अन्तमें उसने यह सोचा कि कृष्णा कुमारी रहेगी तो फिर झगड़ा होना संभव है इसे समाप्त कर दिया जाना ही उचित है। अतः उसने उदयपुर जा कर राणा भीमसिंहको कृष्णा कुमारीकी हत्या कर देनेके लिये विवश कर दिया। कृष्णा कुमारीके तीन बार हलाहल पी लेने के पश्चात् सदाके लिए झगड़ेकी संभावना जाती रही। सवाईसिंहकी हत्याके पश्चात् बीकर्णसिंह भाग कर बीकानेरकी ओर चला गया। इस प्रकार इस युद्धका अंत हुआ।

ऊपर लिखा जा चुका है कि अमीरका दल बहुत बढ़ गया था। उसकी सेनामें कई रिसालदार थे जो स्थान स्थान पर रियासतों और ठिकानेवालोंसे अपनी सेनाका व्यय वसूल लेते थे और समय असमय पर जनताको लूटते रहते थे। इस पर भी उनका व्यय नहीं चलता तो वे मिल कर अमीरखाँको तंग करते थे। एक समय जोधपुर वाले युद्धके पश्चात् खुदाबक्स मुहम्मद तईखाँ कुतुबुद्दीनखाँ फैजुल्लाखाँ मुनीरखाँ नजीबखाँ लाल मुहम्मद बाराशाहखाँ कमरुद्दीनखाँ और अन्य रिसालदारोंने मुहम्मदखाँके साथ षड्यन्त्र करके अपने वेतनके लिये विद्रोह उत्पन्न किया। उस समय अमीरखाँ अपने परिवारके साथ कुमकोलाके

किलेमें था जो उसने कुछ दिन पूर्व हस्तगत किया था। इन विद्रोहियोंने वहाँ आ कर बलवा किया। अमीरखाँने राजा बहादुरलालसिंहको जो उदयपुरमें था अपनी सेना सहित इन उपद्रवियोंको शांत करनेके लिये बुलाया किन्तु इसने उत्तर भिजवाया कि आजकल मैं महाराणाकी सेवामें हूँ, बिना उनकी आज्ञाके नहीं आ सकता। अतः अमीरखाँने महाराणाको लिख कर उसे बुला लिया। वह वहाँसे सीधा जयपुरमें नवाब मुस्ताअलीखाँके पास आया उसने फिरसे उसकी (नवाबकी) अध्यक्षतामें सेनाकी बागडोर संभाली।

जब अमीरखाँको ज्ञात हुआ कि उसकी रक्षक सेना जमशेदखाँ मुहम्मद सईदखाँ आदिके साथ इन उपद्रवकारियोंसे असन्न है और अभी तक शांत है तो उसने सोचा कि इनके सामने युद्धके स्थान पर इस सेनाके सामने प्रकट होना अति उत्तम होगा। इस विचारके अनुसार वह किलेसे बाहर आया और सबको पृथक पृथक बुला कर कहा कि यदि आप यह समझते हों कि मैंने अपने लिए धन एकत्रित करके छिपा रखा है तो आप तलाश करके कोई भी वस्तु अपने अधिकारमें कर सकते हो। किन्तु इन अफगानोंने उसका जरा भी विश्वास नहीं किया और उसे अपने अधिकारमें ला कर उसके साथ अत्यन्त कुत्सित व्यवहार करने लगे। अमीरखाँने यह देख कर अपने पुत्र अमीरअलीखाँके साथ अपने परिवारको इररक्षकोंकी अधीनतामें टोंक भेजा दिया और आप स्वयं उन लोगोंके साथ किशनगढ़की सीमामें आया। वहाँ लूट खसोट की और ७ हजार रुपया सेना खर्चका राजासे प्राप्त किया। इसी प्रकार शाहपुरा आदिसे सेनाव्यय प्राप्त कर तत्पश्चात् बूँदीकी सीमामें प्रवेश किया फिर सम्भी बूँदर और निनवगर्में आया। इस स्थान पर कर्नल मोहनसिंह और मुहम्मद अयाजखाँके रिसालेसे मिला जो तत्काल ही बंगीसे आये थे। अमीरखाँने बूँदीसे भी सेना-व्यय मांगा और लेनेके बाद जयपुर राज्यकी सीमामें प्रवेश किया। टोरडी और चावंडेनके निकट जाकर उनियारा और ईसरदासे भी उसी प्रकार अपनी मांग रखी तथा निवाईके पास आ कर डेरा डाला। अब उसका विचार जयपुरके साथ झगड़ेके लिए आवश्यक समझौता करनेका हुआ। इसके लिए मुस्ताअलीखाँको सेना सहित बुलाया था जो उस समय हिण्डौनमें था। उसको पत्र लिख कर आप मोहनसिंहकी सेना सहित चाकसूमें आया। इस स्थान पर अमीरखाँने मेघसिंह आदि जयपुरके अन्य अधिकारियोंसे मिल कर तै किया कि १२ लाख रुपया उसको (अमीरको) हीरानंद सेठके द्वारा मिल जाय जो मुस्ताअलीखाँकी सेनाके साथ है। अमीरखाँ यह समझौता कर किशनगढ़की ओर बढ़ा। उधर यह समाचार मुस्ताअलीखाँने सुने कि जयपुरके साथ इस प्रकार बातचीत निश्चित हो चुकी है तो वह वापिस लौट गया। जयपुरके भूतपूर्व दीवान राव चतुर्भुजके बहकानेसे शेखावाटीमें नवलगढ़ और खेतड़ीके विरुद्ध गया। इसी बीचमें महाराज जगतसिंहने किसी कारणवश मेघसिंहको दीवानपदसे हटा दिया। उसी समय अमीरखाँने अपने पुत्रको सपरिवार टोंक छोड़ कर घेरगढ़ चले जानेकी आज्ञा भेजी और स्वयं किशनगढ़से रवाना हो कर तुंगरमें आ कर बांडीके निकट डेरे डाले। इधर मुस्ताअलीखाँने नवलगढ़ और खेतड़ी तथा शेखावाटीके अन्य ठिकानोंसे सेना-व्यय प्राप्त कर अमीरके

पास आ कर पड़ाव किया। अमीरखाँ अभी तक अफगानोंकी दुरंगाई नीतिके कारण उनके घेरेमें ही था। इस प्रकार आठ मास व्यतीत हो चुके थे। अमीरखाँने इस लाखकी हुंडी जो अभी जोधपुरसे प्राप्त हुई थी उन्हें दे कर अपना पीछा छुड़ाया और खुशीमें अपने डेरेमें आ कर सलामीकी तोपें चलवाईं। जयपुरमें जब इन तोपोंकी आवाजकी सूचना महाराज जगतसिंहको मिली तो वे बहुत चकित हुए। प्रातःकाल जब सर्व घटना ज्ञात हुई तब महाराजने बोहरा शिवलालको अमीरखाँके पास आवश्यक समझौतेके लिए भेजा। अमीरखाँ कुछ समय तक वहीं ठहरा रहा। अपने सेना व्ययको मिलता न देख कर अपनी सम्पूर्ण सेना सहित साँगानेर आया। साँगानेरके पास जोधपुरकी सेना थी उस पर आक्रमण कर भगा दिया। अब वह बोहरा शिवलालके बागके (आजका गाँधी नगरके) निकट आ गया। जब यह समाचार जयपुरके अधिकारियोंने सुने तो वे बहुत घबराये और उन्होंने दस लाख रुपया बोहरा शिवलालके द्वारा जो तोमारसे अमीरखाँके साथ था देना स्वीकार किया। जिसमेंसे ६ लाख रुपया तो अमीरखाँने मुहम्मदशाहखाँकी सेनाका चढ़ा हुआ खर्चा रखा बाकी रुपया जमशेदखाँ राजासाहबखाँ और लालमुहम्मदखाँ तथा अन्य स्वतंत्र रिसालदारोंके लिए रखा। इस प्रकार मार्ग करनेका कारण यह भी था कि जब अमीर जयपुरमें था उस समय यह लोग अत्यन्त ही स्वामिभक्त रहे थे। अमीरखाँने इस रुपयेको प्राप्त कर सेनेका कार्य मुहम्मदशाहखाँ पर रखा।

इस प्रकार सब कार्यवाही कर अमीरखाँ लावाकी ओर अग्रसर हुआ। वहीं उसका विचार पहुँचते ही आक्रमण कर देनेका था किन्तु मुहम्मदशाहखाँने समझाया कि इस प्रकार आक्रमण करनेसे कुछ भी हाथ नहीं आवेगा। अतः उसने राजाराम के साथ अपनी सेनाको मेवाड़में सेना-व्यय एकत्रित करनेके लिए भेजी और आप स्वयं दो हजार घुड़सवारों जमशेदखाँ और अफरीदियों सहित वहीं ठहर कर लावावालोंसे सेना-व्ययकी माँग करने लगा। लावेके किले पर दो तीन बार आक्रमण भी किये। किन्तु किलेकी सुदृढ़ दीवारों और खाईको गहराईके कारण वे सफल नहीं हुए। बहुत समय ऐसे ही व्यतीत हो गया। इसी बीचमें पंत राजाराम मुहम्मदशाहखाँकी सेनाके साथ जोधपुर भेजा गया वह महाराज मानसिंहसे १ लाख रुपया प्राप्त कर आ रहा था। उसके लौटनेके समाचार यशवंतराव होल्करके डेरेमें पहुँचे उस समय अमीरनामे का लेखक मुंशी बुसावनलाल (बाहुवान कवि) भी वहीं उपस्थित था जो उस समय राजा मोहनसिंहकी सेनामें कार्य कर रहा था। उसने (बाहुवान कविने) इस घटनाकी स्मृतिमें कुछ कविताएँ रचीं। इसी समय सन् १२२७ हिजरीमें (ई. सन् १८११) पिंडारी करीमखाँ जिसके पास पिंडारी वस्तुओंका बहुत बड़ा दल था दौलतराव सिंधियासे हार कर, बचे हुए थिर हिंगोंके साथ अमीरके पास आया। इस पर सिंधिया पर, राजमाता बाकिमसिंह होल्कर बाई (यशवंतरावकी विधवा) और अंग्रेजोंने मिल-कर अमीरको इस वस्तु सरदार करीमखाँको पकड़ कर सौंप देनेके लिये बहुत दबाया था। अमीरने इस बातको अपने गौरवके अनुकूल न समझ कर इस पिंडारे सरदार और उसके साथियोंको

अपने पास रखा और सैनिया मालिको उत्तर भिजवाया कि वह (पिण्डारा सरदार) इस समय उसके पास है इसलिए इस तरफसे कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यद्यपि अमीरखांको उसके बहुतसे रिसालदारोंने समझाया कि पिंडारेको पकड़ कर सौंप देना चाहिए, तथापि उसने उन लोगोंकी एक भी न सुनी।

अब हम फिर आगरा की ओर आते हैं। जयपुरसे जो रुपया तय हुआ था वह ठीक समय पर मुख्तारउद्दौलाको मिल चुका था। इस पर जमशेदखां और दूसरे रिसालदारोंने जिनके पास सेना थी समय पा कर नवाब मुख्तारउद्दौलाको पकड़ लिया और उसके गलेमें तलवार लगा कर सौगन्ध खाई कि जब तक उन्हें पूरा रुपया न चुका दिया जायेगा तब तक उसे न छोड़ा जायेगा। संयोगवश उसी समय जिस समय यह उपद्रव हो रहा था अमीरखां भी नवाबके डेरेकी ओर आ निकला। उस समय दिनके ९-१० बजेका समय था। वहाँ पहुँच कर जब उसे सब घटना ज्ञात हुई तो उसने विचार किया कि यदि लोग उसे इस समय इस डेरेमें देख लेंगे तो सेनामें संदेह करेंगे कि यह उपद्रव उसीने खड़ा किया है। अतः वह चुपचाप अपने डेरेमें न लौट कर लोगोंकी निगाहसे निकल गया। वह फैजुल्लाखां बंगशके डेरेमें चला गया। जब तक यह उपद्रव शांत न हुआ तब तक वहीं रहा। जैसी कि अमीरखांने आशंका की थी मुख्तारउद्दौलाकी अध्यक्षतामें जो सिपाही थे उन्होंने यह समझ कर कि अमीरने ही उनके सरदारके साथ यह गड़बड़ी की है, उसके डेरेको घेर लिया और मोर्चा-बंदी कर दी। और यह कहा कि जब तक उनके स्वामी मुख्तारउद्दौलाको न छोड़ा जायेगा वे अमीरको अपने अधिकारमें रखेंगे। यह समझ कर कि अमीर उनके अधिकारमें है रात भर आक्रमण करते रहे। उधर अफगान मुख्तारउद्दौलाके गलेमें तलवार लगाये खड़ी बनाय रहे। अंतमें अमीरके मंत्री राय रामाराम मुख्तारउद्दौलाके भतीजे मारवा और सेठ हीराचंदके गुमाश्ते जवाहरसिंहकी जमानत पर, उसको छोड़नेको उन्हें राजी किया गया। अमीरने रायको बुला कर कहा कि जब तक वह मुख्तारउद्दौलाके बदला देना स्वीकार न करेगा तब तक उन दोनोंको न छोड़ा जायेगा। उसे आशा थी कि इस प्रकार राय उसका (मुख्तारउद्दौलाका) जामिन हो जायेगा। रायने अमीरके लिए यह सब स्वीकार कर लिया। मारवा और जवाहरसिंहके साथ जमशेदखां और अन्य अफसरोंने रायको अपने अधिकारमें रख लिया। इस प्रकार अमीर और मुख्तारउद्दौलाने कठिनाईसे मुक्ति पाई। इसी बीचमें राजा मोहनसिंहकी सेनाके सिपाही भी अपने वेतनके लिए हल्ला मचाने लगे। अमीरके ससुर मुहम्मद अयाजखांके बहकानेसे अपने सरदार राजाको जयपुरमें टोंकके स्थान पर कैद कर लिया। इसलिए मुंशी मुहम्मदलालने जो उस समय मोहनसिंहकी सेनामें था उनके छुटकारेके लिए उद्योग किया। छुटकारेके पश्चात् राजा मोहनसिंहने नौकरी करना उचित न समझ कर त्यागपत्र दे दिया और मुख्तारउद्दौलाके पास चला गया। राजाके त्यागपत्र देने पर उसके स्थानका नायब मुहम्मद अयाजखां बनाया गया।

नवाब अमीरखाँ मुहम्मद शाहखाँ और दूसरे रिसालदार, जिन्होंने राय चाँदाराम और उसके दो साथियोंको पकड़ रखा था मेवाड़में किशनगढ़की ओर अग्रसर हुए। अमीरने राजाबहादुर रिसालदारकी अध्यक्षतामें अपनी प्रधान सेना मेवाड़में सैनाध्यक्ष प्राप्ति हेतु भेजी। आप स्वयं थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ करीमखाँ पिंडारीको ले कर टोंक और रामगढ़ होता हुआ कोटा राजराणा जालिमसिंहके पास गया। वहाँ पर चार दिन ठहर कर वह मानपुरा गया जहाँ छावनीमें जसवंतराव होल्करका निधन हुआ था। वहाँ उसकी विधवा बाईसे मिल कर शोक प्रकट किया और उसके आग्रहसे जसवंतरावके उत्तराधिकारी मल्हाररावकी नाबालगीमें राज्यका प्रबंध करना स्वीकार किया। अमीरखाँने करीमखाँ पिंडारीको वहीं कुछ दिन ठहरनेकी सम्मति दी और उसे समझाया कि शामदारखाँ और उसके (करीमखाँके) साथियों तथा संबंधियोंको मेरे साथ भेज दिया जाय जिन्हें मैं राजा दुर्जनशाल खींचीसे मिला दूँगा जो इस समय दौलतराव सेंधियाके विरुद्ध विद्रोह कर रहा है। ये लोग अच्छी सहायता करेंगे। सेंधियाको उसके कियेका फल चखायेंगे। करीमखाँको यह योजना पसंद आ गई और वह मानपुरा ठहरनेके लिए तैयार हो गया। इस पर अमीरने करीमखाँको इच्छ शाहदौला और मफूरखाँके सिपाहियोंकी नाम मात्रकी चौकसीमें छोड़ दिया और आप शामदारखाँ, वहुसमतखाँ और दूसरे लोगोंके साथ जेरगढ़ आ कर दुर्जनशालसे मिला। पिंडारी सरदारोंको यह कह कर उसके पास छोड़ दिया कि ये लोग तुम्हारी अच्छी मदद करेंगे और इनके सहयोगसे बड़े बड़े कार्य हो सकेंगे। उधर पिंडारोंसे यह कहा कि मैं राजा (दुर्जनशाल)का कार्य तुम्हारे हाथमें देता हूँ तुम अपने और राजाके शत्रुके विरुद्ध मिल कर कार्य करो। इसके अतिरिक्त शामदारखाँको वजीर मुहम्मदखाँ भूपाल वालेके नाम भी एक पत्र दिया जिसमें पिंडारियोंकी सहायता देनेको लिखा गया था। इसी समय अमीरखाँने मुहम्मद शाहखाँको 'समसुद्दौला जफरजंग' व गफूरखाँको 'गफ्फरउद्दौला बेगजंगकी' उपाधियाँ प्रदान कीं। गफूरखाँको मुहम्मदखाँके स्थान पर सिरौंजका अधिकारी बना कर भेज दिया।

मुस्तकद्दौला जो जयपुरके पास सेना लाने पड़ा हुआ था अपने सिपाहियोंकी विद्रोहात्मक प्रवृत्ति देख कर भयभीत हो चुका था। अतः जयपुरका घेरा परित्याग कर किशनगढ़की ओर चला गया। अमीरखाँने मोहनसिंहके बच्चेको दूसरे सिपाहियोंके साथ अपने ससुर मोहम्मद अयाजखाँकी अध्यक्षतामें जयपुरके राजधानी भागमें सैनाध्यक्ष एकत्रित करनेको भेजा। जयपुर वालोंने अभी तक निश्चित रकम नहीं दी थी और देनेमें आनाकानी कर रहे थे। अतः मुस्तकद्दौलाके वकीलसे लोगोंने कहा कि जब तक अमीरके ससुरकी अध्यक्षतामें शहर पर तोपखाना न लगाया जायेगा तब तक रुपया प्राप्त होना कठिन है। इसलिए नवाब सामरकी ओर रवाना हुआ और तोपखाना लानेका प्रयत्न करने लगा। मार्गमें ठाकुर चाँदसिंहकी अध्यक्षतामें जयपुरकी सेनाने उन पर आक्रमण किया। जब यह समाचार राजा बहादुरलालसिंहने सुने जो इस समय जयपुरके घेरे पर नियुक्त था और जिसने जाया

वालोंको इतना दबा दिया था कि उनके नाश होनेमें कोई कमी नहीं थी तो लावावालोंने ८ हजार रुपया देनेकी प्रतिज्ञा पर घेरा तोड़ कर, अमीरके ससुरकी सहायताके लिये शीघ्र पहुँच गया और जयपुरकी सेनाको पीछे हटा दिया। इस प्रकार यह लावेका घेरा कई दिन रह कर समाप्त हुआ। लावाका यह घेरा सन् १८१२ ईमें डाला गया था।

अमीरखां करीमखांको भागपुरा छोड़ कर, घूमता हुआ अजमेर आया वहाँ उसे मुहम्मद अय्याजखां मिला। मुहम्मद अय्याजखांके सिपाहियोंको अभी तक बाकी रुपया नहीं मिला था अतः अमीरखांने शीघ्र ही रुपया दिये जानेका उन्हें आश्वासन दिया। आश्वासन दे कर अमीरखां जोधपुर चला गया। इधर मुल्लाअहीलाकी जयपुरकी सेनासे फिर मुठभेड़ हो गई जिसमें जयपुर सेनाको पीछे हटना पड़ा और संधि करनी पड़ी। इसी समय सन् १८११ ईमें जगतसिंहकी बहिनका विवाह मानसिंह जोधपुरके साथ और मानसिंहकी पुत्रीका विवाह जगतसिंह जयपुरके साथ हुआ। संधिके पश्चात् मुल्लाअहीला मेड़ता चला आया और अमीरसे मिल कर जोधपुरसे फिर रुपयोंकी मांग की। यहाँ इंद्रराज और महाराज मानसिंहके गुरु देवनाथकी हत्याके पश्चात् अमीरखां शेखावाटीमें आया। यहाँ श्यामसिंह और अभयसिंहके विरुद्ध मोर्चाबंदी की जिन्होंने जमशेदखांको हरा कर भगा दिया था। अमीरने इनसे १ लाख रुपया ले कर जयपुर जा कर रुपयोंकी फिर मांग की और रुपया प्राप्त न होने पर घेरा डाल दिया। छुटपुट आक्रमणोंके अनन्तर मानसिंहकी पुत्रीके आग्रह जिसका विवाह कुछ दिन पूर्व जगतसिंहके साथ हुआ था—घेरा उठा कर अमीरखां जोधपुरकी ओर चला गया और इधर जोधपुर और बीकानेर रियासतोंमें दस्युता करता हुआ कई महीनों तक घूमता रहा। तत्पश्चात् अमीरखांको माधोराजपुरेके किलेकी ओर जाना पड़ा वहाँ लवानेके कंवर मारुतसिंहने अमीरके ससुर मुहम्मद अय्याजखांके बीबी बच्चोंको टोरडीसे ला कर, अमीरखांको अपने ऊपर आक्रमण करनेके लिये विवश कर दिया था।

अमीरखांने जब लावाको घेरा था उस समय लावाकी सहायताके लिए नरूकोंके सभी नरूके सरदार आये थे। जिनमें लवानेके ठा० मदनसिंहके पुत्र कंवर मारुतसिंह भी थे। यह वीर धीर उत्साही नवयुवक थे। इन्होंने अपने ठिकानेकी 'रिजक' नामक तोपसे इतने गोले अमीरखांकी सेना पर बरसाये थे कि विवश हो कर अमीरकी सेनाको घेरा उठाना पड़ा था। ऊपरकी पंक्तियोंमें यह लिखा जा चुका है कि लावेका घेरा राजा बहादुर बालसिंहने लावा वालोंसे ८ हजार रुपया देनेकी प्रतिज्ञा पर उठा लिया था। यह लेख अमीरखांके केवल जोगी मुन्शी बुसावनलालका है जिसने अमीरके जीवनकालमें ही अमीरकी जीवनी लिखी थी। किन्तु अन्य इतिहासकारोंका कथन है कि मारुतसिंहके गोलोंकी मारसे विवश हो कर यह घेरा उठाया गया था।

लावाके घेरेके पश्चात् एक समय नरूकोंमें एक विवाहोत्सव था जिसमें कंवर मारुत सिंह भी अपने साथियों सहित सम्मिलित हुए थे। प्रसंगवश वहाँ पर कई सरदारोंके मध्यमें

जिनमें राठौड़ भी थे जाजामें की गई अपनी वीरताका गर्वभरे शब्दोंमें वर्णन किया जिससे कि वैनीकर जो संधिकी चर्चा चल रही थी वह स्थगित हो गई और जाजाका घेरा उठा लिया गया। प्रसंगवश यह बताना अनुपयुक्त न होगा कि राठौड़ों और कछवाहोंमें आपसमें समधियोंका संबंध था और वे एक दूसरेसे हँसी मजाक भी किया करते थे। किन्तु इस हास्यमें कभी मनोमालिन्य नहीं हो पाता था। अस्तु, माधवसिंहकी उक्त गर्वभरी बातसे एक राठौड़ सरदारने मुँह बना कर कहा कि "इसमें आपकी वीरता क्या थी आपने तो अपने दीन जातिभेयको और भी कठिनाईमें फँसा दिया था वह तो भाग्यकी बात थी कि घेरा उठ गया। आपकी वीरता तो तब समझी जाती कि जब आप नवाबको अपने घर पर मुजरा निमंत्रित करते। हमें तो पूर्ण विश्वास है कि यदि ऐसा किया जाता तो आप अपने बालबच्चों सहित ठिकानेको भी खो बैठते।" यह शब्द माधवसिंहको तीरकी तरह लगे। कुछ क्षणके लिए वह स्तब्ध हो गया किन्तु उसी क्षण एक व्यक्तिसे जल मँगा कर उसे अपने दाहिने हाथमें ले कर प्रतिज्ञा की "यदि एक वर्षके भीतर मैं नवाबको मुजरा निमंत्रित करके परास्त नहीं करूँ तो मैं असल राजपूत नहीं और मुझे अपने वंशका कलंक समझा जाये।" इस पर उपस्थित सब ही व्यक्तियोंने माधवसिंहको अपनी प्रतिज्ञा वापिस लेनेके लिए बाध्य किया किन्तु उसने उत्तर दिया कि हाथीके दाँत एक बार बाहर निकलनेके पश्चात् कभी अन्दर नहीं जा सकते हैं वैसे ही राजपूतके मुँहसे भी शब्द एक बार कह जाते हैं। इस हास्यसे भावेकी घटनाका श्रीगणेश हुआ।

जब माधवसिंह अपने स्वामिभक्त चतुर एवं दूरदर्शी कामदार शंभू भाभाई सहित घर लौट रहे थे तब मार्गमें कामदारने कुँवर माधवसिंहको उसके इस प्रकार प्रतिज्ञा करने पर बहुत बुरा भला कहा। तुम्हारा इस प्रकार अदूरदर्शितापूर्ण कार्य केवल लड़कोंके नाशके अतिरिक्त कुछ नहीं है। क्या आप अनेक साधन संपन्न अनेक युद्धोंमें मुक्त एवं अदमनीय कठोर और भयंकर अमीरखाँ पर विजयकी आशा करते हैं? क्या राजस्थानमें अमीरके विरुद्ध खड़े होनेकी किसीमें शक्ति है? जयपुर, जोधपुर, उदयपुर भी बराबर भय खाते रहते हैं और समय समय पर उसे सेनाव्ययकी रकम देते रहते हैं। इस पर कुँवरको वास्तवमें क्षोभ हुआ और उसे अनुभव होने लगा कि जल्दबाजीमें बड़ी भयंकर भूल हो गयी। फिर भी उसने उत्तर दिया कि आप सब लोग अपने अपने घरोंमें बैठ कर आराम करो। मैं यह जानता हूँ कि आज नवाबका राजस्थानमें विरोध करने वाला कोई नहीं है तो भी नवाब चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो मैं एकाकी ही नवाबकी सेनाका सामना करूँगा और अंतमें एक वीर योद्धाकी तरह वीरगति प्राप्त करूँगा। इस पर भाभाईने उसे आश्वासन दिया कि आपको किसी प्रकारकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। यद्यपि मैं एक तुच्छ जातिका गुजर हूँ और एक छोटेसे ठिकानेका कामदार हूँ तथापि आप विश्वास रखें और देखें कि मैं किस प्रकार प्राणके मन तक आपकी प्रतिज्ञापूर्तिमें योग देता हूँ। मुझे पूर्ण अधिकार दिया जावे

और आगे मेरा कार्य देखा जावे। इसी तरह वर्षका अंत होनेमें कुछ ही दिन शेष रह गये थे किन्तु जामाईने अभी तक कुछ भी नहीं किया था। इस पर कुंवरने एक दिन जामाईको बुला कर कहा कि तुम तो अपनेको तुच्छ गूजर कह कर अपनी बातसे हट सकते हो किन्तु मैं राजपूत बिना प्रतिज्ञा पूर्ण हुए कैसे मुँह दिखा सकूंगा। इस पर जामाईने कहा कि आप चिंतित न हों समय अब कार्य करनेका आया ही है। आप मेरी कार्यवाहियोंको चुपचाप देखते रहें।

दूसरे दिन उसने बजारके हलवाइयोंको बुला कर ५ व्यक्तियोंके लिए हलवा पूरी तैयार करनेको कहा और साथ ही उसने सम्पूर्ण नरूकांके नरूका राजपूतोंको स्त्री, बच्चों सहित भोजनका निमंत्रण भेजा। यथा समय सब लोग भोजनके लिए आये भोजनके पश्चात् जामाईने सबको एकत्रित कर कहा "ठिकानेमें ऐसा कोई बड़ा कार्य नहीं था जिसके कारण इतना बड़ा प्रीतिभोज दिया जाता किन्तु कुंवर वीर और पराक्रमी हैं और नरूकोंके टीकाई हैं अतः आप सबको उन्हें सम्मान देना चाहिये। इसके पश्चात् कुंवर घोड़े पर चढ़ और उपस्थित नरूकोंमें से ५ चुने हुए पराक्रमी एवं साहसी योद्धागण कुंवरके पीछे पीछे चले और जामाई पैदल साथ साथ चला। यह सब लोग माधोराजपुरेके किलेकी ओर आये। जयपुरमें यह किला अन्य किलोंसे अधिक सुदृढ़ था। जब यह लोग वहाँ पहुँचे तब रात्रिके १ बज चुके थे। रस्सेकी सीढ़ियों द्वारा किलेमें प्रवेश कर किलेका दरवाजा खोल कर बाकी बचे हुए साथियोंको किलेके अंदर लिया गया और फिर वहाँके रक्षकोंको बाहर निकाल दिया गया जो जसवंतसिंहकी राठौड़ रानी (मानसिंहकी पुत्री)के द्वारा वहाँ नियुक्त थे। इसके पश्चात् रातोंरात सम्पूर्ण नरूकाओंको स्त्रियों बच्चों सहित वहाँ बुला लिया गया। इस प्रकार अपनी रक्षाका प्रबंध कर अमीरसे युद्ध करनेकी तैयारी की जाने लगी।

अमीरखांका ससुर मुहम्मद अय्याजखां उस समय टोरडी ठाकुरके यहाँ सपरिवार ठहरा हुआ था जिससे उसका संबंध धर्मभाईका था और उसकी बेगम ठकुरानीकी धर्मबहिन थी। इस बातको जामाई अच्छी तरह जानता था। अतः उसने २ चुने हुए पराक्रमी और उत्साही सवारोंको ले कर रात्रीमें टोरडीके जनाने महलों पर आक्रमण किया। उसने गाँवमें आ कर बहुतसे बैलोंको एकत्रित कर उनके दोनों सींगों पर मशालें जला कर इधर उधर फैला दिया जिससे यह मालूम हो कि कोई बहुत बड़ा दस्युओंका दल लूटनेको आया है। तब इस प्रकार किसी भी समय लूटमार हो जाना कोई बड़ी बात नहीं थी। अय्याजखां तथा ठाकुरने जब इन लोगोंका हल्ला गुल्ला सुना तो देखनेके लिये अपने स्थानसे बाहर आये। अय्याजखांने यह समझा कि रात्रिके अंधकारके कारण उसीके व्यक्ति लूटमार करने आये होंगे। उन्हें देखनेको कुछ व्यक्तियोंको गाँवकी ओर भेज दिया। इधर जामाईने जनाने महलों पर आक्रमण कर अय्याजखांके परिवारकी स्त्रियों और बच्चोंको, जिनमें अमीरखांकी स्त्री भी थी अपने अधिकारमें करके ले चला और पहरेदारोंमेंसे एकको भी समाचार देनेके लिये जीवित नहीं छोड़ा। इधर बैलोंके सींगोंकी मशालें बुझने

भी तो उनके साथ जो आदमी थे उन्हें छोड़ कर चल गये। जब माघ मास समाप्त हुआ और मुहम्मद अय्याजखां अपने ठहरनेके स्थान पर मध्य रात्रिको वापिस आया तब वहाँ उसे कोई भी व्यक्ति नहीं मिला और हुक्काकशको देख कर तो उसे और भी आश्चर्य हुआ कि इस इतनी बड़ी घटनाका उन्हें जरा भी भान न हुआ। उस ओर बामाई उन बेगमों आदिको आरामके साथ माधोरामपुराके किलेमें ले गया जहाँ उन्हें बड़े ही आरामसे रखा। अब युद्धके लिए रसद आदिका प्रबंध किया गया। जब अमीरखांको इस दुर्घटनाका समाचार मिला तो उसने अपनी बड़ी सेना ले कर माधोरामपुराके किलेको घेर लिया।

घेरा डालनेके पश्चात् अमीरखांने प्रथम भारतसिंहको अपने परिवार वालोंको छोड़ देनेके लिए संदेश भेजा। भारतसिंहने फसल पकने तक अमीरको अपना विचार प्रकट नहीं होने दिया उसे वस्तुस्थितिसे अंधकारमें ही रखा। जब फसल पक कर तैयार हो गई और खाने पीनेकी सामग्री प्रचुर मात्रामें एकत्रित कर ली गई, तब अपनी इच्छा स्पष्ट रूपसे अमीरको प्रकट कर दी। इस पर अमीरने रावोलकी ओरसे आगे बढ़ कर घेरेको और भी संकुचित कर लिया। इसके साथ ही उसने राजा बहादुरकाकसिंह मियां अकबर, मोहम्मदखां और महमूदखां आदिकी सेनाको बुलवा लिया। इसके अतिरिक्त मुहम्मद जमशेदखां और बेगम हिम्मतखांकी घुड़सवार सेनाको भी बुलवा लिया। इन्हें किलेके चारों ओर लगा कर मार्ग अवरुद्ध कर, बाहरसे किलेवालोंका संबंध विच्छेद करनेके पश्चात् आक्रमण कर दिया। इस प्रकार घेरा डाले हुए और आक्रमण करते हुए कई मास व्यतीत हो जाने पर भी अमीरखांको सफलता नहीं मिली तब उसने अपनी सेनाके सम्पूर्ण अधिकारियोंको एकत्रित करके परामर्श किया और यह निश्चय किया कि किलेकी एक ओरकी दीवारको तोड़ कर किलेमें प्रवेश कर आक्रमण करना चाहिए। इस योजनाके अनुसार कार्यवाही आरंभ की गई, किन्तु अमीरके काबुली सिपाही—जो हिन्दी नहीं समझ सकते थे—दीवार टूटनेसे पूर्व ही आक्रमण कर बैठे। इससे किलेवालोंने सचेत हो कर ऊपर से फेंकते हुए छप्परोंके साथ साथ गोलाबारी भी इन लोगों पर की जिससे अमीरकी सेनाके कितने ही व्यक्ति मारे गये और कितने ही घायल हुए और बाकी बचे हुए भाग गये। अमीरने जब यह सुना तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ और बिना आज्ञा कार्यवाही करनेके अपराधमें काबुलियोंको दंड दिया। उसकी यह योजना असफल हो गई जिसको पुनः कार्यान्वित करना भी असंभव था क्योंकि यह योजना प्रकट हो चुकी थी।

इस आक्रमणके समयमें कुंवर भारतसिंह और बामाईने स्थितिको इस धीरता और चतुराईसे संभाला कि अमीर जैसा कठोर एवं पराक्रमी योद्धा भी विचलित हो गया। नवाबके बीबी-बच्चोंको ऐसे प्रेम एवं आदरसे रखा कि वे उसे जीवन पर्यन्त न भूल सके जिससे

उनमें आपसमें सगे भाई बहिनोंका-सा संबंध हो गया था। एक बार फिर नवाबने दीवार तोड़नेका यत्न किया तो उस समय नवाबके बीबी बच्चोंने अमीरसे कहलाया कि यदि आपने किलेकी दीवारें तोड़नेका फिर प्रयत्न किया तो हम उस स्थान पर पहुँच जायेंगे— हमारे मरने पर ही बाबा भारतसिंह व अन्य राजपूतों पर आँच आ सकती है। इस पर अमीरने किलेकी दीवार तोड़नेका विचार त्याग दिया। युद्ध चलते हुए कई मास व्यतीत हो गये थे उसकी सम्पूर्ण सेना युद्धस्थल पर एकत्रित हो चुकी थी जिसे वेतन नहीं मिला था। सेना व्यय कहीं जहाँसे प्राप्त होनेको था यह आशा नहीं था। इन परिस्थितियोंने अमीरखाँको अत्यन्त चिंतित कर दिया था। अतः मुहम्मद उमरखाँ उर्फ बाताराम और मुहम्मद अय्याज खाँने लाख रुपया कुँवर चतुरसिंहसे ला कर दिया जिसे अमीरखाँने अपनी सेनामें बाँट दिया। इसके पश्चात् किले पर फिर आक्रमणकी तैयारी की जिसका संचालन स्वयंने किया। उसने सब सेनानायकोंको सूचित कर दिया कि इस बार उसकी आज्ञाका पूर्णरूपसे पालन किया जावे और संकेत पाते ही तत्काल किले पर आक्रमण कर दिया जावे। किन्तु इस बार भी हवाके विपरीत होनेके कारण अमीरने जो संकेत तोप चला कर किया था वह दूसरी ओर न पहुँच सका और उसकी सेनाके पड़ावमें पहुँचा। इसलिए इस ओर वाली सेनाने यह समझ कर कि उनके अन्य साथियोंने (दूसरी ओरवालोंने) किलेको तोड़ दिया है— आक्रमण कर दिया किन्तु दूसरी ओरवालोंको इसका कुछ भी ज्ञान नहीं था इसलिए वे जहाँके तहाँ रहे। किलेवालोंके सजग हो जानेसे अमीरकी यह योजना भी सफल न हो सकी और उसे अत्यन्त हानि उठानी पड़ी। अंतमें उसने घेरेको और भी संकुचित करके किलेवालोंको भूख प्याससे विवश करना चाहा। समय अत्यधिक हो चला था। १२ मास होने पर आये थे। क्योंकि यह घेरा २१ नवम्बर सन् १८१६ ई.में आरम्भ हुआ था और सन् १८१७ ई.का नवम्बर मास आरंभ हो चुका था। अब घेराके संकुचित हो जानेके कारण किलेवाले भी विशेष चिन्तित हुए। किन्तु किलेवालोंके सौभाग्यसे उन्हीं दिनों अंग्रेजी सरकारने अपनी सेनायें चारों ओरसे एकत्रित कर उन स्थानोंकी ओर रवाना की जो अमीरखाँ द्वारा लूटे जा रहे थे। दूसरी ओर अंग्रेज सरकारने अमीरखाँके देहलीवाले प्रतिनिधि मुंशी निरंजनलालसे समझौतेकी बातचीत की जो इस समय चार्ल्स् टी मेटकाफ रेजीडेन्टके पास था। उससे (निरंजनलालसे) यह कहा गया कि यदि अमीर हमारी शर्तोंको स्वीकार कर लेगा तो उसे दक्षिणकी कुछ जमीन और दे दी जावेगी। इस प्रकार संधिकी बातचीत करके एक डौल (ड्राफ्ट) अमीरकी स्वीकृति हेतु भेजा गया। इस डौलमें अंग्रेजोंके लाभकी शर्तें अधिक थीं और अमीरकी आशाओंके अनुसार बहुत कम थीं। इसी समय आगरेसे जनरल डंकिन और देहलीसे जनरल आक्टलोनी अपनी अपनी सेनाओंके साथ जयपुरकी ओर बढ़ा। साथ ही अमीरखाँको जो कुछ सहायता मरहट्टे सरदारोंसे मिल सकती थी, उस पर पहिलेसे ही रोक लगा दी। इससे अमीर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया और अंतमें विवश हो कर और संधि करनेमें ही अपना हित समझ कर उस डौल पर प्रथम हस्ताक्षर कर दिये। और

मारर्थसिंहको रसवा मादि दे कर अपने श्वसुरके परिवारको छुड़ा कर भरा उम्र लिया * । इस प्रकार मारर्थसिंहका प्रण पूर्ण हुआ। माधोराज पुरे की लड़ाई के पश्चात् इस विजय की खुशीमें महाराज जगतसिंह ने माह सुद ७ वि सं १८६९ के दिन प्रीतम निवासमें दरबार किया और ज्यावाके मदनसिंह, चीपवाके चतुर्भुजोत महतापसिंह कायमसिंह नरूका कुंवर मारर्थसिंह नरूका रामबक्स गुमास्ता और बोहरा शीताराम को सिरोपाव दिये और इनकी प्रशंसा की। संधिके पश्चात् अमीर अपनी सेनाका अधिकांश भाग तोड़ कर अपनी अधिकृत भूमिके प्रमुख शहर टोंकको आ गया और उसने इसे ही अपनी राजधानी बना कर जनहितके कई कार्य किये। ६७ वर्षकी अवस्थामें जमादीउस्सानीकी ता २५ सन् १२५ हिजरीको तदनुसार सन् १८३४ ई में उसका स्वर्गवास हो गया। वह मोतीबागके किनारे तालाब और ममजिदके निकट दफना दिया गया।

अमीरखांकी मृत्युके बाद उसका बड़ा पुत्र वजीरुद्दौला २८ वर्षकी अवस्थामें हिजरी सन् १२५ के जम्मादीउस्सानीकी २७वीं तारीखको सिंहासनासीन हुआ। इसको अंग्रेजी सरकारकी ओरसे खिल्लत दी गई। हिजरी सन् १२५१ तदनुसार १८७५ ई में अलीगढ़ के भाड़ोली गांवकी सीमाको ले कर उणियारे वालोंसे युद्ध हुआ। अंतमें करनल थाम सदरलेण्ड रेजिडेण्ट राजस्थानने उणियारे और अलीगढ़की सीमाका फैसला किया। इसके अनन्तर सन् १२६७ हि में फिर उणियारे वालोंने टोंकके एक ग्राम पर अधिकार कर लिया। नवाबने ४ तोपों के साथ लश्कर अब्दुलरहमानको भेजा। युद्धके पश्चात् करनल भालकिन साहब रेजिडेंटने सीमाका फैसला कर दिया। दूसरे वर्ष सन १२६८ हिजरीमें (१८५२ ई में) नवाब वजीरुद्दौलाने लावा पर आक्रमण किया। इस आक्रमणमें नवाबके साथ प्रमुख व्यक्ति ये थे– अहमदअलीखां मुहम्मदबक्स बलूचखां मुनीरखां अकरमखां (भाई) फैजमुहम्मदखां मुहम्मदअलीखां अब्दुल्लाखां (बेटे) अहमदयारखां किफायतउल्लाखां अहमदअलीखां कप्तान साहबजादमुखां नूरखांईखां मुहम्मद फैजउल्लाखां अमीरउद्दीन हिम्मतखां कलंदरबक्स सैयद अब्दुलअजीज खान फजलउल्ला मुहम्मद हुसेन सैयद अलीहुसेन अब्दुलरहमान रिसालदार, मुहि वुद्दीन रिसालदार, सैयद जफर अली रिसालदार और मिर्जाखां। लावा की ओरसे प्रमुख व्यक्ति हनुमन्तसिंह सरजनसिंह (कर्णसिंहके भाई) रामसिंह श्यामसिंह (हनुमन्तसिंहके भाई) रैवतसिंह, हरनाथसिंह, ठाकुर बराला प्रतापसिंहके छोटे भाई गोरधनसिंह स्योराके हनुमन्तसिंह बख्तावरसिंह, रणजीतसिंह और भुवानसिंह इस युद्धमें सम्मिलित हुए। नवाबकी ओरसे पहिले पहिल मिर्जाखां मारा गया तथा अन्य प्रमुख व्यक्ति जो वीरगतिको प्राप्त हुए उनके नाम ये हैं–मिर्जाखां रिसालदार, रुस्तमखां जमादार, बोहरखां जहांगीरखां जमादार और सैयद रौशनअली मेजर। और लावाकी ओरसे नहरके रैवतसिंह नरूका और नवाला ग्रामाई आंवाके किशोरदासका पुत्र गिरिदान सोढेका हनुमन्तसिंह उणियाराके संग्रामसिंह ठाकुर गोविन्द

* इस स्थान पर 'अमीर नामा'में लिखा है कि अमीरखांने मारर्थसिंहसे बातचीत तय, कर उसने श्वसुरके परिवारको छुड़ा कर और कैद कर, मोतीबाग़ और भगवत किया।

सिंहका सेवक लछमनसिंह बरोगा खवास भाभाई, मुक्ता बरोगा लालसिंह किलेदार आदि कितने ही प्रमुख वीर वीरगतिको प्राप्त हुए।× इस युद्धके पश्चात् अमीरखाँका ५९ वर्षकी अवस्थामें सन् १२८१ हिजरी तदनुसार १८६५ ई में स्वर्गवास हुआ।

यह पहिले लिखा जा चुका है कि ये युद्ध अमीरखाँ और कछवाहोंकी नरूका शाखाके राजपूतोंके मध्य हुए थे। अमीरखाँ और उसके कार्य-कलापोंका वर्णन ऊपर लिखा जा चुका है। अब नरूकाओंकी उत्पत्ति प्रसार तथा उनके क्रियाओं आदिके विषयमें आवश्यक बातें दी जाती हैं।

संवत १४२१ वि में आमेरके सिंहासन पर उदयकर्णका उदय हुआ। इसके ज्येष्ठ पुत्र बरसिंह थे जिनके विवाहके लिए मंडेलाके निर्वाण (चौहान) वंशी राजा राव मोकलदेवने (अपनी पुत्रीके विवाहार्थ) टीका भेजा। इस अवसर पर वृद्ध राजा उदयकर्णने हास्यमें कहा कि यदि हमारी अवस्था भी कुंवर साहबकी-सी होती तो आज हमारे लिये भी ब्याहका टीका आता। यह सुन तत्काल कुंवर बरसिंह उठ गये और उस कन्याको हृदयमें माता अनुमान कर पितासे विवाह करनेका आग्रह करने लगे और मंडेलाके अतिथियोंसे कहा कि मांग हमारी हो चुकी है अतएव अन्य स्थान पर ब्याह करोगे तो भयंकर युद्धका सामना करना पड़ेगा। जब मोकलदेवको यह ज्ञात हुआ तो उसने बरसिंहसे प्रतिज्ञापत्र लिखवा लिया मैं राज्याधिकार प्राप्त नहीं करूंगा और माताके पुत्रको ही स्वामी मानूंगा।" अंततोगत्वा राजा उदयकर्णको वृद्धावस्थामें तीसरा विवाह करना पड़ा। इस कन्यासे उसके दो पुत्र हुए। ज्येष्ठका नाम नरसिंह और कनिष्ठका बालोजी था।

सं १४८५ वि में राजा उदयकर्णका स्वर्गवास हो जाने पर बरसिंहने अपनी प्रतिज्ञानुसार अपने भाई नृसिंहको सिंहासनारूढ़ कराया। आमेरमें बालक राजा जान कर नकावर शाखा राजपूतने आमेर हड़पनेके लिए एक बड़ी सेना ले कर नारायणके निकट सरलके नालेके पास पड़ाव डाला। जब यह सूचना बरसिंहको मिली तो वह भी शत्रुको बीच हीमें रोकनेके लिए बड़ी सजधजके साथ निवाईमें आकर ठहरा। बरसिंहका ऐसा उत्साह देख शाखा नकावरने कुटिल नीतिका अनुसरण करते हुए उसे (बरसिंहको) कहलाया कि "व्यर्थहीमें क्षत्रिय परस्पर लड़ कर मारे जावेंगे अतएव आप निःसंकोच अकेले पधारें, मैं भी इसी प्रकार उपस्थित होऊंगा। संधि करली जावेगी। सीधे सीधे बरसिंह शाखाकी कुटिलताको न समझ कर, उसकी सूचनानुसार केवल एक सईसको साथ ले कर, सरलके नाले पर पहुँचे

× अमीरखाँकी मृत्युके पश्चात् इस विस्तार-पूर्वक नहीं मिलता है। जो कुछ ज्ञात होता है वह "तवारीखे अमूरमार में" है। नवाब अमीरखाँका इस इसी पुस्तकके आधारपर लिखा गया है। इसमें न तो अवार्ड युद्धका कारण लिखा है न परिणाम ही। वर्णित लिखनेसे जो इस ज्ञात हुआ है, उससे बरसिंहके इसकी पुष्टि होती है। पर यथास्थान आगे दिया जावेगा।

वहाँ लाला कछवाहा एकाकी आसन पर बैठा हुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। बातें करते करते विश्वास उत्पन्न कर और वरसिंहको असावधान देख झपट कर उसकी छाती पर चढ़ बैठा और दोनों हाथ पकड़ कर वरसिंहको निरुपाय कर दिया। अब तो वरसिंह बहुत ही घबराया और लालाकी चालाकी भी उसकी समझमें आ गई। किन्तु विवशतासे कुछ कर नहीं सका फिर भी साहस कर छुटकारेका प्रयत्न करने लगा। अंतमें नीचे चित्त पड़े हुए वरसिंहकी दृष्टि उस नग्न कटार पर पड़ी जिसको लालाने अपनी पटकीमें छिपा रखा था। वरसिंहने नीचे पड़े पड़े ही एक पैरके अंगूठेसे उसको ऐसी चीमटासे खींचकर, दूसरे पांवसे पूरी शक्तिके साथ ठोकर मारी कि जिससे वह कटार कछवाहका पेट फाड़ कर पीठके बाहर निकल आई और तत्काल ही कछवाहका प्राणान्त हो गया। इसी अवसरका किसी कविका यह दोहा प्रसिद्ध है।

पगसे खींची पारची पगसे खींची पार।
लाला कछवाहर मारियो करम काढ़ि कटार॥

लालाके मारे जाने पर उसकी सेना स्वतः ही भाग खड़ी हुई। लालाकी सेनाके भाग जाने पर वरसिंह आमेर आए। सब लोगोंकी सम्मतिसे आमेर राज्यके तीन भाग किये गये। उस समय आमेरकी आय केवल २७ लाख वार्षिक की ही थी। इस कारण नौ लाखमें मैराजाकी ८४ गांवोंकी जागीर वरसिंहको और नौ लाखमें अमरसरकी जागीर बालोजीको दी गई। शेष आमेरके स्वामी नृसिंह रहे।

मैराजाके स्वामी वरसिंहके पुत्र मेहराज हुए। इन्हींके पुत्र नरसिंह बहुत प्रसिद्ध हुए, जिनकी संतान नरूका कहलाई। नरसिंहके दो पुत्र थे। राव दासा और राव लाला। राव दासाके सात पुत्र थे। चन्दनदास जयमल रत्नसिंह, पूर्णमल रायमल, कपूरचंद और करमचंद। राव दासाके इन सातों पुत्रोंका परिवार बहुत बढ़ा। ये लोग जहाँ जहाँ बसे वहीं सब 'नरूकों'के नामसे प्रसिद्ध हो गया। उस समय इनका मुख्य स्थान मौजमाबाद था। जयपुर राज्यमें इनके १६ ठिकाने प्रसिद्ध हैं, जिनमें ४ ताजीमी हैं। चन्दनदासकी संतानोंने 'उणियारा' और लावा प्राप्त किया और करमचंदकी संतानोंको उणियारा स्थापनका अवसर प्राप्त हुआ। राव लालाकी संतानोंने अलवर राज्यकी नींव डाली। नरसिंहका पौत्र और दासाका पुत्र करमचंद बड़ा बलिष्ठ दीर्घकाय एवं प्रभावशाली था। इसके पास धनसम्पत्ति भी बहुत थी। उसके पास अच्छे अच्छे चुने हुए अनेक सुभट थे जिनको वह १२ प्रकारसे प्रसन्न रखता था। उसके विरुद्ध आवाज उठानेका आमेर राज्यमें किसीमें भी साहस नहीं था। आमेरके राजा चन्द्रसेनने जिसका समय सं १५२४ से १५५९ तक था मांडूके बादशाह नासिरुद्दीनको जो आमेर पर चढ़ाई कर आया था भांडारेजके समीप करमचंदकी सहायतासे युद्धमें परास्त किया। करमचंदने आमेरके राजा रत्नसिंहके समयमें (सं १५९ से १६ ४) आमेर राज्यके ४ गांव

दबा लिये थे। यह रत्नसिंह अत्यन्त शराबी और व्यभिचारी प्रसिद्ध था। इसके राज्यका प्रबंध नीच प्रकृतिके लोगोंके हाथमें था। इस कारण शेखावतों और नरूकोंको अपनी अपनी सीमा बढ़ानेका अवसर प्राप्त हो गया था। राज्यके कुप्रबंधके कारण अन्य भाई बेटे सब ही अप्रसन्न थे। राजा रत्नसिंहने अपने चचेरे भाई तेजसिंह रायमलोतको अपना दीवान नियुक्त किया था। इससे अप्रसन्न हो कर उसका चाचा सांगा आमेरके राजा पृथ्वीराजका पुत्र अपनी ननिहाल बीकानेर चला गया था। उसके चले जानेके पश्चात् छोटे दर्जेके नौकरोंको जो राजाके बड़े कृपापात्र और मुँहलगे थे अपनी मनमानी करनेका अच्छा अवसर प्राप्त हो गया था जिसका परिणाम आमेरकी राज्य-क्षीणताका द्योतक हुआ। सांगा पृथ्वीराजोतको अपनी ननिहालमें आमेर राज्यके कुप्रबंध और क्षीणताके समाचार बराबर मिलते रहते थे। अंतमें उसने इन समाचारोंसे क्षुब्ध हो कर बीकानेरके राजा राव जैतसी लूणकरणोतसे जो उसके मामा थे सहायताकी प्रार्थना की। राव जैतसीने १५ हजार सेना सांगाको दी जिसमें बेगावासका वजीर बाघावत महाजनका लूणकरणोत रत्नसिंह, राजासरका *कौवसोत कृष्णसिंह, डोमपुरका संसारचंदोत खेतसिंह सारूंडाका मण्डलावत महेसदास भेलूका* सहावत भोजराज बणीसरका बीकावत देवीदास पूंगलका भाटी राव बैरीसिंह, चिरजोलाका जगराज शेखावत जाखाका बाघावत भाटी कृष्णसिंह मिलकका जोइया हीसा सिंहागाका महता अमरा बछावत मूहता सांगा पुरोहित लक्ष्मीदास और मापा सांखलाका भाई लाल सांखला प्रधान थे। इस सेनाको ले कर सांगा अमरसर पहुँचा। यहाँ रायमल शेखावतने उसकी अगवानी कर घोड़े भेंट किये सांगाने ये घोड़े वापिस कर दिये। सांगाका इस प्रकारका व्यवहार देख कर रायमलने राजा रत्नसिंहके दीवान तेजसी रायमलोतको सूचित किया कि ढंग देखनेसे ज्ञात होता है कि सांगा आमेरका राजा हो जावेगा। अतः इसके साथ जमीनसे संधि कर लेनी उचित होगी। इस पर तेजसी आमेरकी सेना ले कर रास्तेमें ही सांगासे मिला। मिलते समय ही सांगाने उपालंभ देते हुए तेजसीसे कहा "शाबास तेजसी तुमने निकटके हो कर आमेर को खूब आबाद किया।" तेजसीने उत्तर दिया कि "राजा तो शराब और व्यभिचारका दास बना हुआ है ऐसी स्थितिमें वह तो प्रबंधकी ओर तनिक भी ध्यान देता नहीं है। यदि आप राजा हो जावें तो सब कार्य सरल हो जावें। नरूकों द्वारा दबाई हुई भूमि सहज ही वापिस हस्तगत की जा सकती है। इस पर सांगाने उत्तर दिया कि नरूका करमचंदके रहते हुए हमारा अधिकार नहीं हो सकता है। अंतमें तेजसीने सांगाको मुअज्जमाबादकी ओर प्रयाण करनेके लिए कहा। ये सब लोग वहाँ आये। तेजसीने करमचंद नरूकाके कनिष्ठ भाई जयमलको जो उसके पास रहता था बुला कर कहा कि "तू जा कर करमचंदको बुला ला। वह भी यहाँ आ कर सांगासे अपनी सफाई कर ले। क्यों कि आगे-पीछे राज्यका मालिक सांगा ही होता दिखाई देता है।" जयमलने इसका उत्तर यह दिया कि "आज दस वर्षसे करमचंद राज्यके इलाके दबा कर भोग रहा है, तब तो किसीने कुछ नहीं कहा है। अब यदि उससे कुछ कहा जायगा तो वह जवाब तो कुछ देगा नहीं और व्यर्थमें रक्तपात

हो जावेगा।" इस पर तेजसीने उसे समझाया कि 'मुझसे भी कोप इसी तरह कहा करते थे किन्तु जब मैं सांगासे मिला तो मेरे सब अपराध क्षमा कर दिये।' करमचंदको बुलाने जयमलके चले जानेके बाद तेजसीने सांगासे कहा कि "आपकी इस सेनामें मुझे तो भीम समान बलिष्ठ एवं दीर्घकाय करमचंदके ऊपर कोई सद्य प्रहार करने वाला दिखाई नहीं पड़ता है।" सांगाने इस कार्यके लिए लाख सांखलेको चुना। तेजसीने इसे ठिंगना बता कर विरोध प्रकट किया। फिर भी सांगाने उसे वीर समझ कर इस कार्यके लिये नियत कर दिया। तब तेजसीने सांखलेको कहा कि "जब मैं गांवोंका नाम लूं तब तू तत्क्षण प्रहार करना। यदि तेरा प्रहार चूक गया तो समझ लेना यहां जितने व्यक्ति बैठे हुए हैं उनमेंसे एक भी जीवित नहीं बच सकेगा। इतने हीमें करमचंदको साथ ले कर जयमल आ पहुँचा। करमचंदने सांगाके चरण स्पर्श कर प्रणाम किया। करमचंदके बैठ जाने पर तेजसीने उससे कहा कि 'आपने राज्यको बहुत हानि पहुँचाई है। यह राज्यके स्वामी आपसे दबाये हुए गांवों का हिसाब पूछते हैं।" लाख सांखलाने जो पासमें ही खड़ा हुआ था "गांवों" शब्दको सुनते ही करमचंद पर इस वेग और शक्तिसे खड्ग प्रहार किया कि वह वहीं ढेर हो गया। यह देख करमचंदके लघु भ्राता जयमलने जो पास ही खड़ा था कटार निकाल कर तेजसीका अंत कर दिया और फिर सीधा सांगाकी ओर झपटा। यह देख राजा पृथ्वीराजका पुत्र भारमल जो सांगाका छोटा भाई था बीचमें आ गया। इस पर जयमलने यह कह कर कटार उसकी एक कांखमें दे मारी—जिसका चिन्ह आज तक भी विद्यमान है,—कि तुम छोकरेको क्या मारूं? उसे पकड़ा है जयमलने लाख सांखला पर और काल् सांखलाने जयमल पर, एक साथ ही तलवारके प्रहार किये जिससे दोनों ही समाप्त हो गये। सांगाने इतने थोड़ेसे रक्तपातसे ही दोनों प्रभुओंका नाश देख और अपना टीकाई रत्नसिंहको सबल आमेर पर अधिकार न कर, मोजमाबादसे आमेर तकके सब प्रदेश पर अपना अधिकार कर अपने नामसे * सांगानेर बसा कर वहीं शासन करने लगा। सांगाके इस कार्यका सभी भाई-बेटों और जागीरदारोंने स्वागत किया। इस प्रकार सांगाने अधिकार कर रत्नसिंह सूणकरणोतको अपने पास रख कर, अपने मामा राव जैतसीकी सम्पूर्ण सेना बीकानेर वापिस भेज दी। इधर करमचंदकी अकस्मात मौतसे किसीका भी साहस उसका बैर लेनेका नहीं हुआ किन्तु एक चारण कान्हा आढ़ाने जो करमचंदका विशेष स्नेही एवं स्वामिभक्त था सांगाको मारकर उसका प्रतिशोध लिया। किन्तु वह भी उसी दिन लोगोंके हाथों पत्थरसे मारा गया। *

---

* सांगानेर जयपुरसे दक्षिणकी ओर ८ मील और आमेरसे ११ मील दूरी पर एक ऐतिहासिक प्राचीन बस्ती है। यहांके बने हुए छापे हुए, छींट और रंगाई छपाई अत्यन्त प्रसिद्ध है। यहांका एक जैन मंदिर प्राचीन कलाकी दृष्टिसे अत्यन्त महत्त्व है। 'सांगासनाथ' का प्रसिद्ध मंदिर भी यहीं है।

* राजस्थानके वीर चारणा कान्हाके इस कृत्यसे चारणोंके चरित्रोंके गीतोंमें इनकी प्रशंसा पाई जाती है। आज भी कान्हा आढ़ाका अमर [कवित्त] ऐसे सम्मानसे पढ़ कर गर्व कर इस दिया जाता है—

मारयो सांगो मतिपति, वैर करमचंद मेल। कमधांरा रण आगले, कान्हा कथा कहेल ॥ १ ॥
वेर करमचंद वालियो सांगो मार संसार, अमल पिलंता आगले ऐम कान्हा रिझवार ॥ २ ॥

कर्मचंदके पश्चात् उसके पौत्र बैरसीका पुत्र चंद्रभाण बड़ा पराक्रमी एवं प्रभावशाली हुआ। उसने मुगल-सम्राट शाहजहाँकी ओरसे सं १६५२ में बलख बदखशां और कंधारमें अपनी वीरता और पराक्रमका अच्छा परिचय दिया। इससे प्रसन्न हो कर सम्राटने चार हजारीका मंसब खिताब और माहीमुरातब* दे कर चंद्रभाणको सम्मानित किया। चंद्रभाणके पुत्र फतेहसिंहने शाहजहाँका पक्ष ले कर दाराके साथ युद्धमें अद्भुत वीरता दिखाई। महाराजा सवाई जयसिंहकी सहायतार्थ इस वंशके संग्रामसिंहने सांभरके युद्धमें हुसेनअली और अब्दुल्ला सैयद बंधुओंके विरुद्ध युद्ध कर पराक्रमको विजयश्रीमें परिणित किया था। सं १७८५ वि में महाराजा सवाई जयसिंहके साथ मांडूके युद्धमें अजीतसिंहने अपना अद्भुत युद्ध कौशल प्रदर्शित किया जिसके उपलक्षमें महाराजाने वंशपरंपराके लिए "राव"की उपाधि दे सम्मानित किया था। इसी वंशमें महाराजा सवाई प्रतापसिंहके समयमें बिशनसिंह हुआ जिसने महाराजकी ओरसे सिंधियाके विरुद्ध तुंगाके युद्धमें अपूर्व पराक्रम दिखाया जिसके उपलक्षमें महाराजाने सं १८४१ इ. वि में उणियाराका स्वतंत्र शासन तंत्र चलानेके अधिकारके साथ साथ "राजा"की वंशगत उपाधि और ५ तोपोंकी सलामीका सम्मान दिया। तबसे इस वंशके प्रधान "रावराजा" कहलाने लगे और राजस्थानके एकीकरण तक दीवानी और फौजदारी अधिकारयुक्त शासक रहे। आजकल इस वंशमें रावराजा सरदारसिंह हैं जो अपनी उदारता एवं लोकप्रियताके लिए प्रसिद्ध हैं।

राव राजाके एक पुत्र चंदनदास थे जिसकी संतानको "लदाना" प्राप्त हुआ। इस वंशमें भी उत्तमोत्तम वीर हुए जिन्होंने यथासमय आमेर और जयपुर राज्यकी अच्छी सेवा की थी। विशेषकर भवानसिंहका पुत्र भरतसिंह बहुत विख्यात हुआ है जिसने अमीरखां जैसे दुर्दमनीय शत्रुको अपने साहस पराक्रम एवं कौशलसे युद्ध मोल ले कर नीचा दिखाया। इसी वंशके ठाकुर माहरसिंहने लावा प्राप्त किया। उस समय लावा एक छोटासा ग्राम मात्र था और जयपुर राज्यके अधीन टोंक तहसीलके अंतर्गत था। जब टोंक अमीरखांको दे दिया गया तब लावा टोंकके नीचे आ गया। तबसे ही लावा इस पठानकी आंखका शूल हो गया। इन्होंने लावाको छीन लेनेके प्रयत्न किये किन्तु लावाके राजपूतोंकि संगठन एवं वीरतासे असफल रहे। ठाकुर माहरसिंहकी तीसरी पीढ़ीमें ठा देवीसिंह और

---

* ईरानके बादशाह नौशीरवांका पौत्र खुसरो राज्यच्युत हो कर निकल गया था। वह मछलीको शीरीको चाहता था। फिर दैविक शक्ति पा जाने पर उसे फिर राज्यलाभ हो गया। जिस दिन राज्यलाभ हुआ उस दिन ज्योतिषके हिसाबसे चंद्रमा मीन राशीमें था। मीनका स्वरूप मछली जैसा माना गया है। इसी स्थितिको अच्छा शकुन समझ कर खुसरोने मछली और चांदसे मिले हुए निशानको "माहीमुरातब" नामसे प्रसिद्ध किया। मुगलोंने ऐसे निशानके चांदी सोनेके भाले बनवा कर उन सरदारोंको दिये जिनका दरजा सबसे ऊंचा मनसबदार था। खुसरोके पीछे देहलीके मुगल बादशाहोंने भी इसका अनुकरण किया।

यह पृष्ठ श्री शिवनारायणजी सक्सेना बी. ए. भूतपूर्व ... जयपुर राज्य द्वारा प्राप्त हुआ है। सक्सेनाजी कुछ दिन लावामें भी काम कर चुके हैं।

विजयसिंह हुए। ठिकानेका स्वामी देवीसिंह हुआ। एक समय शिवजीके मंदिरमें ठा विजयसिंह ध्यान कर रहा था। टोंकसे दो सरकारी मुसलमान कर्मचारी आ कर जूते पहने मंदिर के चबूतरे पर चढ गये मना करने पर भी नहीं माने और जानेको वहीं बैठ गये। तब ठा विजयसिंहने अपनी तलवारसे एक मियाँका काम समाप्त कर दिया और दूसरा भाग कर टोंक पहुँचा जिसने इस कांडकी सूचना नवाबको दी। नवाबने अपने चुने हुए सिपाहियोंकी एक टुकडी सेना लावा पर आक्रमण करनेको भेजी किन्तु वह सेना लावाका मार्ग भूल कर लावासे ४ मील उत्तरकी ओर टोंक होके एक बगड़ी नामक गांवमें पहुँच गई, वहां छोटासा लावा जैसाही एक किला था उसको तोपोंसे ढाह दिया। दूसरे दिन प्रात होने पर बहुत पश्चाताप किया गया। कुछ समय पश्चात् लडाई बन्द हुई। विक्रम सं १९२१ तक ३ लडाइयाँ टोंक वालोंके साथ हुईं, परन्तु टोंक वालोंको हर समय मुँहकी खानी पड़ी। जब टोंकका नवाब लावाको विजय नहीं कर सका तो संधिके लिए नवाबने ठा देवीसिंहका एक पत्र लिख कर भेजा। लावासे कुछ व्यक्ति टोंक गये और लावा हाउस टोंकमें ठहरे। यह २१ व्यक्तियोंका एक समुदाय था जिसमें ठा देवीसिंह और विजयसिंहजी थे। नवाबसे मिलने ठा विजयसिंह गया जिसके साथ ११ व्यक्ति थे। ठा देवीसिंहको भी बातचीतके लिए बुलाया गया था किन्तु वह गया नहीं। भेंट करनेके लिए जो महल चुना गया था उसके चारों ओर बारूद बिछा दी गई थी। जो जो व्यक्ति भेंटके लिए बुलाये गये थे उनमेंसे एक व्यक्ति नवाबको सूचना देनेके लिए इन लोगोंको उस महलमें छोड कर चला आया। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर भी नवाब भेंटके लिए नहीं आया तब वह दूसरा व्यक्ति भी कुछ बहाना कर जाने लगा तो ठा विजयसिंहने उसे जाने नहीं दिया क्योंकि उसे इस षड्यन्त्रका कुछ कुछ आभास हो गया था। अतः ठा विजयसिंहने उस व्यक्तिको तलवारसे वहीं समाप्त कर दिया। इतनेमें बारूदमें आग लगा दी गई। वह महल उड गया और १ व्यक्ति ठाकुरके समुदायके मारे गये एक मीणा बचा जिसने दौड कर लावा हाउसमें समाचार दिये। वहाँसे ठाकुर देवीसिंह रातोंरात पैदल भाग कर लावा आये। आते ही देवलीके पोलीटिकल एजेन्टको सब समाचार लिखे। पोलीटिकल एजेन्ट देवलीने जांच की और लावा वालोंका उसे कोई दोष दिखाई नहीं पड़ा। उसने नवाबको इस अपराधमें सजा दी और अमीरखांके पौत्रको नवाब बनाया। साथ ही सं १९२१ वि में लावा को टोंकसे अलग कर चीफशिप नियत की। तबसे लावा भारतके स्वतंत्र होनेसे पूर्व तक सीधा ब्रिटिश गवर्नमेन्टसे संबंधित रहा। देवीसिंहके पश्चात् लावाके स्वामी ठा धीरतसिंह इसके बाद रावबहादुर राजा मंगलसिंह इनके पश्चात् राजा रघुवीरसिंह और आजकल वंशप्रदीपसिंह हैं।

ऊपर लिखा जा चुका है कि नरसिंहके दूसरे पुत्र राव लाला थे। राव लालाके ऊदा (उदयसिंह) ऊदाके लाडसिंह लाडसिंहके फतहसिंह फतहसिंहके कल्याणसिंह और कल्याण सिंहके तीन पुत्र हुए रणसिंह आनंदसिंह और अजबसिंह। कल्याणसिंह जिन्हें राजा नवलसिंह

(आमेर)के पुत्र कीर्तिसिंहके पास रहते थे। सम्राट औरंगजेबके समयमें कुँवर कीर्तिसिंहके साथ कई युद्धोंमें कल्याणसिंहने अपने पराक्रमका अच्छा परिचय दिया जिससे प्रसन्न हो कर सम्राट औरंगजेबने इनको राजा का पद और कुछ गाँव जागीरमें दिये। कुँवर कीर्तिसिंहके परलोकगमनके पश्चात् निःसहाय और दुर्दशाग्रस्त हो कर आमेर आये। यहाँ इनको राव की उपाधिके साथ माचेड़ी नामक ग्राम जागीरमें मिला इसके साथ ही डेढ़ ग्राम और मिला। इस प्रकार कुछ ढाई ग्रामकी जागीर मिली। कल्याणसिंहके पश्चात् इसका उत्तराधिकारी आनंदसिंह हुआ। आनंदसिंहका ठैर्यसिंह ठेमसिंहका मुहम्मदसिंह, और मुहम्मदसिंहका उत्तराधिकारी प्रतापसिंह हुआ। यह प्रतापसिंह बड़ा पराक्रमी कुशल साहसी एवं महत्वाकांक्षी था। इसने ही अलवर राज्य स्थापित किया। इसका वृत्त इस प्रकार है कि जयपुरके तत्कालीन महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथमसे इनकी किसी बातमें अनबन हो गई। यह अपनी ढाई ग्रामकी जागीर माचेड़ी छोड़ कर भरतपुरमें जवाहरसिंह जाटके पास चले गये। वहाँ कुछ समय रह पाये थे कि जयपुरकी सीमामें बिना पहिले सूचना दिये चले आनेके कारण जवाहरसिंह जाट और सवाई माधवसिंह प्रथममें मांवडके मैदानमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें प्रतापसिंहने अपनी सेना सहित जयपुरका साथ दे कर बड़ा पराक्रम प्रदर्शित किया जिससे महाराजने प्रसन्न हो कर माचेड़ीकी जागीर वापिस दे दी। महाराज सवाई प्रतापसिंहसे फिर इनका मनमुटाव होगया। इस कारण महाराजने फिर माचेड़ीसे निकाल दिया। अब यह सीधा देहलीके बादशाह शाहआलम द्वितीयकी शरणमें गया। शाहआलमने इसका अच्छा आदर सत्कार किया। उसने सं १८२७ वि में महाराव राजाकी पदवी पंच हजारी मनसब और माहीमरातबके साथ माचेड़ीकी सनद कर दी। जिससे जयपुरसे स्वतंत्र होनेका अवसर प्राप्त हो गया। फिर इसने समय पा कर जयपुर और भरतपुरके परगने दबा लिए और सं १८३२ वि में भरतपुरसे युद्ध कर अलवरका प्रसिद्ध और परगना भी छीन लिया इसके पश्चात् अपनी राजधानी माचेड़ीसे अलवरमें बनाली। यह सं १८४० वि में निःसंतान मरे, अतः थाना ठाकुरके पुत्र बख्तावरसिंह गोद आकर उत्तराधिकारी हुए। राज्याधीन होनेके पश्चात् बख्तावरसिंह तत्कालीन जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंहके पास जयपुर आए और जयपुर राज्यके दबाए हुए ग्रामोंको महाराजको भेंट कर दिया जिससे महाराज बहुत प्रसन्न हुए। स १८६ में अंग्रेजोंको युद्धमें सहायता देनेके उपलक्षमें अंग्रेजोंसे कई परगने राजा बख्तावरसिंहको प्राप्त हुए और इनके समयमें अंग्रेजोंसे सन् १८ ३ ई में संधि हुई थी जिसमें वार्षिक करका बन्धन नहीं रखा गया। इनके पश्चात् सं १८९१ वि में इनके पुत्र विनयसिंह सिंहासनासीन हुए, जिन्होंने सिपॉय नामा युद्धमें सहायता भेजी और सन् ५७ के गदरमें अंग्रेजोंकी अच्छी सहायता की। इनके स्वर्गवासी होने पर इनके पुत्र शिवदानसिंह स १९१४ वि में सिंहासनारूढ़ हुए। इनके पश्चात् स १९३१ वि में मंगलसिंह राजा हुए। मंगलसिंहके पश्चात् स १९५९ में प्रसिद्ध जयसिंह गद्दी पर बैठे। ये बड़े विद्वान् प्रभावशाली एवं राजनीतिज्ञ थे। सन् १९३३ ई की गोलमेज परिषदमें इन्होंने निर्भीकता पूर्वक अपने विचार रक्खे जिसके कारण अंग्रेज सरकार इनसे नाराज हो गई और यह अलवर

छोड़ कर यूरोप चले गये जहाँ पेरिसमें इनका देहान्त हो गया। इनकी मृत्यु पर अंग्रेज सरकारने महाराज तेजसिंहको इनका उत्तराधिकारी नियत किया जो वर्तमान हैं।

इस पुस्तक 'कामारखा' से संबंधित नरूकावंशीयोंका परिचय उक्त पंक्तियोंमें दिया गया है। जयपुर और अलवर प्रान्तमें कई नरूके कई ठिकानेदार और भोमियाँ हैं। ये स्वभावसे ही राजपूत वीरतानुकूल शूरवीर, बलप्रतिष्ठ पराक्रमी एवं उदार हुए हैं। इनकी कीर्तिपताका आज भी इनके कार्यकलापोंके कारण फहरा रही है। यहाँ तक कि नरूकोंका बच्चा बच्चा भी "पचरका बादशाह" और "तीसरे तख्तका स्वामी" कहलाता है। यह प्रसिद्धि क्यों हुई इसकी अभी खोज ठीक ठीक नहीं हो पाई है। कोई इन्हें "पारखके" कोई "पाथरके" और कोई "पचरके बादशाह" कहते हैं। मुझे चारणों आदि कई व्यक्तियोंसे जानकारी हुई है वह इस प्रकार है। कितने ही कहते हैं कि बरसिंहने कलावर साकाको उसकी ही कटारीसे मारा था अतः वे "पारखके बादशाह" कहे जाते हैं। "पारख" का अर्थ डिंगलमें तलवार है पारखी छुरी कटारीको कहते हैं। निहत्थे और विजय बरसिंहने अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि और कटारी चलानेकी कुशलतासे यह प्रसिद्धि प्राप्त की हो तो निःसंदेह पारखके बादशाह कहलाने योग्य उनका यह कार्य था। कुछ यह कहते हैं कि बरसिंहने निर्वाण चौहान बीसलदेवकी पुत्रीसे—जिसका संबंध बरसिंहके साथ करनेके लिए टीका आया था और पिता राजा उदयकर्णसिंहके यह कहने पर कि यदि हम भी जवान होते तो टीका हमारे लिए भी आता उस कन्याको मन ही मन माता मान कर पितासे विवाह करा कर उस कन्याकी संतानोंके लिए राजसिंहासनका परित्याग कर अपनी पत-मर्यादाका पालन किया। इसलिए यह पचरका बादशाह कहलाने लगा। तीसरे तख्तके स्वामीके लिए यह कहा जाता है कि निर्वाण चौहान बीसल देवकी पुत्रीसे राजा उदयकर्णसिंहके दो पुत्र थे। बड़े नृसिंह और छोटे बालोजी। नृसिंह आमेरके स्वामी हुए। ये बच्चे ही थे। कलावर साकाके मारे जानेके पश्चात् आमेरराज्यके भाई बेटोंने (बरसिंहके अतिरिक्त) आमेर राज्यके तीन बराबर विभाग कर तीनों भाइयोंमें बटवा दिये। आमेरके स्वामी नृसिंह रहे बालोजी अमरसरके और तीसरे विभागके स्वामी बरसिंह हुए। तबसे तीसरे तख्तके स्वामित्वका संबंध इनके और इनकी संतानोंके साथ किया जाता है। कुछ लोग यह कहते हैं कि किसी मुगल सम्राटने किसी नरूका सरदारसे प्रसन्न होकर "पचरके बादशाह और तीसरे तख्त" की उपाधि दी थी। एक सज्जनसे यह भी सुना कि सम्राट अकबर एक बार महाराणा प्रतापसे जंगलमें एक एकान्तमें पत्थर पर बैठे हुए बातचीत कर रहे थे उस समय कोई नरूका सरदार उधरसे आ निकले। वह बड़े निर्भीक वीर और तलवार चलानेमें अद्भुत कुशल थे। सम्राट अकबरने उनका यह कहकर स्वागत किया "आओ पारख के बादशाह बिराजो" नरूका सरदारने कहा कि आप दोनों सम्राट तो अपने अपने तख्त पर विराजमान हैं मेरे लिए स्थान कहाँ है। इस पर सम्राट अकबरने उसे एक पत्थरकी ओर इशारा करते हुए कहा कि आपके लिए भी यह तख्त है। इन बातोंको देखते हुए कुछ कहा नहीं जा सकता कि सत्य क्या है? यह विषय

लोगकी अपेक्षा रखता है। अस्तु, कुछ भी हो यह प्रसिद्धि तो इन नरूकोंके साथ है ही।

नरूका वंशीय राजपूत राजपूतोंमें प्रसिद्ध वीर, पराक्रमी एवं साहसी हैं। इनके सत्साहस व शौर्यपूर्ण कार्योंके कारण कई कहावतें इनकी प्रशंसामें प्रचलित हो गई हैं। उनमेंसे ये दो अत्यन्त उच्च कोटिकी हैं—

(१) नरूकेको नरूका मारै, और के मारै करतार।"

(२) "नरूको कटारी म्यान बांधे तलातका बगीसूं ठौड़ सांधे।"

वास्तवमें इन नरूकोंके यशका वर्णन कई कवियोंने कई प्रकारसे कर मां भारतीकी सेवा की है। प्रस्तुत ग्रंथ "लावारासा" में वर्णित प्रसंगोंके समय पिंडारी व पठान दस्युओंके आतंकसे राजस्थान बड़ी ही डांवाडोल स्थितिमें हो गया था। स्थान स्थान पर राजस्थानीय जनताके जानमालकी बहुत ही हानि हुई थी। इन दस्युओंका दमन करनेकी शक्ति उस समय किसी भी राजस्थानीय रियासतमें नहीं थी। ऐसे विकट अवसर पर इन नरूकाओंने स्थान स्थान पर केवल अपने बाहुबलसे इन क्रूर दस्युओंसे मुकाबला कर जो वीरत्व प्रदर्शित किया है वह प्रशंसनीय एवं गौरवयुक्त कैसे नहीं कहा जा सकता? उस वीरत्वने कवियोंकी वाणीको जनताकी ओरसे कृतज्ञता ज्ञापन करनेके लिए बाध्य कर दिया। परिणामस्वरूप नरूकोंकी प्रशंसामें स्फुट छंदों और प्रबंध ग्रंथोंका निर्माण हुआ। लावारासा (माधोराजपुराका घेरा) और द्वितीय लावा युद्ध विषयक वर्णन अन्य कवियोंके भी प्राप्त हुए हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय दे देना अप्रासंगिक न होगा।

संवत १८७४ वि में (लावा युद्धकी समाप्तिका वर्ष) महाकवि श्रीकृष्ण भट्टके प्रपौत्र महाकवि मंडनने २१५ छंदोंमें (दोहा सवैया कवित्त चौपैया भुजंगी अरिल्ल पादाकुलक और सारस) "भारतचरित्र"का निर्माण किया था। इसमें सर्वप्रथम चौपैया छंदमें जगदम्बाकी स्तुति की गई है। फिर रवि कुलके वंशक्रममें प्रसिद्ध प्रसिद्ध रघुवंशियोंके नाम देते हुए, इस कुलमें नरूसिंहका जन्मवर्णन देकर भारतसिंहके पूर्वजोंके नाम प्रशंसा सहित दिये गये हैं। कविके अनुसार उनका क्रम इस प्रकार है—नरूसिंह दासा करमचंद, सेंगमल कान्हासिंह केशवदास उग्रसिंह रघुनाथ जसवंतसिंह मुकुंदसिंह, केसरीसिंह सांवतसिंह मदनसिंह, और भारतसिंह। भारतसिंहकी प्रशंसाके पश्चात्, लावा युद्धमें जो भारतसिंहने पराक्रम दिखाया था उसका वर्णन किया गया है। इसके पश्चात् क्रमसे भारतसिंहका माधोराजपुराके किलेको महाराज व जगतसिंहकी महारानीसे जो महाराज मानसिंहकी पुत्री थी छीन कर अपने अधिकारमें करना, महाराज मानसिंहका अमीरखांको किला वापिस दिलानेके लिए लिखना, अमीरखांका भारतसिंहको किला वापिस दे देनेके लिए लिखना, भारतसिंहका अवसर पा कर अमीरखांके बीबी बच्चोंको पकड़ कर माधोराजपुरेके किलेमें ला कर

रचना अमीरखांकी चढ़ाई और किलेको घेरना मरके राजपूतोंका स्थान स्थान से आ कर इस युद्धमें सम्मिलित होने आदिका वर्णन दे कर कविने युद्धवर्णन और पलायन वर्णन प्रतापवर्णन सुयशवर्णन हयवर्णन गजवर्णन तरवार वर्णन बाणवर्णन विजयश्री वर्णन आशिर्वाद और ग्रंथ निर्माण वर्णन दे कर, ग्रंथ समाप्त किया है। पाठकोंके रसास्वादके लिए इस ग्रंथके कुछ उद्धरण देना अनुपयुक्त न होगा।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ भारत चरित्र लिख्यते। तहाँ प्रथम मंगलाचरण।

छंद चौपैया

जगदम्ब भवानी सब जग जानी रंगभरी सरसानी
नित सुखसों सानी रहत भवानी ब्रह्मज्ञानी रानी।
सबकी है कारन चीतत पार न बैरिन मारन बानी
सुख संपति सरसै सब गुन बरसै सेवकने मन मानी॥
मुंडनकी माला सोहत भाला सिव विसाला चढ़ी
सेवकके तारन रक्तस मारन तरक तेग लिहि कढ़ी।
हाथिनकी झाला बसन रसाला नैन महा मद मढ़ी
सेवकको सुंदर, करन पुरंदर, बैन अभय वर पढ़ी॥
नैननमें ज्वाला रहत उजाला तीन भवन प्रतिपाला
बालकको लाला प्रगट विसाला जगमगात ससि भाला।
सुंदर मुख सोहे मनहू मोहे हार मुकुत भरि माला
साजत के गहने कंचन रहने भगत इच्छकों आला॥
या बिन कोई, पहिले होई, महाकालकी प्यारी
जगतकी सोभा मनकी लोभा कोटिन ससि बलिहारी।
मोहनके परमत बात सु सरसत पिवत रुधिर रस भारी
वेदनमें गावे सब गुन भावे कोटिन रवि छवि वारी॥
ऐसी मह बानी चरित्र बखानी कवि मंडन मुख गाई
पारथ सम भारत को भरि आरथ चरित्र सुभग बनाई।
रसमय भरि बातें प्रीति सुनावे छंदवर छबि छाई
जब आफताब महताब प्रतापहि सुजस जगत सरसाई॥१॥
जग रजा महमद अकब्बर श्री महताब प्रतापहि गायो
सेर महा समसेर, मानुनहि आदि अमेरवसों सरसायो।
दीवनकी बिच मार, समाजन जैसे विमान लों पंथ बनायो

मारत तेग नचाइके जाजा सो मीर-खामीरलों मारि भजायो ।।५४।।

जासों सदा अंगरेज डर्‌यो करें, मीरखासों निज तेग सजाई
घेरा दियो चढ़ि आइके जाजाके मोम्रनकी करतार देखाई।
मंडन हुक्म कियो जितनी यहाँ मारनने तहाँ तेग नचाई
काटि पठाननके मन संमुखा मूँछकी मास मरे पहुराई ।।५५।।

कोइ न जिनके कसे न नख नैननसों तिनको मिले न मब पैन्हनकों तनियां।
सोवी सुख सेजमें सदा जब भूखी भई, फिरत हैं देखती दुकाननमें बनियां।
मंडन महीन्द्र राव भवन्त भारतने कीनी हैं जिवाम्नको दूर दूर कनियां।
दूसनसों छाय चर चाम चाम दुनियोंके पनियां भरत आपी सबै तुरकनियां ।।१५२।।

यह भारतको चरित में कीनो मति अनुसार। चूकचूक जो होय सो कीजौ सुकवि सुधार ।।२०७।।
राजकाज समरो लिख्यो सबै बुद्धकी रीति। पंच कीति 'मंडन' कही मरतसों कर प्रीति ।।२०८।।
कह्यो अनिकको नास यहाँ कह्यो तेगको दान। बस प्रतापके संग सब कह्यो रैमको मान ।।२०९।।
कहीं फौज सब गढ कहे भूमिया कहीं उदार। हाथी हय हाजर कहे, कह्यो नाच रंगचार ।।२१०।।
जसरतनृप सुत रामसिंह खोजनको रैमरथ। 'मंडन' कविने सब कह्यो लिखिके जब अनूप ।।२११।।
मोर्द रस मार्मे भरे, लखि है रसिक सुजान। मखसिखसों ईहि ग्रंथमें लिखि भारतके मान ।।२१२।।
सब विधिसों सगरे चरित कहे ग्रंथ बनि जाय। ताते यह संछपसों कीनो ग्रंथ बनाय ।।२१३।।

आशिर्वादवर्णन कवित्त

जामे को हमेस जैम जंगनके जीतिबेके हाथिनके सीसपे निसान चढ़िबो करो।
कंचनसों मोती मनि मानिककी संपतिसों मुलक भी मवास भढ़िबो करो।
"मंडन" मतीस ऐसे मानी मानि मोज जैसे बढ़ि गढ़ि जंगनके जंग पढ़िबो करो।
गंगा सम सुजस समेत राव भरतको रैम दिन प्रबल प्रताप बढ़िबो करो ।।२१४।।

संवत दस सत आठ सत चोहोत्तर सावन मास। सुदि तृतियाके दिन कियो पूरन चरित प्रकास।।२१५।।

इति श्रीमद्धिजकुल चूडामणि कविकलानिध्यपरनाम श्रीकृष्णमहात्मज कवि सरस्वतपन्थाभिधम हारिकनाथ सूनु कवि बजपाल तनय देवर्षि वर मंडन कवि विरचित भारत चरित सम्पूर्णम्।

दूसरे ग्रंथमें जाजाके विर्दिम युद्धका वर्णन जाजामरेम मंगलसिंहके समयमें अलवर रियासतके भूभुईके निवासी बालाबख्स कविने नख्कुल सुयश नामसे ११४ छमाल छंदमें किया है। इस छोटेसे ग्रंथमें कवि मगलसिंहका यशवर्णन करनेके हेतु जगदम्बाकी प्रार्थना करता है। तत्पश्चात् जाजाके बाहर तलावके किनारे शिव मंदिरका वर्णन करनसिंहकी पूजा एक ममक्ममानका मंदिरमें घूते पहिन जाने करणसिंहका उस पर कटारीसे आक्रमण करन मुसलमानका करनसिंहकी तलवारसे मारेजाने इस घटनाके समाचारका जाजा पहुँचने और वहाँसे कुछ मुसटोंके आने और मुसलमानोंको मार डालने एक बालकका बच कर टाक जा कर अर्जास्तोलाको पुकारने और उनके जाजा पर चढ़ाई करनेका सविस्तर वर्णन किया है। इसके बाद कविने ठोंकके हाथी घोड़ और सेनाका जाजाके वीरोंसे

इस युद्धमें सहायताके लिए जो आये उनके नाम गिनवाये और अकबरकी सहायताका और उसका युद्धवर्णन दे कर अंतमें अलफखांकी प्रशंसामें ग्रंथ समाप्त किया है।

अब अंतमें यह सूचित कर देना उत्तम होगा कि इस ग्रंथके पृ ९ के छन्द संख्या १४ में पृ ११ के छंद संख्या ४१ में और पृ २१ के छंद संख्या १५ में जो स्थान रिक्त दिखाये जा कर पदोंकी असमाप्ति दिखाई गई है वह ठीक नहीं है। वास्तवमें मेरे पास जो हस्तलिखित प्रति थी उसमें दोहा सोरठा और छप्पय छंदके अतिरिक्त पद्धरि, मोतीदाम भुजंगप्रयात आदि छंदोंके दो दो पदों पर ही छंद संख्या दी गई है। यह मुझे ठीक मालूम न होनेके कारण छन्दशास्त्रानुसार छंदके चार चार चरण ले कर मैंने पदों पर छंदकी संख्या दी। इस प्रकार करनेसे इन छंदोंमें कहीं कहीं एक चरण कम हो गया मैंने यह समझा कि प्रतिलिपिकारकी भूलसे यह चरण लिखनेसे रह गये हैं अतः भविष्यमें दूसरी प्रति मिलने पर ठीक कर सकने के लिए रिक्त स्थान दिखला कर पद कमीकी सूचना दी। किन्तु पुस्तक प्रेस में चले जाने और मुद्रित हो जाने पर श्रद्धेय मुनि श्री जिनविजयजी महाराजको क्यामरासाकी एक अन्य प्रति श्रीयुत ठा सौभाग्यसिंह जी भगतपुराके सौजन्यसे प्राप्त हुई, उसे देखने पर सब समझमें आ गया। कवित्त मोतीदाम पद्धरि, भुजंगी निसाणी आदि छंदोंके १०–१२–१४ जितने भी पद बनाये उनकी एक ही छंद संख्या दी है। अतः अन्य प्रतिके अभावमें यह जो भूल हो गई उसके लिए पाठक क्षमा करेंगे।

इस ग्रंथ 'क्यामरासा'में शब्दार्थ व टिप्पणियोंके देनेमें मुझे स्वर्गीय श्रद्धेय हिदायतखांजी सेवापुरा वालों तथा श्रद्धेय ठाकुर मुरारीदानजीसे पूर्ण सहायता प्राप्त हुई है। दूसरे शब्दोंमें यह कहा जाय कि यह कार्य इन्हीं दोनों महानुभावोंका है तो भी कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। मैं तो आप दोनो महानुभावोंकी कृपाके लिए सदा ही कृतज्ञ रहूँगा। इसके अतिरिक्त ग्रंथ की भूमिका लिखनेमें श्री हेनरी टी प्रिंसेप साहबके अमीरनामेके अंग्रेजी अनुवाद, ठा नरेन्द्रसिंहजीके Thirty decisive Battles मुन्शी देवीप्रसादजीके "आमेरके राजा" श्री हनुमान शर्मा जीके नाथावतोंका इतिहास श्री रामनाथ रत्नूके "इतिहास राजस्थान" और श्री मसदरअली आबदके तवारिखे महमूदाबाद से सहायता ली गई है। अतः इन महानुभावोंका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। भूमिकाके संशोधनमें श्रद्धेय श्री मुनि जिनविजयजी महाराजका पूर्ण हाथ रहा है तथा पुस्तकके प्रूफ संशोधन और संपादन कार्यमें उचित परामर्शके लिये श्री पुरुषोत्तम लालजी मेनारिया साहित्यरत्न और श्री गोपालनारायणजी पारीक एम ए का पूर्ण आभारी हूँ।

वास्तव में प्रस्तुत ग्रन्थको इस रूपमें प्रकाशित करने-कराने का सब श्रेय श्रद्धेय मुनिजी महाराज श्री जिनविजयजी को है जिनने राजस्थान पुरातत्व ग्रन्थावलि द्वारा इसका प्रकाशन करना स्वीकार कर और समय समय पर कई प्रकारकी प्रेरणाएं दे-कर मुझे प्रोत्साहित किया। मैं इसके लिये अन्तमें पुनः मुनिजी महाराजके प्रति अपना अनन्य कृतज्ञभाव प्रकट करता हूँ।

—महताब चंद खारैड़

कविया गोपालदान विरचित

कूर्म वंश यश प्रकाश

अपर नाम

लावारासा

—•—

दोहा

अलिक हदु कुंजर तुचा मुंडमाल वपु छारि ।
अहि भूषन विजया भखी जय जय जय त्रिपुरारि ॥१॥
किये नरुक्कन किलम भिरि फिते जुद्ध उमत्त ।
प्रथम मान' 'जगतेश'की कहू केलि कलहंत ॥२॥
जग प्रसिद्ध जयसाह' नृप तिनके 'माधव' नरेश ।
माधव'के परताप' नृप पातिलके जगतेश ॥३॥
उठी मान' पति जोधपुर जैपुर-पति जगतेश ।
पर्‌यो सेष नृप दुहुन उर हिय कंपिय दुहु देश ॥४॥

१ अलिक = अलीक निष्कलंक । कुंजर = हाथी । तुचा = त्वचा, चमड़ा । छारि = राख । विजया = भंग । भखी = खाने वाले ।

२ नरुक्कन = नरूके राजपूत । किलम = कलमा पढ़ने वाले मुसलमान । भिरि = भिड़ कर । मान = जोधपुर नरेश मानसिंह राठौड़ जिन्होंने सं० १८६० से १९०० तक राज्य किया । जगतेश = जयपुरेश जगतसिंह कछवाह जिन्होंने सं० १८५८ से १८७४ तक राज्य किया । कलहंत = युद्ध ।

३ जयसाह = सवाई जयसिंह जिन्होंने जयपुर बसाया और अनेक स्थानों पर ज्योतिष यन्त्रालय बनाए । माधव = महाराजा माधवसिंह प्रथम जिन्होंने सम् १८०७ से १८२४ तक राज्य किया । पातिल = महाराजा प्रतापसिंह ब्रजनिधि कवि ।

४ उठी = उस तरफ । सेष = शत्रुता ।

श्री [illegible] जिनचन्द्र ज्ञान भाण्डार
जयपुर

चाँपावत पोकरण-पति, प्रबल सवाई खिज्ज ।
ग्रदल चढ्यो नृप मानसों बढ्यो कलहको बिज्ज ॥५॥
कलह बिज्ज ता दिन बढ्यो सारों धूकल साय ।
आनि मिल्यो जगतेशसूं यम जुध करिय उपाय ॥६॥
साम दाम छल-छिद्र करि नृप हिय रुचि उपजाय ।
ममहु मेघ बसि बात मढि चढ्यो कच्छ-कुलराय ॥७॥
चढ्यो सुनत 'जगतेश कों कही मान' यह बत्त ।
हय फेरहि कछवाह घर जीति करहिं अपदत्त ॥८॥

छंद नाराच

चढ्यो नरिन्द मानय उदै दिशा प्रयानय ।
मनो समुद्र ऊमले रठौर आनि के मिले ॥९॥
बजे निशान नद्दयं मनो कि घोर भद्दयं ।
उछाह जुद्धको भयो कनोज ईश यों चढ्यो ॥१०॥
सुभट्ट सख्ख सक्खरं लसग लक्ख पक्खरं ।
धरा मडोल झुल्लयं गजू निशान खुल्लयं ॥११॥

---

५ पोकरणपति = पोकरण (मारवाड़) के स्वामी सवाईसिंह । खिज्ज = कोधित होकर । अदल = खिलाफ होकर । बढ्यो = बोया गया । बिज्ज = बीज ।

६ सारों = पीछे । धूकल = धौंकलसिंह जिसको जोधपुरकी गद्दीका हकदार बनाकर पुष्ट हुआ । यम = इस प्रकार ।

७ बात = हवा ।

८ बत्त = बात । हय = घोड़ा । अपदत्त = अपदस्थ अपमानित ।

९ उदै दिशा = पूर्व दिशा । ऊमले = उमड़ना उफनना मर्यादा छोड़ना ।

१० नद्दयं = नाद शब्द । भद्दयं = भादवके मेघ । यों = इस प्रकार । कनोज ईश = राठौर पति मानसिंह ।

११ सख्ख सक्खरं = श्रेष्ठ शाखाके । लक्ख = देख कर । पक्खरं = पाखर । गजू = हाथियोंके ।

रजीनि भान छक्कयो मनुऽधकार मुक्कया ।
विछोह चक्क चक्कयं, अनेक बीर बक्कय ॥१२॥
बिमान व्योमतं भुरे अनेक रंभ उत्तरे ।
महेस मुंडमालको, चल्यो करीनि लालको ॥१३॥
असोम जत्र लै मुनी, अलापि बीरकी धुनी ।
मनूंक बालकों गुडी अनेक अद्दनी उडी ॥१४॥
सरब्बतं चमू जुरे परब्बत सर परे ।
उडीक मान क पती चढ्यो न क्यों जगत्पती ॥१५॥

दोहा

यम आगम सुनि 'मान'को 'परबतसर' जुध थप्प ।
अपन तुड कछवाह-कुल, मिले आनि अप अप्प ॥१६॥
'अभयसिंह' नृप खेतडी चढे जु दलको सज्जि ।
लिछमण' चढियो 'महणसर' पूर नगारे बज्जि ॥१७॥

छप्पय

'रायचद' दीवान 'रावचदह गोगावत ।
लछो' फतैपुर नाम, रावराजा सेखावत ॥
राजापति 'खंडपुर, नवल दांता पति निहुर ।

१२. रजीनि = रजसे । भान = भानु सूर्य । मुनंऽधकार = मानो अंधकार । मुक्कयो = छूट गया हो फैल गया हो । विछोह = वियोग । चक्क = चकवा । चक्कयं = चकवी । बक्कयं = बोलने लगे ।
१३ रंभ = अप्सरायें । करीनि = हथनियोंकी । लालको = चमडेके लिए ।
१४ असोम = अर्थात नारदकी वीणाका नाम । बाल = बालक । गुडी = पतंग ।
१५ सरब्बतं = सब । चमू = फौज । परब्बतं = पर्वतसर गांव । उडीक = प्रतीकना, इन्तजार करना । पती = इतनी ।
१६ यम = इस प्रकार । थप्प = स्थापित करके । अपन तुड = तरपन शाखाओंके । अप अप्प = अपने आप ।
१७. खेतडी = राजपूतानेमें शेखावाटी प्रांतका एक प्रसिद्ध नगर जिसके शासक राजा कहलाते हैं । महणसर = शेखावाटीमें ठिकानेका एक गांव ।

पचरंको पति साह भीम' 'उनियारे' मद्दूर ॥
धूलो' 'झिलाय' राजावता, नाथावत' सांगा मिले ।
ओघपुर कमन दिल्ली तखत, एक पहर विष उत्थले ॥१८॥
त्रेपन सुत कछवाह सात सातारा सुमट्टां ।
हैदल पैदल मिले यवन हिन्दु गज थट्टां ॥
'बीका पति सुरतेश' आनि मिलियो मघि जैपुर ।
रहे आनि हकदार किते गजबंध नरेसुर ॥
हैदराबाद सिंधी हुलसि सबल जानि सरनो गह्यो ।
हुय बीन तदिन जगतेशके मीरखान चाकर रह्यो ॥१९॥

दोहा

मीरखान चाकर रह्यो जदन भूपके सत्थ ।
तदन मच्यो बट बीज लों मद्दूस आगम कत्थ ॥२०॥

छन्द त्रोटक

जगतेश फवज्ज प्रबधु करे भुव कंपित मार विगीश डरे ।
मन मान महीपनके प्रजरे किनपै बसधा-पति कोप करे ॥२१॥

---

१८. खवो = लछमणसिंह सीकरके राव राजा। खंडपुर = खंडेलेके स्वामी। नवल = नवलगढ़के स्वामी। दांता पति = दांता नामक ठिकानेके स्वामी जो जयपुरसे पश्चिममें है। निवुर = निवर। पचरंपतिसाह = मरुके राजपूतोंको पचरंके बादशाह कहते हैं। उनियारे = जयपुरसे दक्षिणपूर्वमें है। धूलो = यह जयपुरसे पूर्वमें है। झिलाय = यह जयपुरसे दक्षिणमें है। ये सब जयपुरके ठिकानोंके नाम हैं। उत्थले = उथलना, विजय करना।

१९. हैदल = घुड़सवार फौज। थट्टां = समूह। बीकापति सुरतेश = बीकानेरके स्वामी सुरतसिंहजी जिन्होंने सं १८४६ से १८८५ तक राज्य किया। मीरखान = अमीर खां पठान जिसको अंग्रेजोंने इस युद्धके पश्चात् टोंक आदि इलाका मिलाकर नवाब बनाया। चाकर = नौकर। हैदराबादी सिंधी = हैदराबादी रिसाला नामक सेना एक जो रुपयेके प्रलोभनसे लड़ा करता था और लूटमार करता था।

२० जदन = जिस दिन। सत्थ = साथ। तदन = उस दिनसे। मच्यो = मचा। बट बीजलों = बड़ वृक्षके बीजकी तरह।

२१ फवज्ज = फौज सेना। मान = मान्य। प्रजरे = प्रज्वलित हुए।

सब शत्रुनके उर शोक बढ्यो करि कोप कठी कछवाह चढ्यो ।
झप झप्प उकीलन खत्त लिखे, जयनम मवोवर ईश घखे ॥२२॥
घखि सोमन कोयन खून भरे दहुधां उमत्त मतंग मरे ।
करि कोप चढ्यो नृप मान उठी उमड्यो घनलो कछवाह अठी ॥२३॥
सुनि ठोर परी सदनद्दनके परि डिल्लिय सोर रवद्दनके ।
सब सूर सनाहनि टोप सज लखि भासुर कातर प्रान तज ॥२४॥
सत पंच करीगन कोर बने मनु कज्जल कूट धरागमने ।
लख तीन हय सपतासनती, रथ पंकितनकी न भई गिनती ॥२५॥
मयुत शर उटन मोर भरे शत षोडश तोप तयार करे ।
जकरे शत ओम जवान भुजां करि मजन धूपि नवीन धुजा ॥२६॥
द्विज आनि लिखे जय जन्त्र जिते पढ़ि के शत चंडिय जाप किते ।
मुख मंडि सिंदूरनि रत्त किये अज एड महिष्यन भक्ख दिये ॥२७॥
जरदोजनि हेम ध्वजा सरफं तडिता घन बीच मनो तरफैं ।
ललकार मुखां सत जुट्टि लगी इभ मप्पनि वायनि सी उमंगी ॥२८॥

---

२२. कठी = कहां किस पर । उकीलन = वकीलोंको । खत्त = खत, पत्र । घखे = कोपित हुए ।

२३ घखि = कोप करके । मतंग = हाथी । उठी = उस तरफ । अठी = इस तरफ । दुहुधां = दोनों तरफ ।

२४ सदनद्दनके = युद्धके नगारे । डिल्लिय = दिल्ली । रवद्दनके = मुसलमानोंके । सूर = शूरवीर । सनाह = बख्तर । कातर = कायर । ठोर = चोट ।

२५ सतपंच = पांच सौ । करीगन = हाथियोंकी । कोर = किनार, पंक्ति । लखतीन = तीन लाख । सपतासनती = सप्तारवोंके संबंधी ।

२६ अयुतं शर = पन्द्रह हजार । जकरे = पकडे हुए । ओम = ओरा । धूपि = धूप खेकर सोर = बारूद ।

२७ अज = बकर । एड = मेंढा । महिष्यन = भैंसे । भक्ख दिये = बलि दी ।

२८ सरफं = सर सराते हुवे, हिलें । तडिता = बिजली । इभ = हाथी ।

भरि पेटिय सोर महोरह की, मछ धूकर बाघ मुखी मलकी ।
मग दीरघ तोप किती मचले उन्मत्त करीगन भागि टलें ॥२९॥
भिरि पाहन नालन भागि भरै हय-पौरन भूमि दरार परैं ।
सर बापिय कुप्पन सुक्ख परै, थलबित्थुल नीर थलो निकरै ॥३०॥
मुनि सिंधुनि तोय ततो उछरे हुमि दीरघ भद्रिन भंग गिरे ।
सिर सेस हजार मनी सरकी भर पीठ कमठ्ठहुकी थरकी ॥३१॥
गजराजनि पिट्ठि निसान खुलें बर्षा ऋतु मानहु साँभ फुले ।
मनु पाय पताक किते उरभे उडि बात समूह मतैं सुरभे ॥३२॥
भुव जन्तु मृगादि थके पकरैं नभ जन्तु परैं थकि भूमि परैं ।
उडि रज्ज धरा असमान गई मनु भूमि पुकारन भार भई ॥३३॥

पचरंग रठौरनि विट्ठुरिय किय भानि मुकामहि मिट्ठुरियं ॥३४॥

दोहा

किया मुकामहि मिट्ठुरिय लूटन लग्गे देस ।
मानसिंह जगतेश' दुहुँ जुध कज बढे नरेश ॥३५॥

छंद त्रोटक

कछवाह रठोरनि कोप बढे दुहु ओर सुरगन पिट्ठि चढे ।
दुहु ओर गाजों सिर डाम क्षरी चहुं ओर नगारन ठोर परी ॥३६॥

२९ सोर = बारूद । महोरह की = आगे की । मछ धूकर बाघ मुखी = मच्छी, सुअर और बाघके मुखवाली तोपें । मग ... टलें = मार्गमें बड़ी ? कितनी ही तोप चल रही हैं जो मस्त हाथियोंके धक्कोंसे आगे बढ़ाई जाती है ।
३० पाहन = पत्थर । भागन = घोड़ोंकी टापमें लगा लोहा । पौरन = घोड़ेका खुर । बापिय = बावड़ियें । कुप्पन = कुए । सुक्क परे = सूख गये । थल बित्थुल नीर थलो निकरे = थलके स्थान ..., और ... स्थान पर स्थल निकल आया ।
३१ मुनि = सात । उछरे = उ... ततो = तति समूह ।
३२ निसान = पताका ध्वज
३३ पर = परोंसे, पंखोंसे
३६ नगारन ठोर परी = नग...

दुहु ओर अनी चतुरंग अनी दुहु आर करीनकि कोर अनी ।
दुहु ओर पताकनि पंक्ति सुली दुहु ओर हलाहल कोर हुली ॥३७॥
दुहु ओर उदगगनि खग्ग किय दुहु ओर तुरंगन वग्ग लिये ।
ठनन किय कुंजर घट सुनि घनन किय पक्खर भट घनि ॥ ३८ ॥
हनन किय आतुर होय हय, भनन किय भेरि भयान भय ।
सनन किय खापन खग्ग सजी सनन किय गिद्दनि पख सजी ॥३९॥
भनन किय भाभर रम भुरे रनन किय तत्थ रठौर मुरे ।
सिह ठौर रठौरअनी वदले जगतेश नरेशहु आनि मिले ॥४०॥

दोहा

मानहु कुलटा मानरत निज पति निबल निहारि ।
सकल मिले जगतेशसूं एक कुचामनि टारि ॥४१॥

छंद पद्धरी

जुट्टे न मान राजान जग नच्चे न भूत बेताल सग ।
वज्जी न तेग तुट्टे न धाड़ गज्जे न तोप मानहु अपाड़ ॥४२॥
बक्के न बीर आरान आय छक्के न ओन जोगनि अघाय ।
खापन उसारि वाही न खग्ग झोकी न तेग ताजी न वग्ग ॥४३॥
वज्जे न जत्र मुनि मेक तार अच्छर अनेक गई निराधार ।
धायल असाद्धि डोले न घुम्मि सानीम ओनसें रंग भूम्मि ॥४४॥

---

३७ अनी = फौज । कोर = पंक्ति ।
३८ उदगगनि = ऊँचे । भग्ग = खड्ग । वग्ग = वाग लगाम । घट = छाँटिये, कटिये ।
३९ खापन = तलवारका म्यान ।
४० तत्थ = वहाँ । मुर = मुड़ गये वापस गये ।
४१ कुचामनि = कुचामन वाले, कुचामन जोधपुरमें एक ठिकाना है ।
४२ धाड़ = तलवारकी धार ।
४३ आपन = युद्धमें । छक्के = तृप्त होना । वाही = चलाई । ताजीन = घोड़े ।
४४ मेक = एक । असद्धि = असाध्य । सानी = सानना, भीगोना, गीला करना ।

दोहा

सती लोप न मान मिय लिय न खग्ग जमद्दृढ ।
पूगो मुसकल जोधपुर गढ़ धढ़ पकरयो गढ्ढ ॥४५॥
लगो लैर कूरम कटक मानुह सिंधु हिलोर ।
किय धूंकल नागोरपति दियो जोधपुर जोर ॥४६॥

छप्पय

मास त्रिगुन मोरचे जग महोरहि मच्चिय ।
करि मुरधरा विरान 'मान' भुव हुक्म उथप्पिय ।
दे धूंकल नागोर थान थाना थप थप्पिय ।
मानब पगां मिलाय पहुमि राठोरन अप्पिय ।
नृप मान रह्यो तप बल सदन धर्म रठोरन हारियो ।
जोधपुर हुव अगतो नृपति फिरि जयमग्र पधारियो ॥४७॥
तोरन कलस पताक तानि वितान भरोधर ।
राजा द्वार उद्दार इद्र आगार सरोभर ॥
हाटकमय आवास जटित मानिक मोताहल ।
दर परदे जरदोज सयन अतलसूसां मुखमल ॥
खुलि यत्र यंत्र धारा बलित मिलि कपूर केशर मलय ।
शीतल सुगध आनंदमय मद मद मारुत चलय ॥४८॥
भूपति चित भाममी देह दामनि धरि दमनि ।
मानहु कामनि काम रभ लाजि होत अबमनि ॥
मिलि समूह गायनी गमम उनमत्त करीसम ।
सरी भूप बसिकरन आनि सब इद्र परी सम ।

---

४५ सती = गर्म । जमदड्ढ = कटारी ।
४७ उथप्पिय = हटाकर । अप = अपने ।
४८ यंत्र यंत्र = फंवारे फंवारे ।

वीणादि मधुर इत्यादि वर, सुखद लाय ध्वनि सुर्च्छना ।
पचम निषाद सगीत मिलि, ग्राम ताल सुर मुर्च्छना ॥४६॥
लक लचकि कुच उचकि नृत्य गति यत्र सरल चलि ।
डुलि कुडल चख चलित,उरझि कुत्तल हारावलि ॥
भग उलटि पट पलटि कबु ग्रीवा करि चकित ।
थु ग थु ग ततथेय, बजत मजीरनि सकित ॥
गुर पच भ्रष्ट वय भेद तिय पंच भावबश हाव युत ।
न्पति प्रवीन रति कोक विधि दिन छिनवा सभोग रत ॥५०॥
नहि मडै दरवार रहत भूपति भ्रतहपुर ।
कूरम दल बिरधुरिय गमन भ्रप भ्रप्प घरोघर ॥
मग्न भ्रासव उनमत्त कमठ-कुलपति कामासय ।
रसकपूर' वस भयो एक रस उर भ्रम्यासय ॥
यम सुनिय यत्त पति जोधपुर जैपुर पति नन सज्जिमो ।
नृप मान तदन भ्रवनिय भ्रदन, मीरखांन मन्त्री कियो ॥५१॥
कपट द्रोह करि किलम प्रथम मारूस्थल लुट्टिय ।
महुरि आन नागौर दगै स्वाई' सिर कट्टिय ।
तज धूंकल' नागोर मान भय मानस मग्गो ।
भयो तदन दमजोर म्लेच्छ भ्रसमानह लग्गो ॥
नृप 'मान बधु हुई मानकथ किलम कुप्पि कीनो कहर ।
करि बद्ध प्रबल असुरगन फिर लूट्टिय ढूढार घर ॥५२॥

इतिश्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपाल दान विरचिता मान जगतेश विरुद्ध प्रथम प्रसग समाप्त ।

---

४ गुर पंच भ्रष्ट वय = तीन पांच आठकी उमर वाली पाडनवर्षीय बाला ।
२१ रसकपूर = जगतसिंहकी वेश्याका नाम । भ्रवनिय = पृथ्वी राजधानी । भ्रदन = भ्रदिन, बुरे दिन ।
४ कथ = बात । कहर = गजब ।

लावा युद्ध

दोहा

एम मान जगतेशको, मरन्यो सुगम विरुद्ध ।
लर्‌यो प्रथम लावै किलम जिहि बिधि मरनूं जुद्ध ॥१॥

छन्द पद्धरी

जगतेश भूप रनवास रत्त दस जोरि किलम आयोऽनुमत्त ।
प्रज्जानि दयो दुख एकसाथ सब लूटि लिये रिपु करि अनाथ ॥२॥
उतपात असुर किन्ने अपार सम करी भूमि प्रज्जारि छार ।
मधुपुर निवास रहबें न पाय सब दीन बसे गिरि दरिन जाय ॥३॥
द्विज संत वनिक वृत कियो छीन सुरभी समूह रिपु घेरि लीन ।
हिरनाक्ष जेम कीनी हैरान वहवे न वई भू भइ बिरान ॥ ४ ॥
प्राकार ईश तज कै गुमान भर दंड मिले सब मानि मान ।
कामांध भूप किय बधिर कान सब देश भयो चल दल समान ॥ ५ ॥
निज थान थान थाना जमाय अपनाय भूमि दृढ़ करत पाय ।
यम करत उपद्रव खलकुलीक आयो निशक लावा' नजीक ॥६॥

दोहा

संग प्रबल चतुरंगनी तुपक तोप तम्माम ।
येम असुर 'लावा' निकट किनू आनि मुकाम ॥७॥

---

४ वहवे=कृषि करना खेत बोवना ।
५. चल दल=पीपलके पत्ते ।
६. खल कुलोक—दुष्ट वंशवाला । नजीक—नजदीक पास ।

दवावैत

जिस वखत मीरखान, अहलकार दिल मालीक बुलवाये, बडे बडे मीरजादे, अपने डेरूसे चलि आये। कमर्दीखान जाफरीखान, मीरजहान मीर असमानखान यकतारखान ततार कनल जमसेर बाई दस्त बांई फिर दाहनी दस्त समसेर। उसके बीच मीर मन्नु अरज गुजराई इस किल्लेमें बहुत सी मालियत बतलाई। अपनी फौजका भय मान इन रजपूतोंको जबरदस्त जान इन गाऊंके वकास जिसके ये हाल हवाल। तमाम इस किल्लेमें आया, जिससे अपना है दाया। हुकम हो इससे मामला ठहिरावें हुकम होय फजर किल्ले गरदावें। जिसवक्त बोले मीर मुल्ला नवावके बच्चा बहुत सच्चा, मामले ठहिरायवेकी बात सच्ची किल्ले गदरायबेकी बात कच्ची ये हिन्दु कछवाहे कौम नरके वेग तेगके मुद्देमें सावत कहूं न चूके कत्लके रोज नारनोलके पासे द्वादस हजार सैयद* सांभरके खेत आये जिसपै आमेर वा जोधपुरके महाराज दोऊ सल्लाह करि जग करिवेको चलाये। हिन्दु मुसलमानके तीन पहर तलवार चल्ली आफतावका तेज मद हुआ वारूदकी धूमसे रात

दवावैत—यह एक गद्यका प्रकार है, इसमें अन्त्यानुप्रास मध्यानुप्रासका प्रयोग किया जाता है। यह दो प्रकारकी होती है। प्रथममें तो मात्राका कुछ नियम नहीं होता है और दूसरीमें २४ मात्राओंका एक पद बनाया जाता है। विशेष जाननेके लिए "रघुनाथरूपक" पुस्तक देखनी चाहिए। यह पुस्तक "काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी" द्वारा प्रकाशित हुई है।

वकास—बसिये। दाया—वैर। गरदावे—घेरा देना। वेग तेग—दाम देनेमें और तलवार चलानेमें। सावत—सम्पूर्ण।

*मुगल सम्राट औरंगजेबकी मृत्युके पश्चात् शाहजादा आज़म और शाहजादा मुअज्जममें शाही तख्तके लिये युद्ध हुआ। इस युद्धमें शाहजादा आज़म उसका पुत्र बेदारबख्त मारे गये। अतः शाहजादा मुअज्जम बहादुर शाह के नामसे शाही तख्तका अधिकारी होकर बादशाह हुआ। इस युद्धमें महाराजा आमेर जोधपुर दोनों और बरखर शाहजादा आज़मकी ओर थे। इस कारण बादशाहने नाराज होकर आमेर और जोधपुरको खालसा कर लिया था। और वहांके प्रबन्धार्थ महाबतखां फौजदार और सैयद हुसेनखां फौजदार को नियुक्त किया। दोनों नरेशों (जोधपुर और

मिल्ली। सयदकी फौज सिरजार जानी, राठौर कछवाहोंकी फौजने हार मानी। हिन्दूकी फौज सिक्स्ति लाई यह बात नरूकोन सुन पाई। उनिमाराके सग्रामसिंह चोरूके हरनाथ लदानाके केसरीसिंह तीनों एक साथ। द्वादस हजार सैयम्की फौजप सात हज्जार तोक्षार पटका, मद रहमत उस सयदको एक पहर फेर भी झटका। फिर सयद तो भागे सैयदू के पीछ ये नरूके लागे। बादशाहोंने माही मुरातब फील मुद्दे निशान सिले सारो सब। उस सैयदका असबाब छीना, आमेरके महाराज जयसाहको साथ दीना। सब हिन्दुस्तानम सराह पाया, जयसाहने कायदा बधाया। फरावीन सजर कटार फरी पिस्तोल तलवार तमाम आमुर्षों सुद्दे सलाम की परवानगी पाई। कलेस चौक सिरे दुयोडी तकत इसके नगारो पर परै घाई। ऐसे उनियारा'के राजा जिसके तौर, तैसे ही लदाना' के पाटवी सबके सिरमौर। लदाना'के 'मदनसिंह' जिसका जाया कंवर 'भारथसिंह' बहुत तेज बतलाया। 'लदाना' 'लावा', 'चोरू' पचाला' महूरभो' झाक सेरोंका मासा। लावासे अग जुरोग, ये बेहा बरबाद करोगे।

आमेर)ने महाराणा उदयपुरसे सहायता प्राप्त कर पहिले जोधपुरको अपने हस्तगत किया। इसके पश्चात् आमेरको हस्तगत करनेके लिये चढ़ाई की। इस युद्धमें हुसेनखां का पुत्र मारा गया और वह स्वयं भाग गया। इसके पश्चात् दोनों नरेश अजमेरकी ओर बढ़े और सांभरके निकट मुगल फौजदारोंसे उनकी मुठभेड़ हुई। इस स्थान पर मेवातका फौजदार सय्यद हुसेनखां अपने दोनों पुत्रों सहित मेवातके फौजदार अहमद सैयदखां और नारनौलके फौजदार गैरतखां सहित मुकाबलेके लिए आ डटा। इस युद्धमें राठौर और कछवाहोंकी सेना परास्त हो गई। और सैयदोंकी सेना खुशियाँ मनाने लगी। इधर उनियारेके राव संग्रामसिंह अपने नरूका बन्धुओं सहित एक टीलेके पीछे दूसरे दिन युद्धमें सम्मिलित होनेके लिये डेरा डाले हुए थे। रावजी शिकारके बहुत शौकीन थे। अतः इनके साथ ५० शिकारी चीता और ५०० सधे हुए शिकारी कुत्ते हर समय साथ रहा करते थे। इस समय भी वे साथ थे। इसके अतिरिक्त १५ चढ़ हुए और चीता और थे। दूसरे दिन प्रातः काल युद्धमें सम्मिलित होनेके लिए टीले पर चढ़कर नीचे उतरने लगे वैसे ही सैयदोंकी सेना दिखाई पड़ी। रावजीने ५ शिकारी कुत्तों और अपने वीर बन्धुओं सहित सैयदों पर आक्रमण कर दिया और एक भी शत्रुको जीवित नहीं छोड़ा। इस प्रकार राठौड़ और कछवाहोंकी प्रथम दिनकी पराजयको विजयमें परिणित कर दिया। आमेर नरेश सवाई जयसिंहने जब इस विजयके समाचार सुने तब एकाएक उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। जब रावजीकी बातें उन्हें ज्ञात हुईं तब वे अत्यन्त ही प्रसन्न हुए। और रावजीके निर्णयानुसार भावी सांभर पर जोधपुरका अधिकार स्वीकार कर लिया। यह युद्ध सन् १७०८ ई० ता० ३ अक्टूबरको हुआ था।

दोहा

वरज्यो मीर मुलाह सब असुर न मानी एक।
जग जुरिवा 'लावै' जदन ऊठे असुर अनेक ॥८॥

छंद पद्धरी

यम सुनत वत्त अजरयो नवाव परि तप्त तेल जनु बूंद आय।
किय रक्त नैन भ्रकुटी करूर, कहि जुरहु जग लावा जरूर ॥९॥
यम सुनत मात्र बोले जवान सब करहि कोटि भूमी समान।
कहि 'गाघखान' लरि करहि वाट, उन्मत्त फील तोरहि कपाट ॥१०॥
'करनैलखान' यम कहिय आय, दे सुरग कोट देहुँ उडाय।
'जमशेर' कही चहुँ कोर रुंदि फिर लाय नसैनी परहि कूदि ॥११॥
'अमरेजखान' बोल्यो रिसाय गढ करहु सफा तोपन लगाय।
'असमानखांन' कह सुनहु इक्क सब धसहु फोज किल्ल नजिक्क ॥१२॥
'मुलतानखांन' यम कही बात ह्वा जाय सेन सब तूल पात।
'भासून' कही रजपूत ठाठ बीराधि बीर गढ वहुत गाढ ॥१३॥
वहु तोप कगूरन करत केल सब रघ्र रघ्र जम्बूर मेल।
वारूद बहुत सीसा समेत करिहु निसक रनबीर खेत ॥१४॥
फिरि कर्‌यो गाढ संगर लगाय जो मर्‌यो बहुत सो निकट जाय।
उन्नत सफील परिखा अथाह, भरि भूमि देत रजपूत राह ॥१५॥

---

(९) तोखार=घोड़े। जुरे=सहित साथ। सपाह पाया=प्रशंसित हुए। करावीन=करावीन एक प्रकारकी बंदूक। फरी=ढाल पटा। ड्योढ़ी दराग=ड्योढ़ी तक। खाइ=कोट। महरचों मचक=गायोंके नाम। सेरोंका आसय=शेर(सिंहों)के स्थान। बरज्यो=मना किया।

(१३) तूल=रुई। पात=पत्ते।

(१४) जम्बूर=एक प्रकारकी छोटी तोप।

(१५) संगर=संगठन करके। सफील=कोट। परिखा=खाई।

'मासून' कही मानी न एक कोप्यो नवाब नही तजी टेक।
ललकारि तोप जूटी लगाय, गढ़ घेरि लयो चहूँ फर माय ॥१६॥

छप्पय

यम सुमान उच्चर्‌यो, येम सलसाह उचारे।
यम मक्खी 'वलवत', यम सादूल' वकारे॥
यम मुल्ल्यो 'हुनुमंत', ईस मह्‌कम यम बुल्ले।
मार-मार उच्चार सार सिप्फर कर झल्ले॥
सरमीरखांन भागन्तु हम भरिगन यारन सुट्टि हैं।
तुट्टे न कोट मृगराज यहि सार-धार सिर तुट्टि हैं॥१७॥
कवन भूमि उत्पलहि कवन सर नीर मयावें।
कवन कालनि गहीं, कवन गिरि मेरु उथावें॥
कवन उरग मनि सेत कवन असमान उथवें।
कवन वात कर गहें कवन 'माव' जुद्ध मडें॥
परलोक जाय भावें कवन कवन मीच-मालै गवन।
कठीर कठ हिम कठ सौं कर पसारि घल्लै कवन॥१८॥

दोहा

सुनि सलसाह' 'सुमानसी' करो विलब न काम।
कहि ठाकुर घर अप्पनी ऊभां पगां न जाय॥१६॥
सिर साटै घर सेत हैं ठाकुर रहो न चीत।
फिर घर साटैं सिर विये रजपूतों यह रीत॥२०॥

---

(१६) टेक=जिद।

(१७) सार=तलवार। सिप्फर=सिप्पर, बड़ी तलवार। सलसाह=नाम विशेष।

(१८) उथावे=मस्तक पर रखना। मालै=आतप स्थान। कंठीर=सिंह। हिमकंठ=सोनेका कण्ठा।

(१६) ऊभां पगां=यह एक मुहावरा है पैरों पर खड़े हुए।

(२०) साटै=पलटमें। नचीत=निश्चित।

छंद त्रोटक

इतने लुकमान उकार लय उडि धूम धरा असमान गय ।
कहुँ ओर नरूकनके दलय, उलटे मनु सिन्धु हिलोर लय ॥२१॥
चतुरंगनि ठेलि रखद्दनकी जुद सगरची अपसद्दनकी ।
जुध मार भुजानि लुमान' लय विजयी मनु भारतके समय ॥२२॥
सलवल भयो दलि भद्र बली हृथनापुर सों सब सेन हली ।
'हनुमत' बली हनुमत भये कर तोल उदग्गिनि खग्ग लये ॥२३॥
अरिको दल देखि 'सदूल' उठयो, मनु केहरि सीस करीनि रुठयो ।
न सहँ अरि तोप अवाज सलो' जनु वधि भयो अपु कंध किलो ॥२४॥
बहु बधू बरातिय सग लये सिर सेहर केहर साज किये ।
निकसे गढ़ बाहरको लरिया अरि-सेन-कँवारियको बरिया ॥२५॥
रसबीर हुलस्य हिये उलहो दुलही चतुरंगनिको दुलहो ।
कसि हल्लय फौज किलमनकी बनि सिल्लिय टोय सिल्लंमनकी ॥२६॥
किलमी चतुरगनि येम चली कि हलाहलकी सरिता उझली ।
भहिके नव पानिप तुबुरय भहिके चहुँ ओरनि जबुरय ॥२७॥

---

(२१) लुकमान=ऐसा कहते हैं कि 'तोप'की ईजाद हकीम लुकमानने सर्व प्रथम की थी इसलिए यहां इसका अर्थ तोप है ।
(२) अपसद्दनकी=नीचोंकी, अधमोंकी ।
(२४) सलो=सलसलि । सदूल=शार्दू लसिंह । (२५) लरिया=लड़नेको । अरि-सेन कँवारिय=शत्रुसेना रूपी कुँवारी कन्याको । बारिया=विवाह करनेके लिए ।
(२६) उलहो=उमंग ।
(२७) भहिके=बज । पानिप=प्रसंगानुसार इस शब्दका अर्थ ढोल अथवा नगाड़ा होना चाहिए । मेरी सम्मतिमें यहां 'पानिघ' शब्द होना उपयुक्त है जिसका अर्थ 'हाथसे मारे जाने वाला" होता है । 'भहिके" शब्द नगाड़े व ढोलके बजनेके अर्थमें प्रयुक्त होता है अतः यहा 'पानिघ" का अर्थ भी हाथसे मारे जाने वाला बजाया जाने वाला वाद्ययन्त्र-ढोल व नगाड़ा होना उपयुक्त है । यदि 'पानिप'का अर्थ 'हाथसे पिटने वाला" लें तो भी यही अर्थ निकलता है । इसी ग्रंथके पांचवें प्रसंगके छन्द सं १६० में भी यह शब्द प्रयुक्त हुआ है । 'पानिप तास भेरि नद बीय रस धम्मो ।' वहां भी इसका यही अर्थ होगा ।

दहिके सब कातर फट्टि हिय, ढहके उर म्लेच्छनि घट्टि जिय ।
सहिके भुव भार फनी फनय, गहके नभ गिद्धनके गनय ॥२८॥
अवली गुन चट्टिय तीरनकी, कर कढ्ढिय खग्ग उमीरनकी ।
खग धारनते सिर तुट्टि परैं, बिनु मस्तनि हस्तनि मत्त भरैं ॥२९॥
न हलै न चलै कहु भूमि खरे, मलके सम ज्यो दोउ मल्ल अरे ।
मिलि हिन्दुव म्लेच्छिहि येम भले, चहुवान बनाफर ज्यों न चले ॥३०॥
कर खंजर पंजर पार करैं, उरमैं पग अंतनि भूमि गिरैं ।
कितने लरि घायली भूमि गिरैं, मदिरा उनमत्त मनो विहरैं ॥३१॥
लखि नाचन बीर वक विकसैं, मुनि जंत्र असोम बजाय हँसैं ।
मस आमिख गिद्धनि उद्र भरैं, मिलि हूर अपच्छर सूर बरैं ॥३२॥
सब जोगनि स्रोणित खप्र भरैं, ततथेयव भैरव नृत्य करैं ।
छननं किय पक्खर झट झरैं, खननं किय खग्गन घाव खिरैं ॥३३॥
झननं किय पायल रमनकी, उपमा यक ओर अघर्मनकी ।
भरसैं गलबाह किया बिहरै, अरधाग मनू हरि नृत्य करै ॥२४।
यम झूंझि सलों रन भूमि परयो, बरमाल अपच्छर डारि बर्यो ।
सिर झेलि महेश सुमेर कियो, रथ बैठि अपच्छर लोक गयो ॥३५॥

दोहा

यम किलो धारे सदुव मारे किते उमीर ।
झूंझि सलों रन भुव परयो हल्लो कर्यो तगीर ॥३६॥

---

(२८) दहके=धंसक गये दह गये । घट्टि जियं=घड़ेकी तरह । सहिके=सहम गये । गहके=प्रसन्न हुए ।
(२९) अवली तीरनकी=तीरोंके लगातार चलनेसे प्रत्यंचा चटक (वज्र) उठी ।
(३) चहुवान=चौहान राजपूत । बनाफर=क्षत्रियोंकी एक जाति विशेष ।
(३१) पंजर=शरीर । अंतनि=आंतें । (३२) मुनि=नारद । जंत्र असोम=असोम नामक नारदकी वीणा । उद्र=उदर, पेट ।
(३६) तगीर=विदा करना रवाना करना ।

'महकम'की दिन प्रतिसधी वधी किलम उर धेंस ।
यें म सरे सट मास लग धावत प्रब विधेंस ॥३७॥

छंद मोतियदाम

'सलो' रन झूंझि परयो जुध जुट्टि लयो जस यास प्रस्थमिय सुट्टि ।
परे सत पट्टरकें पतसाह, करे जिनु भच्छरि लोक उछाह ॥३८॥
परे भर एक हजार मिल्लम परे बिधुरे जिमि टोप भिल्लम ।
परे कमनेंत वसू बल बंध परे सर मीर नगारन बंध ॥३९॥
परे दस घायल एक हजार, कराहत भगनि घाव सुमार ।
परे गज मेंक रवद्दनि घूमि परे सत दोय तुरग्गह भूमि ॥४०॥
करैं मुनि नारद येंम सराह कहैं जुद्ध जीति गर्ये कछवाह ।
गर्ये कमलास मृडानि महीस, कहैं जुध जीतिय पट्टरईस ॥४१॥
भई सब जोगनि श्रोन त्रपत्ति, गई यम भक्खि नरक्कन जित्ति ।
गयें बकि बावन बीर विसुद्ध, भई जय हिन्दुनकी यहि जुद्ध ॥४२॥

उडी पल धप्पय गिद्धनि संग, कहे जुध जीतिय मोकमसिंग ॥४३॥

दोहा

मम जुट्टें सट मास जुध, हुए किलम हैरान ।
मनहु काम चतुरंगनी करी ईश वेंरान ॥४४॥

छप्पय

किर्ते झूंझि भर परे, किर्ते घायल भर भुम्मिय ।
कबर घोर बहुं कोर करी कितनी खनि भुम्मिय ॥

---

३७ धेंस—द्वेष ।
३९. बसू—पृथ्वी । नगारन बंध—जिनके आगे नगारे बजते हैं ।
४१. मृडानि महीस—पार्वती शिव ।
४४. वेंरान—वीरान ।

कैतें सग तावूत, किर्ते मायलों मिलायति ।
किर्ते करि कफनी गयें भ्रप्पमी बिलायति ।।
यम कियो जुद्दम हुकम प्रबल ।
घीठ किलम उर घक्खियो ।।
सिर र्शेप रह्यो' लावो' 'सुद्दढ़,तब नवाब यम भक्खियो ।।४५।।
करहु तुच्छ मामले कच्छु हम टेक रहावें ।
यश लावें गढ़ मरन जिमत हम फेर न भावें ।।
करि वेडे बरबाद वाद बारूद उड़ायें ।
हम तुम जुट्टे तदन भदन महिमति उर छायें ।।
यम कहि बुलाय बतराम कछु कपट द्रोह उर धारियो ।
करि दगो पकरि हनुमंत'को, भासुर कटक उपारियो ।।४६।।

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कसहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपालदास विरचित प्रथम लावा युद्ध द्वितीय प्रसग समाप्त ।

---

४४ पोर—गोर, कब्र । तावूत—मुर्दा रखनेका बक्स, अर्थी ।
४६ मदन—खोट दिन । महिमति—घमंड, जोश । वाद—व्यर्थ । भदन—भदन्य तुच्छ ।

सदाना युद्ध

छंद बेताल

करि पम गहि हनुमतको मय मानि लावातें भग्यो।
करि दुष्टता यहु घोरते फिर देवाको लुट्टन लग्यो ॥१॥
वर बीर बीर सुमानके यहु रोस अंग उमगयो।
हनुमतको छुटवाम हु यह मप्प लट्टान गयो ॥२॥
सिह पाट थान सुमानसों मिसि कवर भारथ बुल्लयो।
हनुमतको छुटवायके मदिरा पीवें पन फल्लियो ॥३॥
हम जियत ही हनुमंतसी पर, हत्थ म्लेच्छनको पर्‍यो।
यह वत्त हुव मनरत्थ सी, सादूल सिकुलतें जर्‍यो ॥४॥
करि सीस उन्नत भ्रप्पनो, धर जोर लावातें लर्‍यो।
हिन्दुवान भ्रो तुरकानके तिह ठोर पावक विस्तर्‍यो ॥५॥
सल्लाह यट्टिय पाहिरको, यह मरन लायक गड्डयं।
सय सग हैदल पैदलं तिन काम भारथ चड्डयं ॥६॥
निशि भर्द्ध माधव नग्रते राजाधि भ्रमल उत्थपियो।
भ्रनमेल कड्डिय कोटतें निजराज पद्धर थप्पियो ॥७॥
प्राकार उन्नत भ्रामलों सामान पूरन सज्जयं।
धमजम तोप उच्छाहकी तम्बूर त्रम्बक वज्जयं ॥८॥
यम घाइ नद्दिनके सुने जरिगे रवद्दनके हिये।
यहु भ्रोर बल्लिय वत्त यो सरि कोट भारथसी लिये ॥९॥
मिशि बीति भानू प्रकासियो जिह भोर धीरज नट्ठयो।
सिसि मीरखान नवाबको यह तोर कग्गल पट्ठयो ॥१०॥

---

४ सिकुल = साकल, जंजीर।
७ भ्रनमेल = शत्रु।
८ धमजम = भगड़ा युद्ध। तम्बूर = एक बाद्ययन्त्र। त्रम्बक = नगारे, ढाम।
९ भ्रद = शब्द। नद्दिन = शब्द करने वाले।
१० नट्ठयो = नष्ट हुआ।

दोहा

यम सत भारथ भिक्खियो मीरखान यह मान ।
के छोडो हनुमंतको, के भक्खो केवान ॥११॥

छंद पद्धरी

भावें निकाम तुम कियऊ जुद्ध तिह ठौर भय्यौं हम तुम विरुद्ध ।
जुट्टे निसंक वे सून रार, लुट्टे न कोट तुम गये हार ॥१२॥
फिर एक बत्त बिनु उचित कीन, हनुमंत बगो करि पकरि लीन ।
तुम करिय बत्त यह ठौर ठौर करि बगो हन्यो स्वाई रठौर ॥१३॥
आमेरनाथको सून आय लीनो हरामखोरो उठाय ।
जो करहि वेठ जगतेश राय, तब काढि खाल भूसी भराय ॥१४॥
तें लूटि लये रिपु च्यार देश में करू तोहि दरवेस भेस ।
अब मान मूढ हनुमत छाडि हनुमत न छंडहि रारि मंडि ॥१५॥

दोहा

लिखि कग्गल कछवाह लिय भय धावन निज हत्थ ।
आतुर धावन आनि के दिय नवाबके हत्थ ॥१६॥
ले कग्गल बोले किसम किसके भारथ नाम ।
हैं उसके असमानतें कैसो उन्नत धाम ॥१७॥
पति 'रुदाना' के कंवर भारथ नाम कहाय ।
अबा धाहरको गढ लियो अर्द्ध घरीमें आय ॥१८॥
भारथ हमसें जुध करें ऐता क्या मकदूर ।
पाव घरीमें हम करें, उसके गढ चकचूर ॥१९॥

---

११ केवाण = कृपाण ।
१४ सून = मस्तक ।
१६. कग्गल = कागज पत्र । धावन = दूत ।
१९. ऐता क्या मकदूर = इतनी क्या मजाल है ।

हमसे जुध करि जीति हैं क्या उसमें है जोर।
यम अक्सहु कासीद मुख है भारत किह ठोर ॥२०॥
घर पखरको पातस्या बूंदाहरकी ढाल।
भान महीपतके मुकट शत्रुनको नटसाल ॥२१॥
भय बल तप बल, बाहुबल वलषनको वलराज।
भारथसे भारथ करै से नहि दीसत आज ॥२२॥
को हिन्दु तुरकानको, को फिरंगान समाज।
भारथसे भारथ करै से नहि दीसै आज ॥२३॥

छंद पद्धरि

कासीद आनि इम कहिय बत्त सुनि मीरखान परगह समस्त।
को करहि कालसे चाल कोपि, को जात सिंधु पर तीर लोपि ॥२४॥
को लेत पानि उर्वी उचाय को चलत पथ कर पद कटाय।
को लेत नागकी मनि हकारि को छुरत सिंह सूतो वकारि ॥२५॥
को बैठि सोर पर आगि देत अमदूत हूतको करहि जैत।
को करत सर्व अभ्र्येय अ थ को लेत पार उतराद पथ ॥२६॥
गहि लेत कोन कर चलत पोन पच्चास कोटि भुव भ्रमत कोन।
जिय चहत हलाहल कवन खाय को लेत मेरु परवत उठाय ॥२७॥
को सरस' मीचसे बीर बंक असमान कोन झेलै असक।
को लेत सीस पर काल दंड को इंद्र वज्र झेलत अखंड ॥२८॥
वहनी बिछाय सुख कवन सोय फल कवन खाय विष बीज बोय।
को मस्त मागसें करहि केलि को लेत भूमि पक्षय धकेलि ॥२९॥

---

२१ कच्चाछ=तीरका शरीरमें फँसकर लटकना।
२२. भय बल=शस्त्र बल। दीसत=दिखाई देता है।
२४ परगह=परिकर, अनुयायी दल।
२५ उर्वी=पृथ्वी। वकारि=पुकार कर, दपट कर।
२६ सोर=बारूद। जैत=विजय। वहनी=बड़ी अग्नि।

को मीरभद्रको करहि सूंम, मारथसे मारथ करहि कून ॥३०॥

दोहा

सुनिय मत्त कासीद, मुख बांच्यो खस जवाब ।
मनहु अग्निमें घृत परे प्रजरयो येम नवाब ॥३१॥

छंद निसानी

सुनि खस भारथसिंहको पीछा लिखवाया
हम 'सावे' दो लक्ख रुपये बरबाद गुमाया ।
उस रुपयोंमें मोल यक ये हमको पाया
इस 'सावा'दी मोलसे जीऊंगा दाया ॥३२॥
उस सावाके ठाकरु तुमको बहकाया
के तुम किसके बादिस्याह फुरमान बसाया ।
के तुम किसके मामले चाहत सुरझाया
के तुम किसके पील हो अरजी गुजराया ॥ ३३ ॥
के तुम ऊँचे होयके हमसे बतराया
के तुम दायँदार हो कर तेग समाया ।
के तुम उसके मामलें बिच फैल मचाया
तुझे पराई क्या परी अपनी निमराया ॥ ३४ ॥
इस हम चारों वेसको लूटे करि दाया
सद रहमत तुजको सलाम मुझको बुसवाया ।

---

(२८) बह्नी = बड़ी अग्नि ।
(३) कूँन = कौन । मारथ = मारथसिंह, कराने के स्वामी मदनसिंहके पुत्र मुख्य ।
(३२) मोल = गिरवीकी वस्तु । दायादी = दायभेद ।
(३३) पीछो = जिसकी हिमायत (पक्ष) की जावे हिमायतदार ।
(३४) फैल मचाया = उधम किया दंगा किया तोफान किया । निमराया = समेटना, निपटाया है करना । दायँदार = बराबर ।

मैं भी सच्चा खान तो तुझ ऊपर आया

॥३५॥

दोहा

बड़ बिरादर खानके सुने निरादर सत्त ।
किलम एक असमानखां, उन अक्खी यह बत्त ॥३६॥

छंद निसानी

ये सत मारथसिंह बांधिके रोस भरेगा
मुझको आया ख्वाब कल वो ही निमरेगा ।
मेरो सच्चो ख्वाब है टार न टरगा
जिसका आह्वय मारथा वो खून करेगा ॥३७॥
इस्त्री औरत बालदा खाला पकरेगा
ताई चच्ची आदि ले सब बंद करेगा ।
गढ़के अंदर कैद करि पग लोह भरेगा
यें गल्लों सुन मीरखान अंदर अजरेगा ॥३८॥
किसका कह्या न मानि हैदल ओरि भरेगा
त्रणसे भारत होयगा गज वधु गुरेगा ।
उस लाखांसे चौगना रनखेत परेगा
ओ पट्टरका पातसाह पुष खूब करेगा ॥३९॥
वो जाया मदनेसका मारथा न मरेगा
ये बेटा मल्लावदा बरबाद करेगा ।
अस्सा जानें फोजमें बिरला उबरेगा
यूं अक्खै असमानखां असमाम गिरेगा ॥४०॥

---

३७ आह्वय = नाम । जिसका आह्वय मारथा = जो मारथके नामसे पुकारा (बुलाया) जाता है ।

३९ त्रणसे = तिनसे ज्यादा । गज वधु गुरेगा = हाथियोंके झुंडके झुंड गिर जायेंगे ।

छंद पद्धरी

असमानखान अक्खी अनक, तउ मीरखान मानी न एक ।
बोल्यो रिसाय निज बल बखानि करतोलि तेग कर मूंछ तानि ॥४१॥
गढ़ बैठि गर्व कीनूं गवार, सम करो ताहि प्रज्जारि छार ।
पाहन उखारि सर्वंक्ष मूल, देऊ भ्रमाय ज्यों पत्र तूल ॥४२॥
मम कोम सत्य पितु मात सद हनुमत संग गहि करों कद ।
मम रोस ज्वाल पावक प्रचड खखहु नवाय भरखाय दंड ॥४३॥
यम कहहु वत्त कासीद जाय, तुम भरहु दड मम परहु पाय ।
यम सुनत वत्त कासीद आनि दयसीघ्र सत्त भारत्थ पानि ॥४४॥

दोहा

कहे दूत समझाय के, समाचार यह विद्धि ।
तदन कबीले असुरके रहत 'टोरडी मद्धि ॥४५॥
यहे सहिरसें रोस धरि लीनी पकरि सुमान ।
मानहु रावनकी त्रिया गही आनि हनुमान ॥४६॥
तदन गही रावन सिया परयो झूम्भि करि जग ।
बीबी जियत नवावकी पकरी भारतसिंह ॥४७॥
हाव भाव रस गुन भरी सोहत परी समान ।
किधू कामकी कामिनी को कवि करत बखान ॥४८॥

छंद त्रोटक

यवनी तिय हूर किधों उतरी पनगी नग काम किधू पुतरी ।
कच स्याम सचिक्कन सीस लसै ससि पूरणको मन राहु ग्रसै ॥४६॥
मृगयामदकी सरि बिन्दु दियो शशिके मनु मध्य शनी उदयो ।
उपमा यक ओर चुभी चितमें ससि रोहनि अंक धरी हितमें ॥५०॥

---

४५. टोरडी—एक मामूली ग्राम है जो मालपुराके पास जयपुरसे दक्षिणकी ओर है, जहां पर एक बड़ा जलाशय है ।

मुख बक मनो युग भ्रग भरे कुसुमायुध ज्या धनु तानि धरे ।
श्रुति कुंडल छाटिक हीर जरे मुख मीन मनो मुकतानि भरे ॥५१॥
मुकता गनि बेसर नाक बनी मनुकीर चुगत अनार कनी ।
श्रम स्वेद कपोलनमें झलकैं अलकैं दुहु नागिन सी तलकैं ॥५२॥

अधरायुग बिम्ब पके फलसे
मनु लाल प्रवालन पंक्ति लसे ।
अधरानि विचै द्युति दंत बनी
विचि मानिक मानहु हीर कनी ॥५३॥

मृदुहास हुलास हिये न रुक्यो
भरिके मनु कज सुधा उरक्यो ।
द्युति कंठ कपोलनकी झलकी
उन कंठनते धुनि कोकिलकी ॥५४॥

मयुरी सुनिके धुनि काम बढै
मुखते मनु मंत्र मनोज पढै ।
भर चपक डार सुगंध भरे
मनु कंजसे नाल दुहूँ पसरे ॥५५॥

चुरियां मुकरावलि पानि हरी
गुरु गेह मनु बुध सज परी ।
गजरे मुकतानिके पानि लसे
मनु दामिनिमें झपि पंक्ति बस ॥५६॥

अँगुरी तिम हेम सलाकिनि सी
मुँदरी जरि मानिक मद्धि मसी ।
तिनकी उपमा कवि हेरि न्यय
गुरु मोन अगार मनो उदय ॥५७॥

५२ तलकैं—तलफना छिटना रपटके चलना ।
५६. गजरे—एक जेवर विशेष जो हाथमें पहिना जाता है । सजपरी—सज्जित हो गया ।

मेंहदी कर कोमल बूंद भरी,
मनु कंजमें इन्द्रवधू बिथुरी।
उर बीचि उरोज स्वयंभु लसे
तटनी तट मानहु कोक बसे ॥५८॥
उमगी सुरली कुच कोर कढी
मनु बूडनि कंज कलीनि चढी।
भमली तन रोम तरंगनि सी,
मधु सिंधुमें नाभिय कंज लसी ॥५९॥
भर श्रोणित पीठि विभाग नयो,
कटिको वित लूटि नितंब लयो।
रवि रूप जराव जरी रसना,
मुकता हिम नीलम हीर घना ॥६०॥
बुध सुक्र बृहस्पति भोम सनी,
मनु तोरन कामके भोम तनी।
उपमा यक ओर अपंभमकी
युघ अंग बनी हिम रंभमकी ॥६१॥
अरुनाई महाउरकी दरसे
तरवे मनु पावक से परसे।
घटककी पट मेचक मोजमकी
पनही मुकता जरवोजनकी ॥६२॥
सुरली बनि सूथनि मारनकी
सरकी सर स्याम पजारनकी।

---

५८. स्वयंभु—शिव, महादेव। तटनी—नदी।

५९. बूडन—बीर बधूटी बीर बहूटी।

६०. श्रोणित—खाव। रसना—किंकिनी, करधनी कणकती।

६२. तरव—पैरके तलप। पट मेचक—काला रंगाम। पजारन—इजारबंद नाडा।

कुरती कंचिया मखतूलनकी,
उर माल चमेलिय फूलनकी ॥६३॥
सिर सारिय स्याम विदशनिकी
तिनप हिम कोर सुवेशनकी।
जिनकी उपमा यक भोर घटी
बिजरी ससि कोर मनू लपटी ॥६४॥
झर लागि सुगंध मना झपटी
अलियावलि अंगनकी लपटी।
तनकी सुकमार मय तरनी
लखि धीरजको न धरै धरनी ॥६५॥
मुनि देवनको मनहू बिचल्यो,
चित भारयको तिनपै न चल्यो ॥६६॥

दोहा

नागरि गुन आगरि नई, सुंदरि तन सुकुमारि।
गहि भारय निज वस करी, सखी म अष्टि पसारि ॥६७॥
दान वीर रन प्रबलता जुद्ध बुद्ध तप वेश।
क्यों बिगरै तिह नृपतिको लखै म पर तिय लेश ॥६८॥
कूक फजर कटकों परी धरी न किलमूं धीर।
सब दिन रोजे सम गयो, भड़ी विषम कल पीर ॥६९॥
समाचार अनुक्रम सहित सुने गही तिय सेम।
पमग पिटारेके परे, भरि सिर धूनत येम ॥७०॥

छंद भुजंगी

परयो भीमको पूत ज्यों सक्ति मारयो
मनु मच्छिको तोयते हीन डारयो।

६७ कूक—इस्म।

मनु नाच सीसी सुरा हीन नसी,
परधो पख हीनू धरा आनि पखी ॥७१॥
परधो नाग भूमी मनू भीम कुट्यो,
परधो भूमि तारो मर्नू गैन तुट्यो।
मनू भाव हीन पुर्‌यो कुंभ रीतो
भई भफ खाली पर्‌यो आनि चीतो ॥७२॥
पर्‌यो ब्याल ज्यों कीलमी बज्‌ किल्लो
मनू भक्सि तारक्ष पीछे उगल्ल्यो।
बटू बायक बेग मानू उछाल्यो
पर्‌यो छाग भूमी मनू तेग मारयो ॥७३॥
पर्‌या म्लेच्छ भूमी वसू याम छोट्यो
जर्‌यो अंग जाको मनू भागि भोट्यो।
भला पीर पैकबरोंको पुकारं
जरी देहको रोपते फेर जारें ॥७४॥
बके दीनताक किते बन टेरे
कबीले परे काफरा हृत्य मेरे।
परे बिल्थुरे भूमि जाके खिलूना
कहा कब आने हमारे ललूना ॥७५॥
करी कोटमें कैद बीबी हमारी
रमैं भाजलो रगकी चन्नसारी।
पर्‌यो त्रासतें जीव सताप ताके
जर्‌यो लाहु जंभीरकी ठोर जाके ॥७६॥
बिछुना बिना सोवना क्यों सहेगी
हबा बदके फन्दमें क्यो रहेगी।

(७२) झंफ—झपांग। चीतो—चीता, सिंहकी जातिका एक शिकारी पशु विशेष।
(७३) तारक्ष—गरुड़। छाग—बकरा।
(७४) ब्बद्दप—अम्मायें, स्त्रियां।

सुरा मांस छीनी रही मा कदे ही
बिना खान पान भई छीन देही ॥७७॥
सुनै हिन्दुके बैन सीना धरक्के
चिरी पिंजरैंकी परी ज्यो फरक्कै।
बढ हिन्दुके बंधसे यो डरेगी
निराधार किल्लो सफीलो गिरेगी ॥७८॥
उसीको लखै धीरता ना धरेंगे
कही जाय ना हिन्दु कसी करेंग ॥७९॥

दोहा

करि साहस ऊठे किसम झिलम टाय तनु झल्लि।
पूरनागरन ठोर परि चले प्रबल दल मिल्लि ॥८०॥

छप्पय

चढ़ि चल्लिय मेछान, मान गरवावलि मिल्लिय।
हल चल्लिय हिन्दवान खलक जुगनि खिल खिल्लिय॥
घर झुल्लिय परिभार पहुमि वसवान उचल्लिय।
हल मिल्लिय परि जोर, शेष मंहि फन पर सल्लिय॥
लखि ओर सोर दिल्लिय सदन, तदन तोर दरसावियो।
कर भली भली माधव नगर येम सजी कर भावियो ॥८१॥
रचे प्रबल मारचे करि मेछन वन कट्टिय।
दीनी भूमि न्रार मोट सगर थिर थट्टिय॥
करावीन जम्बूर तुपक पिसतोल तयारिय।
ठोर ठोर नद घोर मचे लुकमान हकारिय॥
झर तुट्टि-तुट्टि अग्नी परत, लाय भवनी मनु लग्गई।
घन घोर तोप आपाव लों दुहू ओर यम दग्गई ॥८२॥
घरा धूम बित्थुरे तोय ऊच्छरे सरोवर।
गिरे शृंग नग तुट्टि ताम प्रज्जरे तरोवर॥

---

८१ वसवान—बसने वाले।

नवी कूप नद सूकि, कूक कातर उर फट्टिम।
आवट्टिय जल ओर सोर बुद्धं मोर उपट्टिम॥
सर धून धून दिगपाल डरि कसकि कमठुनि पिट्ठि भर।
धर धुज्जि सलातम तल वितल शेष सलस्सम छुट्टि धर॥८३॥

मेक मास वारुव्द हिन्दु तुरकान हुचक्किय।
हल्लो करि फिरि हल्लि देस भुवलोक भचक्किय॥
मीरखान माराथ करत मारथ दह्न निभ्रत।
दैत्य देव मिलि युद्ध करत मनु काल प्रलय कत॥
भरि बत्थ बत्थ गलबाह करि येम असुर हिन्दुव मिलत।
मानहु अमक दिन बिच्छुरे, उर मिलाय वधव मिलत॥८४॥

घर अम्बर घन धूम सोर झर बिज्जुर चक्किय।
तोप-सब्द घन घोर तुपक भस असनि वरक्किय॥
नाचत सूर मयूर सस्त्र-खद्योत मलक्किय।
गरि कातर जैवास भूमि रुहिराल खलक्किय॥
किल्ले नजीक मिल्लै किसम, जिसे सोर झर पर वरत।
आषाढ़ मनहु बरषा समय, समुख आनि सलभा गिरत॥८५॥

छंद दीरघ नाराच

घटा घुमडी घोरिके आषाढ़ अभ्र सो भिर्‌यो,
प्रकाश भानु को रुक्यो प्रकाश धूम धू घर्‌यो।

---

८३ नद्यवर—वटपर, पेड़। आवट्टिय—औटना, उबलना। उपट्टिय—उत्पन्न हुआ। धर—स्थान।

८४ हुचक्किय—हो चुकी समाप्त हो गई। भचक्किय—चमत्कृत हो गये। माराथ—युद्ध।

८५ सोर झर—बारूदी झड़ी। असनि—ओले। सलभा—टिड्डी।

कमान जाल तोपके नवाल कोटपै भवै
जम्बूर रध्र रध्रके गिरेन्द्रसे रसै लवै ॥८६॥

अनेक मेक तोरकी दुरुह तोप आहुर
उडै दुरगकी सफील फील फोजके गुरै।
हकारि आत सांमुहै मुसल्ल हल्ल मुल्लिकै
मतै बकारि हिन्दु सीस आसमान तुल्लिकै ॥८७॥

कितेक लत्थ बत्थ ह्वै अचेत भूमिपै गिरै
किते कुठार खग्ग धार सेल खजरू सरै।
कितेक हाथ पावके विहीन भूमिपै लुटैं
कितेक सीसके कटे कबध ऊठिके जुटैं ॥८८॥

कितेक गिद्धनीनको अघाय गूद अप्पने
कितेक सुद्धिके विहीन मार मार जप्पने।
कितेक ईस पोय लीन सीस मुंडकी गुनि
कितेक खप्र खोपरी बनाय जुग्गनी चुनी ॥८९॥

कितेक वीर जुद्धमें अधीर होय बक्कही
कितेक मूत सेघरी अघाय श्रोन छक्कही।
कितेक हूर अच्छरी विमान बैठि उत्तरी
कितेक जात व्योमको मनो अरट्टकी घरी ॥९०॥

---

८६ तोपके नवाल—तोपके निवाले, गोले। रसै—रसने लगे, चूने लगे टपकने लगे। लवै—लो लपट।

८७ अनेक मेक तोरकी—अनेक प्रकारकी। आहुरे—चलाई रही है। दुरंग—किला। सफील—दीवार। फील—हाथी। गुरै—चले। सामुहै—सन्मुख।

८८. लुटैं—लोट रहे हैं। जुटैं—युद्ध कर रहे हैं, जुट रहे हैं।

८९. अघाय—तृप्त करके। गूद—मांसल स्थान।

१ अरट्ट—रहँट, कुएसे पानी निकालनेका मालाधार यंत्र।

छप्पय

येम नब्बके असुर मास मुर अगुन धुमडिय।
मीरखान अप्पनी जीयन आशा उर छडिय॥
लोह बोह वास्त्व जुद्ध हल्ले करि हारे।
पैदल हैदल परे मीर कितने रन मारे॥
कबीले छुट्टिनिके अरथ कपट करथ केते करे।
ननु परे हत्थ किल्ले तदपि अरथ मत्थ अवनि परे॥६१॥
येम असुर धर उद्ध पर्यो अनुचित अप्पन पन।
मनहु पाप गुन तुट्टि किधू किरवान मुट्ठि खिन॥
स्वास ताप उर कप मुख वेवरन फैन जुत।
रोप प्रलापहु दुक्ख मगन सताप नारि सुत॥
करनैलखान असमानखाँ दुहुं आनि धीरज दयो।
कबीले फजर छुटवाय है सब नवाव अचल भयो॥६२॥
धर चलाय बुल्लयो मीर असमान सुधिवर।
कुटिल नब्बके कोम बहुत हुसियार जुद्ध पर॥
असि उन्नत प्राकार भरख सामान आन अत।
मीसे सोर अपार पंच हज्जार जुद्ध रत॥
जुट्टे अनक दिन आज लौं अब अनेक विन जुट्टि हैं।
हनुमंत छड्डि पायन परो सदन कबीले छुट्टि है॥६३॥
आनी चित मीरखा मीर असमान कही वत।
सर्वोपम अव सिद्धि सरख श्रीजुत लिक्खे खत॥
मिटयो वैर अप्पनो रारि हमसे मत मड्डहु।
हम छंड्डै हनुमत मारि हमरी तुम छंड्डहु॥

६१ मास मुर अगुम—नौ महीने तक। बोह—प्रहार।
६२ धर उद्ध—पृथ्वी पर। अंजस—अस्तबल।
६३. धर—दूत।

तुम कह्यो कबर सोही करै ज्यान माल कछु चित चही।
यह बत्त निरंतर जानियो हम तुम अंतर है नही ॥६४॥
बचि खत्त मारत्थ, करय पिच्छी यम लिक्खिय।
तुम बेगम हम पकरि कैदखाना विचि नक्खिय ॥
तुम छट्टो हनुमंत कदखाने मत रक्खहु।
एक लक्ख भरि दंड नारि छुट्टनकी भक्खहु ॥
नन होय बत्त मजूर यह जुष हम तुम फिर जुट्टि हैं।
भरि दंड मानि पायन परो तदन कबीले छुट्टि हैं ॥६५॥
कै दारुन मह्हि किल्लि कालबेमिन बसि किन्हो।
मनहु मुसाफिर वित्त ठगन मादिक ठग दिन्हो ॥
किधू प्रेत वक्करयो ताप मत्रादिक तच्यो।
परयो प्रपंचय हत्थ मनहु साखामृग नच्यो ॥
उच्चर्‌यो खांन सोही कर्‌यो, यों मति कीमत मानखां।
मीरखां दारु-योपित भयो, धार गह्यो असमानखा ॥६६॥
करी एक उमत्त मस्त ईरान विलायत।
पाटम्बर जर तार भार मेवा सोखायत ॥
पेटी भरि मोकले एक लक्ख रुप्ये ढाली।
परसी सजु कटार जूट्टि पिसतोल बुनाली ॥
सुकुमार धनुष तुन्नीर शर सार टोप पक्खर भिसम।
करि मित्र भाव हनुमंतको बैर छट्टि भेजे किसम ॥६७॥

सोरठा डिंगल

यम भक्खी असमांण पारस भूठी नहि पढी।
तैं राखी तुरकाण रजपूती हिंदवाणरी ॥६८॥

---

६५. पिच्छी—पाछी, वापिस।
६६. कालबेमिन—सांपको पाळने वाली जाति विशेष। दारु योपित—कठपुतली।
६७. सोखायत—सौगात, उपहार, तोहफा। मोकले—भेजे बहुत। ढाली—ढली हुई रुप्ये सम्पतके।

हिंदुवाणो तुरकाण राह दुहू जस उब्बरै।
पारथ ज्यूं भुज पाण भारथ मझ्यो मारया ॥९९॥

हटियो बल हिंदवाण, ऊमटियो बल आसुरां।
मिटियो देख प्रमाण घटियो भारथ मारयै ॥१००॥

सबला पण साबूत, रहियो भारथ मारयो।
तुरकारां तावूत, लागां मग्ग बिलायतां ॥१०१॥

कंपै घाव कराहि निशि दिन चख झंपै नहीं।
मेछारां घट मांहि भाय लगाई मारयै ॥१०२॥

ठहरै जीव न ठाहि आहि पुकारै ओदकै।
मेछारां घट मांहि भाय लग्गाई मारयै ॥१०॰॥

करडी निजर कृसाण धारी कूरम मारया।
मेछारै अप्रमाण लग्गी लाय बिलायता ॥१०४॥

साय तडच्छा खान धारा भयसों मारया।
असुराणी आधान अवधि बिहूणां ऊगली ॥१०५॥

किलमा घाले काय के घाले आगो कंवर।
घाली-नाहर आय भाले फेर न मारया ॥१०६॥

---

९९. पारख—परीक्षा। तुरकाण—यहां पर 'तुरवांण' पाठ होना चाहिए, जिसका अर्थ होगा तुरत (शीघ्र वर्तमान समय) के अन्त तक अर्थात् अब तक।

१ ऊमटियो—उन्मत्त हुआ। घटियो—किया।

१ १ साबूत—सम्पूर्ण।

१ ३. ओदकै—चमक कर, चौंक कर। आहि—हाय हाय। भाय—भय।

१ ४ करडी—कठोर। कृसाण—अग्नि। लग्गी लाय—अग्नि लग गई।

१ ५. आधान—गर्भ। ऊगली—उगलना निकालना अर्थात् बिना समय ही गर्भ गिर जाते हैं।

१ ६ के घाले—क्या धंधे लगा। घाली नाहर—सिंहका स्थान मांद। भाले—देखे।

सारो खोय सबाव, पडि फीटो पावां पडया ।
निहुरा खाय नवाव नारि छुडाई निहुसैं ॥१०७॥
सुरकारै मुख सोय, रती न राख्यो भारथा ।
मुवो न कोई होय आलम आखे आपनै ॥१०८॥
जुटै दुहू दस जग आहुटै हिन्दु असुर ।
रंग हो भारथ रग उण वेला दे आपनै ॥१०९॥
सूर अपच्छर सग, हूर रवद्दाहू मिलै ।
रग हो भारथ रग उण वेला दे आपनै ॥११०॥
ईश उमा अरधग भर प्यालो मे भगरो ।
रग हो भारथ रंग उण वेला दे आपनै ॥१११॥
अमलांरा उछरंग गलिया पलिया योगणा ।
रग हो भारथ रग उण वेला दै आपनै ॥११२॥
गोष्ठि बिरादर संग प्याला मद पावै अपिबै ।
रग हो भारथ रंग, उण वेला दे आपनै ॥११३॥

छप्पय

विमन सेख घर परयो परयो घर सेख यनायत ।
परयो विलायत खान ल्हास पूगी विल्लायत ॥
परयो खान मुलतान खान असमान सरोभर ।
जूटि जग जमसेर, बाहि समसेर परयो घर ॥
इकावन मीर ठाये परे पंच हजार सरायते ।
कमनेत नेत अघी अमुत असि समेत आपायते ॥११४॥

१०७ पडि फीटो—लज्जित होकर । निहुरा खाय—खुशामद करके, अनुरोध करके । निहुसै—मुशकिल से ।
१०९ आहुटै—जोशमें मरना । रंग हो भारथ रंग—हे भारतसिंह तुमको धन्य है उण वेला—उस समय ।
११० रवद्दाहू—म्लेच्छ ।
११४ ल्हास—लाश । ठाये—मुख्य । सरायते—लड़ने वाले, सिपाही । आपायते—आप रखने वाले अपनापन रखनेवाले, निकट संबंधी ।

येम नारि छुटवाय मेछ अपने मग लग्गिय।
मनु डाहल सिसपाल, खोय धनको खल भग्गिय ॥
सकल होय बलहीन सबल भारथ लगि टक्कर।
जात मनहु अजमेर, पीर जारतिकों फक्कर ॥
मद मुक्कि सुक्कि वैबरन तन जीव सरक सीना धरक।
परि काल फंद मानहु कढ़े, हुय तग्गा तग्गा तुरख ॥११५॥

दोहा

नर हैमर वमने सकल येम असुर मग आय।
मनहु बनिक घर अप्पनै गमने मूल गमाय ॥११६॥

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपालदान विरचित लवाना युद्ध तृतीय प्रसंग समाप्त।

—०—

११५. डाहल—डाह करने वाला ईर्ष्यालु, डाहल जाति विशेष। जारति—जियारत धार्मिक-यात्रा। वैबरन—वैवर्ण्य; रंग फीका पड़ना। हुय तग्गा तग्गा—तागे तागे हो गया छिन्न-भिन्न हो गया।

उणियारा युद्ध

दोहा

प्रेम 'मदान' सुकवि जुय, वरन्यो विविध प्रकार।
अब 'उनियारय'को कछू जिहि विधि बग्गो सार ॥१॥
होय निबल बलहीन सल द्रुम पल्लव मनुहारि।
कृष्ण कुञ्ज दर कृष्ण फिरि समर लई संमार ॥२॥

छप्पय

करि मुकाम पुर घेरि, सोर बहु घोर प्रजारिय।
गहि दुरूह सिकदार हाटि पट्टन संभारिय॥
हेरिय संमरि माल, लुट्टि सभर पुर लिन्हिय॥
निमक दरिखनि रुद्धि घाव दम्मन उर दिन्हिय।
गोसक निधान फुरमान भप, बिकल सोच भ्यारों बरन।
तुरकान सोर बग्गो बहुरि बल अनीति सग्गो करन ॥३॥

दोहा

तुरक सोर बग्गो तदिन फिर समरपुर भाय।
अब आगम अंगरेजको बरनै सुकवि बनाय ॥४॥

छंद पद्धरी

अम सुनिय बत्त अगरेज कान आमो कि तीर मुक्यो कमान।
मातंग हेरि मानहु मृगीश मानहु पनग्ग लखि खगाधीश ॥५॥
असमान भ्रमत मानहु भयान लखि भुव बटेर तुट्यो सिचान।
मृग हेरि मनहु चीता मतग झंप्योक बाज चंप्यो फुलग ॥६॥

---

१ बग्गो सार—होदा बजा तलवार चली।
२. संमर—सांमर झील।
३. दुरूह—दोनों तरफके। सिकदार—चौकीदारोंको। दरीब—क्षेत्र, मोहल्ले।
४. मातंग—हाथी। खगपीश—गरुड़।
५. भयान—भयानक। सिचान—शिकरा एक प्रकारकी शिकारी चिड़िया। मतंग—पुष्ट, मोटा झंप्योक—झपट कर। चंप्यो—पकड़ लिया। फुलंग—पक्षी विशेष, एक

अंगरेज येम जरएल साव आयौ अर्धक रुद्धयो नवाब ।
लखि भयो ताहि सगराम लोप खल करी नैक साती न सोप ॥७॥
दिय लोह कील अंगरेज आय, सब वियऊ तोप ठाठनि गिराय ।
गिरवाय शस्त्र सब किये दीन, कुरमी समान रिपु घेरि लीन ॥८॥
करि भाव हीन दोले निसक उद्दित नवाबके मास अंक ।
नव लाख रेख दिय 'टूक' थान मालय समेत दुगनी अखाम ॥९॥
द्रढ़ भयो म्लेच्छ फिर टूंक आय धरि शीश छत्र चामर चलाय ।
यम रच्यो थान तुरकान मान धरियार द्वार नोबत निसान ॥१०॥
उन्नत अवास प्राकार धारि बाजार हाट पट्टम सवारि ।
चहुँ ओर कूप आराम कीन महजीत गुमज कब्बर नवीन ॥११॥
करि येम राज फिर मरयो मीर तिहि ठोर बैठि दवलाउजीर ।
उन्नत गरूर पोरष अपार सब खयो वेश हुम गय संभार ॥१२॥

दोहा

मीरखान जा दिन मरे, धरे न किलमू धीर ।
ता दिन कछु समता धरी बैठे दवलउजीर ॥१३॥
यम कहि रोवत कित गये सब हिन्दुमके साह ।
असुर घरनि सब नारि नर परे घरनि बेहाल ॥१४॥
यम बोल आसुर तनय रक्खहु मनमें धीर ।
मुझको जानू मीरखां अक्खे दवलउजीर ॥१५॥

प्रकारकी बगला जो काले रंगकी व सफेद रंग व बादामी रंगकी होती है जिसको कुलंग भी कहते हैं। यह पक्षी आकाशमें एक कतारमें होकर झुण्डके झुण्ड उड़ते हैं। हिन्दी कोषमें दुर्लंगका अर्थ 'चटक' लिखा है। मेरे विचारसे यहाँ कविका आशय चटक ही होना चाहिए। बाज—एक शिकारी पक्षी।

७ अर्धक—अचानक। साती—सत्य।

८ दिय लोह कील—कील ठोक दी, वशमें कर लिया।

९ करित नवाबके मास अंक—नवाबको भाग्यहीन समझ कर।

११ महजीत—मसजिद। कब्बर—कब्र।

दिन छिनदा उत्पात चित, रोप सक्नता रत्त ।
अगुन घोर भ्रकुटी असर, भयो असुर उन्मत्त ॥१६॥
उनियारय भीमो नृपति वीर पराक्रम शक ।
ता भयतें भासुर तनय, रहत मानि उर सक ॥१७॥

छप्पय

देश कोस प्राकार कूप आराम नदी नद ।
धवल धाम हिमकलश द्वार वारन मत्तं मद ॥
हय मज्जहि धरखूर सेन चतुरंगनि सज्जहि ।
वज्जहि नद निहाव मनहु भद्दव घन गज्जहि ॥
तज्जहि प्रवास गिरि दरिन गहि अरिगन भज्जहि मानि भय ।
यह घोर भीम रज्जहि अवनि, लखि सुरेश लज्जहि बिमय ॥१८॥
मेघाडंबर मढि सूर सज्जें सन्नाहुनि ।
फौसों फरकि निसान गरक छाजी गज गाहुनि ॥
धुनि तोपन समरिय भरी उर होय धररधर ।
नयन रोस विरधुरे असुर प्रज्जरे धराधर ॥
नर सूर वीर घन दस प्रबल प्रबल पराक्रम खल दमन ।
करि येम राज भीमो नृपति स्वर्ग मग्ग कीनो गमन ॥१६॥

दोहा

भीमो सुरपुर भिस्सयो 'उनियारें' नरनाह ।
फतयसिह बैठें तखत धर पद्दर पतस्याह ॥२०॥

---

१६ अगुन—विगनी । घोर—डरवर, त्योरी, टेढ़ी नजर । असर—असल हीन सप्तवद ।

१८ वारन—हाथी । निहाव—प्रतिध्वनि, नोबत निहाई । रज्जहि—राज करता है । बिमय—वैभव ।

छंद पादाकुल पराकृत भाषा

सो रीति क्वं मीम गेहा, तत्थे पुत दिग्घ सनेहा ।
थप्पे गड्ढा गड्ढा घोरा, थप्पे पुर्न घूम भमोरा ॥२१॥

दोहा

हल्ले तोपन लग्गहि सोर सुरंगन जाय ।
किल्ले घूमं भमोरके, लगै न म्रान उपाय ॥२१॥

ते किल्लो मीमो नृपति किग्यक पूतके हत्थ ।
तिहिं सुरेतके पूत फिरि मिलि कीमू पर हत्थ ॥२३॥

फतर्यसिहको मानि भय, मिले असुरसों जाय ।
किल्ले मध्य मलेच्छको दीन्हो अमल कराय ॥२४॥

इत उनियारो ढूक उत मेर मिलत वहूं राज ।
तदपि असुरको चित वध्यो, फिर घर दब्बन काज ॥२५॥

आये चढि नृपके नगर आसुर करन अकाज ।
फतर्यसिह पठ्ये सुभट तिहिं पुर रक्खन काज ॥२६॥

सुभट नृपतिके दोय सत, आसुरके शत चार ।
कढी कूवत मुलतें किलम कर कढ्ढी तरवार ॥२७॥

कूवत तेग कढ्ढी किलम जिमों प्रथम लिय मार ।
वहुरि नक्कनि आसुरनि पुरतें दिये निकार ॥२८॥

तदपि नक्कन आसुरन, भार भरी धुध मंडि ।
वीस असुर धरनी परे, अवर गये रन छंडि ॥२९॥

२१　गेहा—घर। तत्थे—वहां। पुत—पुत्र। दिग्घ—दीर्घ। थप्पे—दिये। थप्पे—स्थापित किये।

२३.　सुरेत—सुरतसिंह।

२४　दीन्हो अमल कराय—हुकूमत करा दी।

२५.　मेर—सरहद सीमा।

फत्तेसिंहकी करि फतह, बहुरे सुभट समाज ।
मनु गयदनि मुत्थ हनि, भाये थहि मृगराज ॥३०॥
मीरखान सुत सभरे जरे फरेजनि लुक्क ।
भासुरके भतहपुरनि परी भयानक कुक्क ॥३१॥
कूक फजग सुनि मीरखा, भासुर दवल उजीर ।
करी वध चतुरगनी, धरी न उरमें धीर ॥३२॥

छंद पद्धरी

खिजि चढ्यो खान दवलाउजीर गज वाजि तोप रथ पक्ति मीर ।
यसमाम फील नोवत निशान, जगी सबाब सब सावधान ॥३३॥
कमनेत नेत बधी सिपाह सब सिलह पूर मिट्टे सनाह ।
चवगान जान रनवीर खेत ताजी तमाम पक्खर समेत ॥३४॥
करि गमन ग्रस्त रवि सधि काल कुहु काक स्वान कूके कराल ।
समसान सम्मुख कीनो पयान बेताल भूत भूखे भयान ॥३५॥
दक्खन दिशमें बोल्यो उलूक विपरीत सम्मुख फयोकर कूक ।
विकराल सद्द श्रगाल भान कूके कराल दक्खिन मुजान ॥३६॥
वामांग डक्कनिय पत्ति भस्व दक्खिन भुजान हुक्यो भनस्व ।
जगस विशाल किय रुदन पुष्टि पशुकास जन्तु मग परयो द्रष्टि ॥३७॥
कुमहीन भ्रग चर्मा वितुड सबील उद्ध सिर महिप मुड ।
रंडास बाल बियुरे असुभ्र लज्या बिहीन सिर रिक्त कुम ॥३८॥

---

३० बहुरे—वापिस लौटे । थहि—मांद ।
३३. यसमाम—यह सब । सबाब—असबाब सामान ।
३४. मिट्टे—वेष्ठित पहिने हुए ।
३५, भयान—भयोत्पादक ।
३६ फयोकार—शृगालिनी ।
३७ डक्कनिय पत्ति भस्व—डाकनीके स्वामीका घोड़ा, अर्थात् कुत्ता । भनस्व—गधा ।
पशुकास जन्तु—सर्प ।
३८. भंग चर्मा वितुड—हाथीके समान चमड़ा है अंग पर जिसके । सबील—सर्प ।
रंडास—विधवा ।

सर्वंगि सीस मुंडित विहाल मग लोपि जात बामांग ब्याल ।
घृत पात्र रोम चर्मा निहार क्रम हीन रजक द्विज हेमकार ॥३६॥
मग जटिल सीस लिय सग स्वान कर श्याम पात्र वर्जित उपान ।
अपशकुन भयेउ म्रायांत एक अपजोग पराजयके अनेक ॥४०॥
उदय प्रभात गत भई राति ज्ञारत नरेशकी पुर जराति ।
बहु किये अनीति खल करन जग यह सुनिय वत्त नृप फतयसिंह ॥४१॥

दोहा

सुनत कोपि किरवान लिय फतयसिंह महाराज ।
मनहु इंद्र कर कुलिस लिय, गिरि-पर कट्टन काज ॥४२॥

छंद त्रोटक

सुनके नृप के उर कोप बढ्यो मघवा मनु दानव सीस चढ्यो ।
ठठुरीनि जुटी जुरि तोप हकी भरि पेटिय समिल सोरनकी ॥४३॥
गमने मनु सिंधुर स्याम गिर हय पक्खर बिंटि सनाह नर ।
गजराजनि घंटनि घंट बजे सुनि आतुर कातर प्रान तजे ॥४४॥
सब सूर सनाहनि भट जरी हय हींस नगारनि ठोर परी ।
भरि बिज्जुर सी कर तेग लसै तिनको लखि ईस मुनीश हँसै ॥४५॥
लखि सेन लिये कर सस्त्र खिली मिलि जुग्गनि एक ही संग चली ।
भुव अतुनसी मस सेन चले पत्रधार पल्लचर सग हले ॥४६॥

---

३६. सर्वंगि—सब एक जाति विशेष। रोमचर्मा—छीपका ऊँटके चमड़ेका बरतन। हेमकार—स्वर्णकार, सुनार।

४० मग स्पान—रास्तेमें जटाधारी मनुष्य कुत्तेके साथ काली हांडी लिए हुए जूते रहित मिला।

४१. अराति—शत्रु।

४३ ठठुरीनि—तोपका ठाठा। जुटी—बैलोंकी जोड़ी। जुरि—जुत कर, लग कर। समिल—साथ। सोरनि—बारूद।

४६. पत्रधार—पक्षी। पल्लचर—मांसाहारी।

सब सूरनके तनु रोप तबे सिनको लखि बावन वीर नचे ।
उडि खेह सुरों रवि मंद भये नभ हूर विमाननि छाय लये ॥४७॥
रज डवर भम्भर मग्ग चढे भ्रम कोक विभावरि शोक बढे ।
नभ देव विमाननकी अवली उडि गिद्धनिके गन संग चली ॥४८॥
दल येम नरक्कन के उमडे धुरवा मनु भद्दवके घुमडे ॥४९॥

दोहा

अचल नरक्कनि आसुरनि, जुट सुभट दुहुँ ओर ।
मार मार मुख उच्चरे परी नगारनि ठोर ॥५०॥

छंद मोतीदाम

मिले दुहुँ ओरनि हिंदु मलिच्छ मनो शिव सेन प्रजापति स्वच्छ ।
पनंकिय मेछ भजी नन मूर ठनंकिय तेज हुतासन सूर ॥५१॥
हनंकिय बाजि मिले दुहुँ ओर धुनंकिय तोप धुनी उडि सोर ।
मनंकिय तोप तुपक्कनि भक्ख मनंकिय आमिख-आरन लक्ख ॥५२॥
मनंकिय तीर कमाननि ओक सनंकिय पक्खनि गिद्धनि सोक ।
ठनंकिय मत्त मतंगनि घट घनंकिय घूघर पक्खर घट ॥५३॥
मनंकिय अन्न असोम अलाप बनंकिय कातर सद्द कलाप ।
धनंकिय नाटिक भैरव थाप दनंकिय गिद्धनि आमिख खाय ॥५४॥

---

४७ विभावरी—रात्रि ।
४८ धुरवा—मेघ । भद्दव—भाद्रपद ।
५१. पनंकिय—प्रण किया । नन—नहीं । मूर—मूल निश्चय । ठनंकिय—मस्तका कमर ऊपर आया पक्का हुआ, दृढ़ हुआ, टन्टन आवाज हुई ।
५२. हनंकिय हिनहिना कर । धुनंकिय—ध्वनिकी, आवाजकी चली । गनंकिय—गरणाट, जोरसे आवाज फैली । तुपक्कनि भक्ख—तोपोंकी खुराक बारूद । मनंकिय—मन किया इच्छा की, आमिषआरन—मांसाहारी ।
५३. मनंकिय—मन मन शब्द किया । ओक—स्थान । सनंकिय—सन सन शब्द किया । सोक—वेगकी स्थान । घनंकिय—बजी ।
५४. पनंकिय—किया । बनंकिय—विरक्त भाषण । दनंकिय—चौंकी गर्जना की ।

खनकिय सायक धार करूर भर्नंकिय झाँझर रमनि झूर।
धनकिय सीर वरच्छनि छोह ननकिय वोह विलंवनि लोह ॥५५॥
फनकिय धाव पर्‌यो सिर भार घुनकिय शंकर मुंड निहार।
किनकिय जात सराह सनम रनकिय बीर नरूकनि मम ॥५६॥

दोहा

सिज्यो सान आयुध भली, कर कढ्ढी तरवार।
पढर पतिकी सेन पर आयो किलम हकारि ॥५७॥
पक्खर टाप सनाह युत पानि उदग्गन खग्ग।
सग बीर ले पच सत लई तुरग्गनि वग्ग ॥५८॥

छन्द पद्धरी

हय खूर धूर लग्गी अकास उडि गये पलच्चर मानि त्रास।
धुर्हुं ओर तोप दग्गी करास जगी असाध्य मनु जेठ ज्वाल ॥५९॥
मिलि सोर-धूम तम अंधकार मारुत प्रचंड पंखनि प्रचार।
पर अप्प नकनन परत जान, जुध करत बोल बंधव पिछान ॥६०॥
यह सोर हिन्दु तुरकान जुट्टि किरवान पान इभ कुम तुट्टि।
उपमान आन कवि मति अमत घन मद्धि मनहु बिज्जुरि खिमत ॥६१॥
कछवाह मेच्छ गसबाहु कीन करि दाव घाव पोरस प्रवीन।
हय पीठि हुते धर परत आय जुध करत देव दानव सुभाय ॥६२॥
खजरकटार घुकुमार मार नटसाल याव पजर दुसार।
गिरि परत भूमि पग उरझि मत मादिक असाध्य मानहु परत ॥६३॥
कर धार सार वाहत अखड मुख मार मार परि करत मुंड।
चंचल तुरीनि कढि प्रान जास मनु मीन फद परि तरफरास ॥६४॥

---

५५ मूर—मद। दनंकिय—छेद किये। वरच्छनि छोह—परछियोंकी नोक। वोह—प्रहार। भर्नंकिय—निरपम ही किया। विलंवनि लोह—लिपटा हुआ लोहा, कवच।
६१ इभ—हाथी। किरवान पान—तरवारकी धारसे। खिमत—चमकती है।
६३ घुकुमार—गदा। पंजर—शरीर, देह। नटसाल—तीरकी गाँस। दुसार—आर पार छेद। मादिक असाध्य—उन्मत्त (अत्यंत) मदो वाला।

आयुध असीह हय परयों खेत, घन घाव मीर घूमत अचेत।
साहस्स धारि हम चढ़यो भोर, फिरि सार धार भजि ठौर ठौर ॥६५॥
केते कुठार बाहत करूर परिघन कितेक सिर चकनचूर।
बंके छछोह करि बोह सेल, नट जेम तेहरीय चोट खेल ॥६६॥
गुपती कटार भमकार घाव नन परत भूमि पर ठाह पाव।
गिर जात भूमि तन भांफ धारि फिर उठत मार मारहु बकारि ॥६७॥
घायल अनेक रन खेत घूमि सनि गई श्रोनतें रग भूमि।
कुल मान सान जुध येम कीन धरपर्यो भूभि आयुध अलीन ॥६८॥

दोहा

पर्यो धरनि आयुध अली प्रजर्यो दवल उजीर।
कर तसवी रक्खी तमकि, लिए सरासन तीर ॥६९॥
मनहु देव दानव दुहुनि पानि उदग्गन खग्ग।
मुसलमान हिंदवान फिरि, लिए तुरग्गन वग्ग ॥७०॥

छंद दुमिला

हय हिन्दुनि हक्किय बीर किलक्किय सोर भमक्किय भोर दहूं।
सिर शेष सचक्किय भूमि मचक्किय कोल मचक्किय दंत कहूं॥
किलमायुध हट्ठिय सायक पट्ठिय चाप चमट्ठिय जोर दये।
कसि बागन कढ्ढिय हिन्दु इकट्ठिय बाजिन तट्ठिय भोर दये ॥७१॥
तुरकान खसक्किय हिन्दु ललक्किय हूर हुलक्किय हेरिवरं।
कर सेस मलक्किय ढाल ढलक्किय खाल खलक्किय श्रोन भरं॥

---

६५ ठौर ठौर—स्थान स्थान पर।
६६ बाहत—चलाते हैं। परिघन—आगल (आयुध विशेष)। छछोह—सोत्साह। तेहरीय—तिगुनी।
६७ भमकार—गहरा। ठाह—सीधा सही ठिकाने पर। भांप धारि—साहस कर।
६९ तमकि—तमक कर, क्रोध करके।
७१ भमक्किय—भभके चलना, एक दम चल उठना। कढ्ढिय—काढ़ी, खींच। मचक्किय—मौचक्की हो गई। चमट्ठिय—चमोठे, धनुषके ऊपर लगे हुए चमड़के बंध। तट्ठिय—उस हिराकी।

खग धार खनक्किय तीर छनक्किय प्रोथ सनक्किय होफ हयं ।
हम घट ठनक्किय नद्द रनक्किय भरि मनक्किय सद्द भय ॥७२॥
हयते हय सत्थिय रत्थनि रत्थिय हत्थनि हत्थिय जुद्ध कर ।
भरि बत्थनि बत्थिय लूथप लत्थिय मत्थनि मत्थिय भूमि गिर ॥
महनी मनु दट्ठिय सोर उपट्ठिय कातर फट्ठिय बैन दुखं ।
बहु दीन महट्ठिय आरन थट्ठिय सारन घट्ठिय भार मुखं ॥७३॥
तन तेगनि तच्छिय मानु कि मच्छिय तोयनि तुच्छिय त्यों तलफै ।
कटि पायन कच्छिय धाव धरच्छिय धाव तरच्छिय ह्वै मलफै ॥
खग धारनि खड्डिय खड्ड बिहड्डिय भारथ मड्डिय भीम नच्यो ।
पिय श्रोनित चड्डिय धार धसड्डिय रंभ घुमड्डिय रास रच्यो ॥७४॥

दोहा

दंपति हूर अपच्छर सूर वरि, बैठि बिमाननि आस ।
मानहु तीय दिन, झुलहर बैठि झुलात ॥७५॥

छप्पय

बजि धप्पी किरवान धीन बज्जा धप्यो भुमि ।
धप्पी गिद्धनि गूद श्रोण धप्पी सब जुग्गनि ॥
हूर धप्यो सिर चुनत हेरि धप्पे नभ-धावनि ।
धर धप्पी धरहूर बीर धप्पे बकि बावनि ॥
बस मुसलमान बलवान खल लूत्य मत्थ धप्पे लरत ।
धप्पे न युद्ध पद्धरपति सूर बीर चक्के भिरत ॥७६॥

---

७२ तनक्किय—शीघ्र गमन किया, रपटके दौड़े । हनक्किय—प्रसन्नता हुई । प्रोथ—घोड़ेकी नाक । होफ—हाफना, जोर जोरसे सांस लेना ।

७३ महनी—धड़ि अग्नि । दट्ठिय—दपक उठी । उपट्ठिय—उत्पन्न हो गयी । दहुँ दीन—दोनों धर्म, हिन्दु मुसलमान । आरन—युद्ध ।

७४ तच्छिय—काटना । मच्छिय—मछली । तुच्छिय—तुच्छ, कम । कच्छिय—घोड़े । धाव—दौड़ना । तरच्छिय—तिरछा, टेढ़ा होकर । मलफै—कूदे ।

७५ झुलहर—झूला जो गोखाकारमें ऊपर नीचे झूलता है ।

७६ धप्पी—धाप गया, तृप्त हो गया । नभधावनि—नभचर ।

थक्के कर तरवार म्लेच्छ कर थक्के मच्छर।
थरि थक्के वरिछूर सूर वरि थक्के अच्छर॥
पर थक्के पल चरनि धरनि थक्की नर भारनि।
मार मार मुख वकत भीम थक्की जोधारनि॥
थक्के विमान असमान सुर नर हमर थक्के फिरत।
थक्के न जुद्ध पद्मरपसी सूरवीर वक्के गिरत॥७७॥

श्रोन धार धर चलत चलत नभ पंक्ति पलच्चर।
कातर विमुहे चलत चलत समुहे नर हमर।
चलत लोह उत्ताल सूल सरगदा परिघ्घन।
चलत सोर सावंत मनहु डबूर बूंद घन॥
उर चलत हँस किरवान कर चलत मुगल चलविचल चित।
नन हिन्दु-पाय पुट्ठिन चलत चपि अँगूठनि भूमि जित॥७८॥

लोहकार उत्ताल मनहु भैरन घन गज्जिय।
गजर मनहु घरियार जाम पूरन प्रति बज्जिय॥
मनहु वूद वस मात असनि असमान विछुट्टिय।
येक मेक अन्नेक तड़ित मानहु नभ तुट्टिय॥
यम वजिय सार आतुर अनिय जुद्ध जीति फतमल प्रबल।
बल मीरखान हुय चल विचल वे भग्गे तुरकान दल॥७९॥

दोहा

हुय तग्गा लग्गा तुरक वे भग्गा तजि बैर।
पानि उनग्गा खग्ग ले लग्गा हिन्दू लैर॥८०॥

---

७७. मच्छर—मत्सर, घमंड। अच्छर—अप्सराएँ।
७८. विमुहे—उलटे विमुख। उत्ताल—ऊँचे से। डंबूर—वर्षाकी के बूँदें को हवाके बेगटे स्थिर कर पड़ती हैं। पुट्ठिन—पीछे। चपि—चांप कर, दबा कर। जित—जितना।
७९. उत्ताल—ऊँचे। असनि—बिजली वज्र। अनिय—फौज सेना।
८० उनग्गा—नंगे। लैर=पीछे।

छंद भुजंगप्रयात

सबै छांडि सम्बाब नव्वाब भग्गे, सुभट्ट फतैसिंहके सैर लग्गे ।
फतैसिंह राजा घरे मीर खेत लुटे खानके सार सीसा समेतं ।।८१।।
लुटे मेच्छके तोप तम्बू कनातं लुटे भ्रम्वरं कीमखाब बनातं ।
फरी तेग बदूक सिल्लैहखानं लुटै तीर तूनीर सुद्धि कबानं ।।८२।।
दुहाई फिरी पद्धरी हिन्दवानं लयें खीनिके फील सुद्धे निसानं ।
रुपे रोक पेटिनके भार फट्टें हयं पक्खर टोप सन्नाह लुट्टें ।।८३।।
सई दीनसाई रहे खानजादे कहुं खा गये मेच्छ वेरे विवादे ।
फतैसिंहके बोलबाला चहेंगे सदा हिन्दुगी बादस्याही रहेंगे ।।८४।।
बचे ज्यान जो हिन्दु भागे हमारी करें आरता पीरख्वाजे तुम्हारी ।
फतैसिंहकी मेच्छ बोलै दुहाई, फतैराव राजा फतै जुद्ध पाई ।।८५।।

दोहा

यमजुट्टे दुह भ्रोर जुध मीरखान फतमाल ।
अपनी मति अनुसार कहि बरनै प्रथ गुपाल ।।८६।।

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वस कलहकेलिवर्णन सुकवि गोपालदान विरचित चतुर्थ प्रसग उनियारा युद्ध समाप्त ।

---

८१ सम्बाब—असबाब, सामान ।
८२. सुद्धि—सहित ।
८५. आरता—यात्रा ज़ियारत ।
८८. लग्गे—लगी । सैर—पीछे ।

द्वितीय साका युद्ध

सोरठा डिंगल

उग्रियार आयाण फतह नृपति कीधी फतह।
सत्र 'मार्व' आराण, 'करण' कीधी सो सह ॥१॥
कृण सिर मझकम धाग धर नार्वे सबला धणी।
बाथ मागी धर बाथ, पाट सगाण पातसा ॥२॥

छंद वेसखरी

मार्ब भूमि मर मत्र सिरधनि, हाटिक पाट समागत दिप्पनि।
नहिं मवार दल भाग कुमारी पुर समसान सकल मुलकारी ॥३॥
गढ़ मफील दम्सन छवि छाजत रजत द्वार कलशादिक राजत।
पुर चाप परिखा चहुँ पासी मगर मीन जलचर सुखरासी ॥४॥
कमल विमल सरिता सर सोहत बन उपवन खग मृग मन मोहत।
मधु छाक मधुकर गुंजारत कोकिल कीर कपोत पुकारत ॥५॥
नित कृसान कृषि रखत नवीनी सालव सामसर धर भीनी।
भाफू हिम जवानि उपजावत सुभ्र धान उपवानहु निपजत ॥६॥
दुगन माल पद् ऋतु मधि सुनत मुनि मुनि टूंक ससुर सिर धूनत।
करनसिंह दुज गा प्रतिपालत बद मृजाद नीति भ्रम चालत ॥७॥
मनु, सुजान रन। समसागर गावित हनुमत ठेग-किरावर।
बार समुद्र सिर करवाई छिति वितान सम कीरत छाई ॥८॥

१ आयाण = स्थान। आराण = युद्ध। करलै = करणसिंह।
कृण = किसके यहाँ 'मणु' शब्द होना चाहिए। सबलो = बलवान।
'मगी' के स्थान पर 'मांगी' शब्द होना चाहिए। धर = सिंहके रहनेका स्थान।
पातसा = प्रतापसिंह।
३ मेर = सीमा। दिप्पनि = शोभा। लवार = बाचाल, बकवादी।
८ ठेग किरावर = रणपारंगत धनी, तलवार चलानेमें चतुर। चावो = प्रसिद्ध।

सुनत पुरान त्रिसध्या साधत विन प्रतिदिन द्विज देव अराधत।
सम प्रभुता उरमें पूरन हित, एक यार भोजन नित जीमत ॥९॥
टूंक नजीक मैर जग धावो गन्न सिंघनि वधे गढ लावो।
भरन मनोरथ करि उर आनत प्रवल नरुकनिको पहिचानत ॥१०॥
आसुर प्रतिदिन चित ललचानो मन ही मन गुनि भयो अयानो।
सूल पत्र चित चक्र चढ्यो सा ज्ञान मूढ़ मति मूढ़ पढ्यो सा ॥११॥
दिन छिनवा अहिमति उर आनत प्रथम गुरुकी रीति पिछानत ॥१२॥

दोहा

भय कर करत निरास चित लालच करत प्रवेश।
आसुर जीव ससांक ज्यो बढ घटि होत क्रमश ॥१३॥
भावनगरको तुरक यक, सब तुरकन सिरताज।
कुसती पटो विनोट कृत सब येलम उसताज ॥१४॥
टूक मध्य आयो तदन सवन सदन परिसोर।
एलमगीर अधीर उर सब तुरकन पर तोर ॥१५॥
रखहु सरव पर तव हुकम ज्यान मान सब राज।
रहुग दवलउजीर कहि तुम हमरे उसताज ॥१६॥
करी सीस घरका किलम न्ई नवाव विचारि।
हय पाटवर तार छिम फरि तुप्पक तरवारि ॥१७॥
रुकि नवावपै आय रहि सब सवावनि मुक्कि।
पथ सवारनते चढ़ मेछ गये मग चुक्कि ॥१८॥

१४ येलम = विद्या। उसताज = उस्ताद, मास्टर, गुरु।
१५ एलमगीर = विद्या वाला। तोर = श्रेष्ठ सुरा।
१७ करी सीस = विदा किया। फरि = बड़ी तरवार। तुप्पक = बंदूक।
१८ सवावनि = असबाब सामान।

रंगकार तेलार विनु विनु कलार दरवेश ।
साम्बष 'लावे' असुर पुर नहि करत प्रवेश ॥१९॥
याते यहि मति धार उर तहि खल उतरे मान ।
कुसमनि कर उपवन सघन सर नजीक शिवथान ॥२०॥

छप्पय

करनसिंह उमराव, ईश पूजन यम आयो ।
करि परिक्रमण अनेक बील पत्रनि हूर छायो ॥
धूप दीप नवेध सुरक्ष श्रीखंड चढ़ोरे ।
अरक सुमन आधार वारि मदाकिनि धोरे ॥
सुम चरन शरन त्रिलोक पति यम सरनागत उच्चरी ।
मदन विनोद आनंदमय करि प्रणाम प्रस्तुति करी ॥२१॥

अथ शिव स्तुति छंद गीतिका

त्रिगुणात्म ईश त्रिलोचन त्रपुरांत मार प्रजारनं ।
अलिकेन्दु सिन्दु अदेव मर्दन सारिधी-निप जारनं ॥
गिरिजास्मित प्रतिमा सिता शिव सगुणात्मक रूपणं ।
निगमागम गावत विश्व व्यापक निर्विकार निरूपणं ॥२२॥
उरमाल मुंडनि छाल मृगनी खाल केशरि भूसणं ।
वपुभस्म लेप स्मशान राजित व्याल पाणि विभूषणं ॥

१९. रंगकार = रंगरेज, नीलगर। तेलार = तेली। रंगकार प्रवेश = रंगरेज, तेली, कलार और फकीरके सिवा और कोइ हथियार बंध मुसलमान "लावे" में प्रवेश नहीं कर सकता है।

१. सुरक्ष श्रीखंड = लाल चन्दन। चढ़ोरे = चढ़ाए।

२२. त्रपुरांत = त्रिपुर नामक राक्षसको मारने वाले। मार-प्रजारनं = कामदेवको जलाने वाले। अलिकेन्दु = निष्कलंक चन्द्रमा। अदेव = दैत्य, राक्षस।

गनभूतप्रेत पिशाच कौतुक मंत सतु जटा जुटी।
जय व्योम केश महेश त्र्यंबक भीम भूतप धूर्जटी ॥२३॥

दोहा

येम सुभट अस्तुति करी पानि जोरि परि पाँय।
करि वंदन आनदमय, विविध कपोल बजाय ॥२४॥
बाजत सुनत कपोल हँसि भरि करि कंधुर थक।
ईशालय गमम्यो असुर, पनही सहित निसक ॥२५॥

छप्पय

तुरक एक तिन मध्य रोप पोरुष गुन रत्तो।
मनहु छाग मुख मूत येम आसुर उन्मत्तो॥
पान सूल कम्बान सुभर तूनीर सिलीमुख।
कटि बाँधी किरवान परम पावन आवम रुख॥
सम आत सुभट बरजे प्रथम मति आवहु यह मूढ़मति।
यह ठोर मेच्छ आवत नहीं ये त्रिपुरारि त्रिलोक पति ॥२६॥
सुनत बत्त प्रज्जर्‌यो आनि ईशालय अदर।
ईश शीश दिये पाव कुबुद्धिकारी मनु बंदर॥
रोस नयन मुख रक्त मूछ भूंहनि मग चढ्ढिय।
कर कढ्ढिय किरवान कुबत भुजते सम कढ्ढिय॥
यहँ मार मार मुख उच्चरो होय शब्द हुंकार हर।
किरवाम पाम वाही किसम हूमी कटारी हिन्दु कर ॥२७॥

---

२३. मूसर्‌यो = लगा हुआ चिपका हुआ।
२४ कंधुर = कंधर, गरदन।
२५. पनही = पगरखी, जूता।
२६ मनहु छाग मुख मूत = विषयोन्मत्त बकरा (बकरीके या अपने) पेशाबको मुँहमें ले कर मानो मस्त हो गया हो। पाम = पानि, हाथ। सुभर = खूब भरा हुआ।

मासुरके उर मध्य दंत अतक सम बैसिय ।
मानहु रंध्र मुसाल, लाभ ज्वाला गनि जैसिय ॥
वसन बेधि कटाक्ष, कार कुलटा द्रग कढ्ढिय ।
हुद्द बेधि अमद्दुठ येम तन पारऊ कढ्ढिय ॥
ऊपरी जानि मपा जलद, चुवत श्रोन रग चढ्ढिमा ।
मानहु कुमारि जावक सहित कर वातायन कढ्ढियो ॥२८॥
ते रिपु धरनी पर्‌यो बहुरि सुरि मेच्छ हकारे ।
सुनि कोतुक पुर लोग, म्रानि तिनको फिर मारे ॥
यम देवालय मध्य दीम जुट्टे वहँ सम्मर ।
मासवास भरि श्रोन भई प्रतिमा रातमर ॥
धर्‌यो सुमेरु लघु बस मक्षि ते मग लग्गो ढूकपुर ।
दवलाउजीर दरगा तदन भवन हेतु कूके असुर ॥२६॥

दोहा

उर कपित सूकत प्रधर, भरत द्रगत युग मैम ।
चित चक्रित बमरम तन, कहत मामम कटु बैन ॥३०॥

छंद त्रिभंगी

नव्वाब कहाँरे राज तिहारे, हिन्दुनि मारे सो करि है ।
हमि पिदरहमारे मातुल मारे बैर बिचारेको करिहैं ॥

---

२८. दंत अंतक = यमके दांत । बैसिय = पैठ गई गई गई । मुसाल = मशाल, चिराग । बसन = वस्त्र । अमद्दु = कटारी । पारऊ = दूसरी ओर, आरपार । ऊपरी = प्रकट हुई । मंपा = बिजली । श्रोन = शोणित, खून । वातायन = वातायन खिड़की झरोखा
२६. हकारे = बुलाये । दीन = धर्म (यहाँ धर्म वाले) सम्मर = समर, युद्ध । मासवास = चौमासा । रातमर = लाल । मैम = वयस, उमर । दरगा = दरगाह, दरबार । कूके = पुकारे ।
३० बेमरम = बेपर्दा मलिन ।

अब या तुरकानीको हम जानी भई पुरानी बीगरि हैं।
असमान गिरेगा ना उबरेगा काफर रैगा तू मरि है ॥३१॥
दोजिगमें जैहैं तू कस पैहैं दामन गैहैं हम तुमरे।
ऐसी अनहूनी मसी न सूनी कबरैं भूनी कुल हमरे॥
अब कोन हमारे देश तुम्हारे आनि पुकारे जोर महा।
तुम सुनत न ऐसी हम परदेसी बालक भेषी आय कहाँ ॥३२॥

दोहा

ते लरका मुख विष सुने बायक सायक सार।
श्रुति समर मेछ्दके पंजर करत प्रहार ॥३३॥
तब नवाब कथ उच्चरी रक्खहु ममर्में धीर।
सकल नरकनिको हनो तब मैं ववलउजीर ॥३४॥
गढ तोपनतें करि सफा पुरतें करों तगीर।
लावै हिन्दु न रक्खहूं, तो मैं ववलउजीर ॥३५॥
बोले सुनत तमाम खल कर तोले किरवान।
जो लावै जुध नहि जुरे से नहि मुस्सलमान ॥३६॥
वड़े मीरखां जुध जुरे तहां परे रन खेत।
तुजे बिरावर समनके चच्चे पिदर समेत ॥३७॥
कर मुक्खनि मल्लै किलम यम खुल्ले उजबक्क।
स्याम काज पितुके बयर हृदपै मरना हक्क ॥३८॥

---

३१ पिदर = पिता। रैगा = रहेगा।
३२ दोजिग = दोजख, नर्क। दामन = दामन, पल्ला। गैहैं = पकड़े हैं।
सूनी = सुनी। कबरैं भूनी = कबरमें भूनों।
३५ तगीर = तग़य्युर परिवर्तन निकलना।
३६ तोले किरवान = तलवार पकड़ कर।
३८. उजबक्क = मूर्ख उजड़ असभ्य, उद्दंड। स्याम = स्वामी। बयर = वैर।

कर असील किरवान गहि बुल्ले मीर मसूर ।
'लावें' लरना हक्क है मरना वरना हूर ॥३६॥
नमक सरीखिन रक्खही, मक्ख अभक्ख समान ।
काफर दाजगमें परे भक्खें मीर जहान ॥४०॥
अपने खावंदके हुकम, करहि ज्यान कुरबान ।
हक व मरना हक्क है कहें कुतब्बी खान ॥४१॥
अक्ख संख ततारखा उर सहना जमदड्ढ ।
मरनास डरना कहा लरना लावें गड्ढ ॥४२॥
यम बुल्लं इकतारखा करना गढ़ चकचूर ।
काफर हैं सो वरजना जुरना जुद्ध जरूर ॥४३॥

छन्द नीसाणी

उस विरयो मुलतानखा भूखाँ कर घल्ले ।
भैचि कवादे टक तोलि जम्बू कहि बुल्ले ॥
हम गिरत असमानको शिर केई मर झल्ले ।
दक्खनके दरम्यान कल दाऊ दल मिल्ल ॥४४॥
भूरि जमी असमानद भालों मग भिल्ले ।
चल्ले हुलकर सिधिया मुज पाव न चल्ले ॥
क्या किल्ल घोगानदे क्या उस पर हल्ल ।
हम किल्ले असमानद कई वेर उभल्ले ॥४५॥

---

३६. असील = अशील शील रहित तत्र ।
४० सरीखिन = सरीखा हिस्सा, साथ । भक्खें = करे ।
४१ खावंद = पति स्वामी । ज्यान = जीवन । कुरवान = बलिदान ।
४५. उस विर = उस समय । घल्ले = डाले । भैचि = मींच कर । कवाद = सींगके टुकड़ोंसे बना धनुष । टंक = ४६ सरकी शक्ति (जैसे हार्सपावरकी गणना मशीनमें होती है उसी प्रकार मनुष्यकी शक्ति टकसे की जाती है का ८, मर का होता है ।) जम्बू = जम्बूरा, भारी तोप । वर = बार, इच्छ समय ।

सीकर ईश नवाबको दोसत कर पट्टू ।
हम किल्ले सकरायदे सोरै पख जुट्टे ॥
तोप दगी दहुँ मोरतं भर सोर उपट्टे ।
लुट्टे माल जखीरदे नर हैमर कट्टे ॥४६॥
उसदी अपनी सेन सब हल्ले कर कट्टे ।
आग भी हनुमत थे किल्से नहि छुट्टे ॥
क्या अच्छे कमनेत थे तीरो सिर टुट्टे ।
फिर उसदे तूनीरतें सब तीरमि खुट्टे ॥४७॥
या तर उमत फील करि भर पोरुष हटटे ।
महा उपल मु जफटते सीना विभि फट्टे ॥
हम मिल्ले इस तोरसै बहु बेर उलट्टे ।
यारा 'लावा' कोटपै सबके दिल घट्टे ॥४८॥

छन्द भुजंगी

बड़े मीरसाके अभा एक जुल्ला, कहावे सबोमें बड़ मीर मुल्ला ।
बड़े मोलवी नेक पढ़दे कुरान मसल्ला मसल्लाह् मसल्लाह् जान ॥४६॥
इनो सूंन कीना उनो बात भक्खे उनाके इमों देवप पाव रक्ख ।
सब आपने दीमकी क्षीनताई जिनोपै मरे मारना हक्क भाई ॥५०॥
बदी जो करै तो खुदाकी सजा है सदा नेक रहना इमोंमें मजा ह ।
मिया एक मस्सूरखां नाम जाके बड़ तेजवान सबामें कजाके ॥५१॥

४६ जखीर = खजाना । सौर पख = सोळे गाँव वालोंकी पख लेकर, या सोलह पक्ष ।
४७ खुट्टे = समाप्त हो गए ।
४८ इट्टू = हटे कटे, मोट ताजे । महा फट्टे = जिस प्रकार हाथी सूडमें बड़ पत्थर लेकर अपने सीनेसे टकरा कर तोड़ देते हैं ।
४९. मसल्ला = या अल्लाह, ईश्वर ।
५१ बदी = बुराई । कजाके = कज्जाक, बदमाश, लुटेरा ।

यही मीरखांके वजीर कहावें, बडे मीरजादे अदाव बजावे ।
बडे फारसी पोस पुख्तान चल्ली, अरब्बी पढे मुल्लके कल्ल बल्ली ॥५२॥

बड़े मीर मुल्ला कहा यास कीनी, खुदा मीरखांको नई भूमि दीनी ।
यसे मीर मुल्ला कहा एक मानूं, धमूं जोरिके मूल "लावे न जानूं ॥५३॥

उनोंके वर्नेसिह राजा सहाई, जिनोंकी फिरै देश देशों दुहाई ।
वबाजान याके जुरे जग 'लाव', उनोंके रहेगा तुमारे न भाव ॥५४॥

सबै कूंमर्में यह नरूके वुरे हैं जुरे जगमें यह कहूं ना मुरे हैं ।
जिते ये नरूके जुदे नाहि जानो, सबै देशके 'उन्नियारो 'लवानो' ॥५५॥

बडे मीरखांके रहे पीर पक्खै, उनोंके कबीले इनो कैद रक्खै ।
कहा जो हमारा उनों भी न माना सब यार जानो रहा नाहि छाना ॥५६॥

सबै सोर सीसा सबाब लुटाये स्या लाख देके कवीला छुटाये ।
तुम्ही कल्ल याप गये उन्नयारे' कला खोयके रोय पीछे पधारे ॥५७॥

हमैं आज लौं बात ऐसी निहारी अबै जो न मानू रजा है तिहारी ।
अबै मीर मस्सूरखां बस बोले, कियै नैन रत्ते करों वेग तोले ॥५८॥

उमीरी फकीरी वड एक भांटे खुदाने दई है किसीको न बांटे ।
किनू कायरी सूरताई दई है जिनो अप्पनी अप्पनी ही लई है ॥५९॥

दरगाह जावो फकीरों पढ़ावो ससब्बी फिरावो खुदाको लडावो ।
तुम्हें वात ऐसीनसे काम क्या है बडे जो कहाये खुदाकी रजा है ॥६०॥

---

५२. फारसी पोस = फारसीदां, फारसी भाषा जानने वाले । मुल्कके कल्ल बल्ली = कल बल करके बोले ।

५६ छांना = छुपा हुआ । पक्खै = पक्ष पर, मदद पर ।

५९. उमीरी = अमीरी, ठकुराई । भांटे = फर्क है, अंतर है । बांटे = हिस्समें ।

६० खुदाको लडावो = ईश्वरका लाड (प्यार) करो; ईश्वरका भजन करो ।

रहे पीर दोला मस्ति तिहारी यलल्लाहके हाथ ह जीति हारी ।
करि भाज हिन्दूनि ऐसी अनैसी, तिहारे रही राजके पाज कैसी ॥६१॥

दोहा

करिय मीर भृकुटी कुटील बोले येह जुवाव ।
किय रजपूतहि रज्ज बिन किय नवाब बिन आव ॥६२॥
करहु बध चतुरगनी सीसा सोर सवाब ।
कस बनास उतरहि कटक यम दिय हुकम नवाब ॥६३॥

छंद मोतियदाम

भरो सत मस्त गयदनि सोर भरो फिर पीठ मदत्तिय ओर ।
हकी सब तोपन जुट्टि लगाय धुनी लबवान पताकनि छाय ॥६४॥
बढे गजराजनि रग चढ़ाय करे उन्मत्त धनू मद पाय ।
चढे छलतें हुजदार कजाक मनो हनुमंत चढ्यौ मयनाक ॥६५॥
सिरी असिता सिर झुल्ल समेत मनो तम राहु पडा रहि केत ।
किते गजराजनि पीठ निसान किते गज पीठनि नोबत खान ॥६६॥
किते चवदडिय होदनि छाय दयं डगवेरनितें खुलवाय ।
चले मिलि दत्तिय पक्ति समग्र मनो बग पक्ति उठी घन अग्र ॥६७॥

---

६१ अनैसी = खोटी बात बुरी बात, अनुचित । पाज = सीमा, मर्यादा ।
६२ किय = कियों, अथवा संदेह सूचक शब्द है ।
६४ जुट्टि = जोड़ी, बैलोंकी जोड़ी। धुनी = धूँणी धूँम धुआ । लबवान = लोबान, एक प्रकारका सुगंधित द्रव्य जिसको 'धूप' के स्थान पर मुसलमान लोग जलाते हैं।
६५ धनू = ज्यादा, अधिक । हुजदार = महावत हाथीको चलाने वाला ।
६६ सिरी = श्री हाथीके मस्तक पर किये जाने वाले रंग आदिको कहते हैं असीता = काली । राह = राहु । केत = केतु ।
६७ चवदडिय = चार डंडे वाले, अम्बाबाड़ी छतरीदार होदा । डगवेरनि = जंजीरोंसे ।

लसै उपमा यक और अपभ किधा शनि भोन सशी प्रतिवव ।
ठनकत घंट चलै तनु मोर मनू कुलटा चलि चित्तहि चोर ॥६८॥
झनकित झल्लिय कठनि सोर मनो वरसागम बुल्लिय मोर ।
चसावत अकुंशतें कुजवार, मनो गिरिके सिर वज्र प्रहार ॥६९॥
चले इम अंदुक अंचत पाय जरे पग लोह मनो जम जाय ।
चवै मद पूर छमट्ठिय राह मनो वरष घन भद्दव स्याह ॥७०॥
किते विरच्च गज मस्त करूर करैं गुज गीरनके चकचूर ।
उखारत मूल पिचू वदु तार वजारनि हाक परी हटनार ॥७१॥
भनी चम भालनि भेरिय भग्र, धुवा चरखीनि मची घम जग्र ।
तरायल ह्रयनि दे वहुतारि लये पुर वाहिर निठ्ठि निकार ॥७२॥

दोहा

उर अहिमति सिर भिरि उरस हय पैदलनि समुच्च ।
यम उजीरदवला चल्यो कुच्च कुच्च दर कुच्च ॥७३॥

छंद मुखंगी

चढ्यो मीरखा सग जंगी सवाय चढ्या मालवी जावरेका नवाय ।
चढे वाजी ह्लेके सवै सेंद सगी हय पक्खर टोप सन्नाह जगी ॥७४॥

६९. झल्लिय = झालर, हाथीके गलेमें पहिनाई जाने वाली घूघरोंकी माला ।
७० अंदुक = हाथीके बांधनेकी जंजीर । छमट्ठिय = गण्डस्थल के स्थानोंमें ।
जम = यमराज ।
७१ विरच्चे = कोपित । गज गीरन = मजबूत दीवार । पिचू = कैरका वृक्ष नीमका वृक्ष ।
हाक = हल्ला । हट्टनार = हटनाल ।
७२ भेरिय = खड़ा कर, मिला कर । तरायल = चंचल । वहुतारि = बहुत सी ।
७३ उरस = आकाश ।

चढे सिपके भायनभ्री मुसल्ले, फरों से कमट्ठे वय केक भुल्ले ।
चढे कुन्च दढढे सिसा हीन मत्थे, इरानी भरब्बी तुरक्की चिगत्थे ॥७५॥
विसीवाल सगी चढे जुद्ध काज, जिनों सीसपै मक मत्ती विराज ।
चढे मंगसी रूम सींदीं गिलज्ज, मत मत्तनि कत्त कांता विलज्ज ॥७६॥

चढ्यो मीर मस्सूरखो तेज ताजी जिनों वेग मारुत्तकी गत्ति साजी ।
चढ्यो खान दोरा बरच्छी घुमावै फुलै मग ये तो जरद न मावै ॥७७॥
चढ्यो जावदीखा सुरा मप कंध, लगाए दुसालो जिनो पेर बंध ।
चढ्यो जाफरीखां नचै वाजि मैसे जिनूके भगे मृग्गके पाव कैसे ॥७८॥
हरेई चढ्यो वाजि साहायदीन भये कथ केकीनक मान हीम ।
चढ्यो दावदीखा हय वाग खच्चै मनो पातुरी पातुरी भूमि नच्चै ॥७९॥
चढ्यो मीर कासू हयं वे विरच्चे मनो मेक मूंगा पत्त पाल मच्चै ।
चढ्यो पीरखान यतै वाज भक्सी जिनोके रहे पीर चोवीस पक्खी ॥८०॥
चढ्यो गोसखान चढ्यो हय हरेई मनो भासमान विमानं परेई ।
चढ्यो मोमदार विमामा रमद् हय पाव मंडै करीके हमर्द ॥८१॥

---

७५ कुन्च दढ्ढे = कूँचीके समान दाढीवाले, (कुन्च = एक प्रकारका औजार जिससे बुनकर लोग सूतको सुलझाते हैं) चिगत्थे = चगताई । कमट्ठे = कमान । केक = कई । भुल्ले = पूरे ।

७६ सिलीवाल = बरछी वाले । मंकमत्ती = टोपीके ऊपरकी कलंगी । मर्त मत्तनि = भाँति भाँतिके । कंत कान्ता विलज्ज = दूसरोंको भी लज्जित करने वाले ऐसे बने ठने ।

७७ जरद = कवचमें ।

७८ मपकंध = मस्त हुमा ।

७९ हरेई = मीला, वाजिका विशेषण ।

८१ परेई = परी, अप्सरा ।

चढ़्यो सेख सत्तारखां बाजि तत्ते उडै आसमान मनो पौन पत्ते।
चढ़े खान जादे किते बाजि फेर उलट्टे सुलट्टे पटे दाव घेरे ॥८२॥
चढ़े मीरजादे सबे एक सत्थं, लखै आफताब जिनो धामि रत्थ ॥८३॥

दोहा

पच अयुत लय संग दल, होय किलम हुमगीर।
कियो मुकाम उलंघि जल खल वासिष्टी तीर ॥८४॥
करनसिंघ प्राकार प्रति सजि पूरन सामान।
कग्गल संघुनको दये भासुर आवत जान ॥८५॥

छप्पय

उनियारे पति प्रबल मदत फत्तै नृप भेजी।
चोरू महरूयों मिले तोर उत्पस अगरेजी ॥
स्योरापति हनुमत्त मिले बधव पचालय।
पाट थान लद्दान सदा असुरां उर सालय ॥
भारत्थ करन मारथ्थ तनम संग सुभट लाय सबल।
'लावे उवेस आये दहूं पातिल गोवरधन प्रबल ॥८६॥
नग मारन मघवान दक्ष मारन शभूगन।
मृग मारन मृगराज पनग मारन पनगासन ॥
कन्हर मारन कस हरी हिरनाक्ष विदारण।
हर मारन मनमत्थ पार्थ खांडीव प्रजारन ॥

---

८४ हुमगीर = स्वाब। वासिष्टी = बनास नदी।
८५ कग्गल = कागज, पत्र, चिट्ठी।
८६ चोरू, महरूया = गांवोंके नाम हैं, यहां उनके स्वामियोंसे मतलब है। तोर = तेवर, त्योरी। तोर उत्पस अंगरेजी = अंगरेजोंकी परवाह न करके। उर सालय = हृदयमें खटकने वाले। उवेस = मदद। पंचालय = पंचास्य एक ठिकानेका नाम। पाट = पाटन। थान = थाना एक ठिकानेका नाम। लद्दान = लदाना, एक ठिकानेका नाम।

तुरकान सेन मारन तदन, इसो रूप दरसावियो ।
'लावै उमेल बधू प्रवल यम गोवरधन भावियो ॥८७॥

मार छोरु कर गह्यो धनुप कामासुर मारन ।
ईश छोरु ऊघरयो नयन तीजो प्रज्जारन ॥
धनिस छोरु घ्रत परयो वहुरि मारुव झकझोर्यो ।
सार छोरु दुद्धार वहुरि वाको सिप मोर्यो ॥
रन पत्थ छोरु सारथ हरी सिंध छोरु पक्खर धस्यो ।
करनेश छोरु कल्लह करन बहुरि भानि पातिल भिल्या ॥८८॥

दोहा

बखतावर गोविन्दवर वीर पराक्रम सूर ।
आये लावै बंधि लत जैपुर हूत जरूर ॥८९॥

निसि वासर उन्मत्त रहि भासुर जुत्थ उचाल ।
ओ बखतो नव्वाब उर सालत ज्यों नटसाल ॥९०॥

लावा-पति बधु प्रबल प्रलवर रहत प्रसन्न ।
तिनको धावन पठ्ये लिखे बुलावन अंक ॥९१॥

८७ नग = पर्वत । मघवान = इंद्र । पनगाम्मन = गरुड़ । कन्हर = कृष्ण ।

८८ छोर = छोड़ता नहीं, और । ऊधर्यो = प्रकट किया खोला । दुधार = दोधारा, दोनों तरफ धार (धार) वाला । मोर्यो = घुमाया । पत्थ = पार्थ, अर्जुन । धस्यो = घुस गया । कल्लह = कलह, युद्ध । पातिल = प्रतापसिंह ।

८९ बंधि = बांध कर, पढ़ कर । हूत = से ।

९० जुत्थ = यूथ, भीड़ । उचाल = उछल कर । बखतो = बखतावरसिंह । सालत = खटकना है । नटसाल = कांटा गांस, कांटेका वह भाग जो टूट कर शरीरमें रह जाता है ।

९१ धावन = दूत । अंक = आंक अक्षर, पत्र ।

किल्लं रक्खनहार नहिं भ्राज 'सलो' भ्रनभग ।
'रैनालय'में थट्टियों तुव्भि भरोसे जग ॥६२॥

जुध 'मद्दुकम' थट्टो अदन छो 'सादूल' सहाय ।
भ्राज 'पना' ! तू मीस पर भ्रो भ्रसमान उचाय ॥६३॥

पहिले जुद्ध खुमानसी भ्रसुरा दिया उत्थल्लि ।
भ्राज सुभ्रान भुजानप सरम समूची भल्लि ॥६४॥

छप्पय

येम पत्र करनश लिखे भ्रलवर पुग्गाये ।
पति पति प्रति पति सकल मधुनि सुनि पाये ॥
भ्रंक येम उघ्घरे लोभ लग्गो पुर लुट्टन ।
भ्रायो सरित उलंघि जुद्ध भ्रपने गढ़ जुट्टन ॥
छुट्ट न दान किरवान बिनु कछु दल ओर उमंगिया ।
लग्गियो केत बासर किरन ज्यों भ्रासुर लाव लग्गियो ॥६५॥
मत्तो मत्ति उर मद्धि पत्र भूपति कर दिन्हिय ।
भ्रचि सत्त वनराय नयन रापारुन किन्हिय ॥
थयन येम उच्चर गमन पल अज न कीज ।
सिलह तोप बारूद जुद्ध सजत सब लीज ॥

६२ सलो = सलहसिंह । रैणालय = रणभीतिका घर ।
६३ मद्दुकम = मद्दुकमसिंह । थट्टो = स्थापित किया । सादूल = शार्दूलसिंह । पना = पनेसिंह । उचाय = ऊँचो सर पर रखो ।
६४ सरम = शर्म, लज्जा । समूची = सम्पूर्ण ।
६५ पुग्गाए = पहुँचाये । उघ्घरे = प्रकट हुए । केत = केतुमह । बासर किरन = सूय ।

अब सूब जुद्ध करिबो उचित पूरन मदति पठाय हैं। ९
जो रहत किलम सिर जोर तब बहुरि सबलता आय हैं ॥९६॥

लखनेऊ पति कवन कवन पचास धरत्तिय।
पल्हनपुर पठ्ठान कवन भागलपुर पत्तिय॥
सस मावलपुर कवन कवन सिंधी जिल्लामत।
को बपुरो नब्बाब, टूक जावर मिल्लामत॥
अनयास होत मवासपति तुरक तोर तुट्टै वदन।
बनराव यम कय उच्चरत, सोर परत विल्लय सबन ॥९७॥

सत मत्ते मातंग द्वार समारनि गज्जहि।
अयुत पच रजपूत सकल आयुध तन सज्जहि॥
प्रबल तोप रथ पक्ति याम प्रति नोबत बज्जत।
सूर सुभट तोखार सार पक्खर जुत सज्जत॥
बावन दुरग थके विविध, सब क्षिति छोगो छत्रपति।
बखतेस तनय बनराव नृप करत राज अमवर नृपति ॥९८॥

छंद मोतीदाम

चढे धनराव सहल्लनि भोर परै सब शत्रुनके घर सोर।
जुरे नर हैमर गैमर जुत्थ मनो चतुरगनि राघव सत्थ ॥९९॥

९६ बेस = देर, विलंब। मत्तो मत्ति उर मद्धि = मनमें अपने आप ही मनसवा करके अपने आप ही खूब सोच विचार कर।

९७ अनयास = अन आस, आशा रहित।

९८ तोखार = घोड़े। छोगो = शिरोमणि।

परै बहु ठोर बमीसनि बंब नच मनु संकप काल फुटब ।
निघासनि घप्पिय सेत झकार किते सब सोपनि फट्टि पहार ॥१००॥
करी समकौर करीनकी पति उठी वरक्षा मनु ग्रीषम भंति ।
रूस रद इदव देह दुनाय जुटे मनु राह सनम्मुख माय ॥१०१॥
जर सब पीतरसं सम दत बसी हिमके मनु मोन बसत ।
झल्लकत झूल हवद्दनि पास किधौं झर मध्य रच्यो कयलास ॥१०२॥
हय सफ सारनकी सुरसार सनकित पाह्नन अगिग उपार ।
सजे हिम सासति भूखन गात प्रस्या मनु प्रातप भान प्रभात ॥१०३॥
मस पति पक्खर पिठु निसंक भस कर बगगनि कंधुर यक ।
गुहे कच बालनके भरि बरय सितासित पीत कनाविम सस्य ॥१०४॥
मिले जरदोजनितै मखसूल सरासनप मनु प्रातस फूल ।
मरक्खत पच तत तनु प्रच्छ, तलफ्फत मीन मनोजल तुच्छ ॥१०५॥

१०० ठोर = चोट । बमीसनि = नगारे, भक्कमर । बंब = रणनाद । संकप = संकपति राक्षसके । निघासनि = मार्सांसे ।

१०१ समकोर = बराबर, एकसार । इंदव = बहुवर्ग चन्द्रमा । राह = राहु । देह दुनाय = शरीरको दोहरा करके । (बंक चंद्रमहि ग्रसै न राहु, तुलसी)

१०२. पीतर = पीतल, धातु विशेष । मोन = घर । हवद्दनि = हौदा ।

१०३ सफ = पंक्ति, कतार । सासति = घोड़का साज सामान ।

१०४ १०५. गुहे सस्य = घोड़ेकी अयाल (गर्दनके) बाल कनौतीके साथ सफेद काले और पीले डोरोंसे गुथे हुए थे ।

पक्खरपति जिस घोड़े पर बैठे थे वह 'पचकल्याण (पाच सफेद चकत्ते वाला) था । ससै पति मनोजल तुच्छ—पक्खरपति उस पंच कल्याण घोड़की पीठ पर धन निशंक हाथमें लगाम कसे कंधेको तिरछा कर बैठे हुए थे उसकी गर्दनके बाल कनौतीके साथ कच्चे काले और पीले डोरोंमे गुंथे हुए थे ऐसा मालूम होता था कि मानो रेशम पर जरदोजीका काम हो रहा है अथवा धनुष पर सूर्यमुखी फूल लगा हो । उसके तेज और स्वच्छ शरीर पर वे पाँचों चिन्हथे जब वह उछलता था तो मालूम होते थे मानो थोड़े जलमें मछली तड़पती हो ।

उडे नभ रागनि रुग्ग उछोह, मलफ्फत पच्च वरच्छनि मोह ।
सजे तिनपै असवार कजाक, छके उमराव दुवारनि छाक ।।१०६।।
'लखा हनुमंत जिसे उमराव जिनूं जुध मच्च न तुल्लत पाव ।
चढ्यो मनु सिंधु उलघत पाज जुरे जुध कौन बनेसर्ते आज ।।१०७।।

दोहा

यम अक्खी बनराव नृप हारि जीति हरि हत्थ ।
लरना मरना मारना येह तिहारे सत्थ ।।१०८।।
कर मुच्छनि भल्ले रवत बुल्ले पनो' सुजान ।
जो लस अग्गल भग्गि हैं उग्गि हैं पच्छिम भान ।।१०९।।
सकल जुद्ध सामान दिय बिदा किये बनराज ।
मनु जग बोरनको उदधि लगे उलघन पाज ।।११०।।
भाना' पति हनुमतसी' कँवर गढी पति कान' ।
बीजवार गढपति 'लख कर भल्लीं किरवान ।।१११।।

छंद मोतीदाम

गढीपतिके रनजीत कुमार सुनी यह वत्त गह्यो कर सार ।
किते वसके लख टूक नवाब हरों गज बाजि करों विन आब ।।११२।।

१०६ उछोह = उत्साह सहित । मलफ्फत = लहलहाते हैं । रागनि = रानोंके (जंघाके) इशारेसे ही । दुवारनि छाक = दूसरी बार निकाली हुई शराब । पंच वरच्छनि मोह = पांच बरछियों जितनी लम्बाई तक ।
१०९ रवत = रावत वीर । अग्गल = आगे सम्मुख ।
११० बोरन = डुबोनेके लिए ।
१११ बीजवार = अलवर रियासतका एक प्रसिद्ध 'ठिकाना' । भानो, गढी = ये भी अलवरके ठिकानोंके नाम हैं ।

यतै हनुमत कहि यह मत्त भवै घन मेच्छ भये उन्मत्त।
गह्यो कर बान उदग्गनि हत्थ, महिस्स समान उनत्थहि नत्थ ॥११३॥
'सखै' यम अक्खिय वत्त निसक्ख करो खल जुद्ध निकारहु बक्क।
सबों दल पूर मदत्तिय सग्ग करो न विलब्ब जुरो यम जग्ग ॥११४॥
हनूं खलके दल खग्गनि जोर झकिते मग गहि छाँडि मरोर।
यतो बलहीन करो खल जुद्ध जुरै नन जाय कहूं फिर युद्ध ॥११५॥

दोहा

बिटि सनाहनि भट उर सबल जुद्ध तन सज्जि।
चढ़े बीर पद्धरपती पूर नगारनि बज्जि ॥११६॥

छंद भुजंगी

घन घोर बंबील बज्जे निघात उड़े गैन पक्षी मनो तूल पात।
रणों' सूर बीर चढ्यो वाजि तत्ते, भये रोसकी ज्वालतें नैन रत्ते ॥११७॥
महासूर बीर चढ्यो येम सूजो' मनो भालके वाजिपै भान दूजो।
पनू पक्खरादी हय पीठि झोपै मनू कामकी सेनप ईश कोपै ॥११८॥
'पना'को तनू येम 'गोपाल सज्ज धरा नेत बंधी हयं सूर मज्जै।
चढ्यो रेवत पूत 'सुज्जान' केरो भयो जेठके भान जसो उजेरो ॥११९॥
'हरन्नाथ' कुम्मेरको मद चढ्यो घने घ्रासुरोक घरो सोक बढ्यो।
दरोगा चढ्यो हाजरयो' हेम ताजी करै लून राई भई रम राजी ॥१२०॥

---

११३ महिस्स = भैंसे। उनत्थहि नत्थ = बिना रस्सी वालोंके नाकमें रस्सी डाल दी गई।
११४ जोर = बल, ताकत। मरोर = मरोड़, ऐंठ, गर्व।
११६ बिटि = वेष्ठित करके। भट = भटियें कड़ियें।
११७ बंबील = नगारे। निघात = चोट। गैन = गगनमें, आकाशमें।
११९. धरा नेत बंधी हयं सूर मज्जै = वह भाला लिए हुए था और उसका घोड़ा अपने खुरसे जमीनको खोदता था। तनू = पुत्र। रेवत = हाथी। केरो = का।
१२० करै लून राई = लोन राईको ले कर और वार कर अग्निमें डाल दिया जाता है। ऐसा करनेसे 'नजर' दृष्टि-दोष नहीं होता।

कपाली चढ्यो बैलपै लैर लग्यो चढी सिंघ काली मसै बैल भग्यो ।
गिरि मादिके मेखली रुंड माला गिरे मत्त ततावसी मृग्गछाला ॥१२१॥
गिर्‍यो कालकूट परी भंग तुच्छी, परे बिरपुरे भूमिपै नाग बिच्छी ।
जटी भूत प्रेत लिये लैर लग्यो छूठी बीरभद्र तमासै उमग्यो ॥१२२॥
चली जुग्गनी चोसठी पत्र झल्ले, बसूहीन सटठी महाबीर चल्ले ।
मुनि जन्न पाणी असोम बजायो ललक्कारि भैरू किलक्कारि आयो ॥१२३॥
गुडी लों उडी गिद्धनी व्योम छायो नहीं दूर रभा रथो पथ पायो ।
भिरी पक्खरा पक्खरो भीरि पूर हय गज्ज गाहं भय धूरमूर ॥१२४॥
भरा धूसरी धूरि आकास लग्गी हय खूरतें सीस धूनै पनग्गी ।
सबै सूरवीर धर्‍यो सिंघ भेस कर्‍यो पद्धरि सेन 'लावे प्रवेस ॥१२५॥

दोहा

अब अरजन राठोरको, आवन कहूं बखानि ।
जुद्ध भयो लावै' अदन जिहि बिध जुट्टे आनि ॥१२६॥
बनयसिंघ मातुल तनय जिनो अरज्जुन नाम ।
मेरतियो कुल राठवर पुर'मारोठ सुधाम ॥१२७॥
हैवल पैदल संग दय बिदा किये बनराज ।
यम कहि 'लावै गढ्ढ की तुज्ज भुजों पर लाज ॥१२८॥

छंद मोतीदाम

चढ्यो हय पक्खर बिट्टि रठोर पर्‍यो सिर खोप समस्तनि जोर ।
दुमी मनि मत्थ फनी फन चपि उरब्बिय ताम परस्पर कंपि ॥१२९॥

१२१ कपाली = शिव । लैर लग्यो = पीछे २ चला । मादिके = मादक द्रव्य ।
१२२. जटी = जटा वाले, शिव । लैर = साथ ।
१२३. बसूहीन सठ्ठी = आठ कम साठ अर्थात ५२ भैरव ।
१२९. उरब्बिय = उर्वि पृथ्वी । ताम = उस समय ।

चले चक पत्र चलद्दलभाति दलासम ज्यों असला विचलाति ।
सस्त्रनि तेज हुतासन धुक्ख प्रल रविकी मनु तुट्टि मयुक्ख ॥१३०॥
हय सफ वज्र हरगिर खिज्ज खिवैं खुरतार मनो घन खिज्ज ।
उठी रज डवर मवर गोम विहगमकी पर वज्जिय व्योम ॥१३१॥
कियो मनु वाडव सिंधु प्रक्षेप कियो मनु कसपै कन्हर कोप ।
भरी मनु मिघ करीनिपै डग्ग भरज्जन येम लग्यो जुध मग्ग ॥१३२॥

छप्पय

जिमि जैमल राठौर मरन चित्रागढ़ पायउ ।
पिरथुर ममरि ईग येम अरबुद्दनि आयउ ॥
घर छुट्टत चवेल भानि मन्हल सिर तुट्टिय ।
कन्हर पन कर हल्ल जग फतैपुर जुट्टिय ॥
मह तोर बदन राठोर तन वीर नूर बरसावियो ।
पन झल्ल पूर मारन मरन येम भरज्जन भावियो ॥१३३॥
लख बटेर सिञ्चान मनहु चीतो मृग मारन ।
हेरि पत्थ अमद्रथ बाघ हेर्‌यो मनु बारन ॥
हर हेर्‌यो मनु मार सोर हेर्‌यो हुतासन ।
सर हेर्‌यो आगस्त पनग हेर्‌यो पनगासन ॥
पायो कुलग कुल बाज मनु, भीम दुसासन पावियो ।
भासुरा सीस 'लावैं' मसफि येम भरज्जुन भावियो ॥१३४॥

१३० यहां 'पत्र' के स्थान पर 'पत्त' पाठ होना चाहिए। चक पत्त = दिशाओंके मालिक। विचलाति = विचलित हो गये।
१३१ सफ = पंक्ति, कतार। खिज्ज = खिजना, टूटना। खिवैं = चिनगारी निकलती है चमकती है। डंवर = समूह। गोम = घुमता गया।
१३२ चित्रागढ़ = चित्तौड़। पिरथुर = पृथ्वीराज। अरबुद्दनि = अर्बुदाचल, आबू पहाड़।
१३४ पत्थ = पार्थ अर्जुन। बारन = हाथी। मोर = कामदेव। मसफि = दूर कर।

जिमि आलघर सक्कि जुद्ध जुट्टन हर धायो ।
हैहय नै हुकार मनहु फरसाधर धायो ॥
पडव पत्य सहाय कृस्न धायो जिमि जद्दव ।
कपि सुकेतें मेघ मनहु धायो धुर भद्दव ॥
हय हक्कि बीर मातुर यतै ग्ज ब्रवर नम छावियो ।
लावै उवेस असुरां लरन येम भरज्जन भवियो ॥१३५॥

दोहा

यम भरज्जुन भाविया भावा' मधि राठोर ।
तदन रवद्दनके हिये पर्‌यो भचानक सोर ॥१३६॥
तुरकनके भागम तदन कर गहि ऐंचें काल ।
भाये जुत्थपै जुत्थ मनु सिहालय भगाल ॥१३७॥
के मरना के मारना यम नवाब पन झल्लि ।
हम ऊतरि हैं फीलतें 'सावो कोट उत्पल्लि ॥१३८॥
फिरी प्रबल चतुरगनी पुर दुरग चहुं कोर ।
इत हिन्दुनि उत भासुरनि दगी तोप दहु भोर ॥१३९॥

छन्द मोतीदाम

यतै दुहु भोरनि दग्गिय तोप किये मनु काल प्रसै कृत कोप ।
मिसे सद मध्य जमूर जुगाल किलक्कत जुग्गनि आनि कराल ॥१४०॥
मयो दुहु भोर भयानक सद्द पर्‌यो उन्मत्त मतगनि मद्द ।
भयो उर सूरनके उच्छरग भरत्थर कपिम कातर भंग ॥१४१॥

१३९ फिरी = घूमी घूम गई, घेरा डाल लिया । दुरंग = किला ।
१४० सद = शब्द । सदमध्य = तोपोंके शब्दोंके बीचमें । जुगाल = दोनों ओरके ।
१४१ उछरग = उत्साह ।

धुनी उडि धार उपट्टिय ज्वाल किधों धन तुट्टिय विज्जु करास।
सुपक्कनि तोप जमूरनि जुट्टिट परं नर हुवर प्रान विछुट्टिट ॥१४२॥
उठी झर सोर वियोरत बाय लगी मनु ग्रीषमकी ऋतु लाय।
तसत्तलि तोय तते मनु तेल लग दुहु मोरनितें मह लेस ॥१४३॥

छप्पय

मुख्य तनय सादूल सुभट सगी रोपारुन।
सजि आयुध सन्नाह भींटि पक्खर तोपारुन॥
लल खग्गनि खडिहु, येम बायक मुख बुल्लै।
पाहन रेख प्रमाण पनै पूरन पन झुल्ले॥
हय हक्कि समुख चतुरगनी बहुरि मुगल दल मारिहू।
करि जुद्ध येम चवग्गनि फिरि आमुर देश प्रजारिहू ॥१४४॥

दोहा

पनयसिंह पद्धरपती सूरवार गहि सार।
तदन मुगन दलपै प्रबल मम हक्के तापार ॥१४५॥

छंद मोतीदाम

चढे मनु सिंधु उलघन पाज करी मनु सिंह करीनिप गाज।
किधों बडवानल कोप समुद्र किधों हथनापुरप बलिभद्र ॥१४६॥

१४२. धुनी = धूनी धुआँ धूम।
१४३ झर = लपट ज्वाला। सार = बारूद। वियोरत = फैलाना। बाय = वायु।
लाय = अग्नि। तसत्तलि = तलातल तडका। तते = गरम हो गया।
१४४ रोपारुन = गुस्सेसे लाल। तोपारुन = घोडोंको। चवग्गनि = चौगान, मैदान।
१४५. तोपार = घोडे।

किधों कुल अद्रनि इद्र हुकारी किधों कुल कद्रुनिप पनगारि ।
किधों सर सोखन कोप अगस्त किधो द्रुम डारिनपैं गज मस्त ॥१४७॥
किधों कुल रावनपैं रघुराय किधो कुल कंज हिमालय-वाय ।
किधों सहिस्राभुजपैं दुजराम, किधो हनमत असोक अराम ॥१४८॥
किधों इमकुंभ वृकोदर हत्थ किधो अमद्रव्यहिपैं पन पत्थ ।
किधों त्रिपुरासरपैं त्रिपुरारि किधों मुरदानव सीस मुरारि ॥१४९॥
किधों मृग जुत्थनप मृगराज किधों लखि चग कुलगनि वाज ।
किधों दसके मखपैं हर ताप किधो कुल आवदपैं ऋषि थाप ॥१५०॥
किधों घननादपैं लछ्मन बीर जिही कुल मेच्छ पनू हमगीर ॥१५१॥

दोहा

तेज बाजि हक्के तदन पनयसिह यह विद्धि ।
मुम्म चढ्ढे जेते किलम मरे परे धर मद्धि ॥१५२॥
किते मोह कीने किलम लग्गे लोहन काय ।
प्रबल नरुकनके तदन सकर भयो सहाय ॥१५३॥
येम जोरि चतुरगनी पद्धरपति पन्नेस ।
किलम सहारनको भयो बीरभद्र गनमेस ॥१५४॥

छंद भुजंगी

करो तेज तांजीनकी बाग झल्ले धरा गूटिवेका महासूर चल्ले ।
मतो मत्ति ले सग जगीन सन्ने पर मेच्छ किल्लोंनपैं जाग धन्ने ॥१५५॥

१४७ अद्रनि = पहाड़ । कद्रुनि = सर्प ।
१४९ वृकोदर = पांडुपुत्र भीम । पत्थ = पार्थ, अर्जुन ।
१५० चग = चंगे, मोटे ताजा । कुलंग = एक बगलाकी जाति ।
१५१ हमगीर = समान स्थायी । जिही = ज्यूंही वैसे ही ।
१५२ यह विद्धि = इस प्रकार । मुम्म चढ्ढे = सम्मुख आया ।

हरी दस मासीस भूमी प्रजारी परे आसुरोंके घरो सोक भारी ।
पुरी प्रज्जरी मेच्छकी धूम धायो धरा व्योम धप्पे मनूं अभ्र छायो ॥१५६॥
मिले नग्र मेच्छदवारे गरद्द भयो टूक भारी हहकार सद्द ।
चके भोचके ताफनी वृद्ध छोना, किती आसुरी गर्भ थांवत ऊना ॥१५७॥
मृगाकसीपी त्यों पुरी चक्र फूटी किधों धीर पुबीर लाहार जूटी ।
हरे कोपि कुट्टी पुरी त्यों भ्रनगी विधूसे पनै मेच्छकी भूमि चगी ॥१५८॥

दोहा

बूडी सोक समुद्र बिच जीव निसासनि जात ।
बीबी दवलउजीरकी यम लिखि भजी बात ॥१५९॥
'पना' एक रघर सुना जिना दिया फुरमाया
पकरेंगे हमको वहै आजकालमें आय ॥१६०॥
सकल 'टूक' वसवान खल सरस भये तजि वंक ।
सघि करहु 'करनेश'तें यम लिखि भजे अंक ॥१६१॥

छंद नीसानी

यम लिखि दोलउजीरन पुरजा पहुँचाया ।
खान विरादर नोकरा सबको बुलवाया ॥

१५५. मसले—पकड़ी । मतो मत्ति—अपने आप । सभ—सभा, फौज । घने—बहुत ।
१५६ मासीस—दोलत । हरी—छीन ली । धायो—फैल गया, दौड़ा । धप्पे—व्याप्त हो गया, भर गये ।
१५७ अभ्र=बादल । नग्र—नगर । गरद्द—गारत हो गये, बरबाद हो गय । चके भो चके—घबड़ा गये । छोना—लड़के, बच्चे । ऊना—अपूरा ।
१५८. मृगाकसीपी—हिरण्यकश्यप । चंगी—ताजा ।
१६ रघर—प्रधानके पक्के राजपूत । जिना—जिसने ।
१६१ वसवान—बसने वाले ।

सबके बीच मसूरखां पुरजा बचवाया ।
फिर कासीद जवानदां समंचार सुनाया ॥१६२॥
उस पत्रै' सादूलदे सब देश जराया ।
जारी सब जरातिको मध छार मिलाया ॥
सेहाडबर घूमते घर अम्बर छाया ।
हल्ला बोलि हकारिक किल्ला गिरदाया ॥१६३॥
'टूक' समेती भूमि गढ़ लूटनका दाया ।
करि समझासि नवायका सबनै समझाया ॥
उस बरि यो दोसे' नवाब पुरजा सुनि पाया ।
अहर भरे जिह्मग जिम मन रोपण छाया ॥१६४॥
रोप मुसल्ले आनि उर हुल्ले सिर लग्गो ।
उस विरियों सुम्मान'वा 'हनुमत' उमग्गो ॥
सिवरा'के हनुमत' भी बांई भुज लग्गो ।
केसर सन्ने कापरे कर तेग उनग्गो ॥१६५॥
पानिप तासे भेरि नद बीरा रस बग्गो ।
केते सिंधू राग सुनि कातर गन भग्गो ।
तोपन दिघ्घ भवाजतें धरमी धग धग्गो ।
कोल कमठ्ठ जार परि शिर धूनि पनग्गो ॥१६६॥

---

१६२. मै=को । पुरजा=पत्र ।
१६३. दे=के । छार मिलाया=मिट्टीमें मिलाया, बरबाद किया । गिरदाया=घेर लिया ।
१६४ समेती=सहित । दाया=हक । जिह्मग=टेढ़ा चलने वाला सर्प ।
१६५ हल्ले सिर लग्गो=हमला कर दिया । सन्ने=सने हुए, रंगे हुए । कापरे=कपड़े ।
१६६ धग धग्गो=कंपित हो गई ।

कारतूस घन युद्ध कर सुम्मा लग धग्ग ।
एक पलीती कासिका दह्न भोरनि दग्गे ॥
रिंजक प्याला सोरही झाला जगमग्गे ।
यारो परलै कामदी ज्वालानल जग्गे ॥१६७॥

छन्द मोतीदाम

मिलक्किय दीन दहूजुध पूर, हलक्किय बैठि बिमाननि हूर ।
किलक्किय जुग्गनि शब्द कराल ललक्किय भूमि किते रुहिराल ॥१६८॥

तुपक्कनि तोप जमूर जुसास परघ्घन सूल गदा भिंदिपाल ।
गुपत्तिय खंजर धूप कटार करत्तिय चक्क चलै चुकमार ॥१६९॥

फरी पिसतोल गुसेल कुठार, चकै नन हृत्थ बकै मुख मार ।
जुरै कहूं सीस बिहीन कबंध परै कहू काल फला कुल फंध ॥१७०॥

किते बिन पाय परे तरफात किते कढि प्रान पयाननि जात ।
किते कर पांय परे भनमेल रचे मनु भूमि प्रपंचिय खेल ॥१७१॥

१६७ धम—ज्वाला । युद्ध कर—युद्ध कर, लग्न कर, दाग कर । सुम्मा—तोपको साफ करनेका डंडा, जिसके सिरे पर एक गुच्छा लगा हुआ होता है । लग धग्गे—कंपित हो गए । पलीती—बत्ती । रिंजक—तोपके कानमें रखी जानी वाली बारूद । प्याला—तोपका कान । झाला—ज्वाला ।

१६८ मिलक्किय—मिले । दीन दहूं—दोनों धर्म वाले, हिन्दू, मुसलमान । ललक्किय—बढ़े । रुहिराल—खूनके नाले ।

१६९. जमूर—छोटी तोपें । जुसास—बड़ी बन्दूक । परघ्घन—भागल । सूल—त्रिसूल । भिंदिपाल—गोफन, गोफणा, एक अस्त्र विशेष । धूप—तलवार, खांडा । करत्तिय—कतरनी । चुक—गदा ।

१७० फरी—शस्त्र विशेष । गुसेल—एक प्रकारका अस्त्र मूल प्रतिमें "गुसाल" पाठ है । जुरै—जुटे, भिड़े ।

१७१ तरफात—तरफ़ड़ाना, छटपटाना ।

लई पद चंपि ग्रगूठनि भूमि सरव्वसु दव्व लई मनो सूमि ।
सरे हनुमत्त युद्ध तिहँ ठौर लये मनु हिंदव सिंधु हिलोर ॥१७२॥
लये तहँ मीर मसूरहि मारि हने मनु सिंधु तनै त्रिपुरारि ।
पर्‌या रन खेत मसूर मलेच्छ मचक्किय सेन किलमनि पच्छ ॥१७३॥

दोहा

दज्जहि पूरन जाम प्रति मनहु घरी घरियार ।
यह प्रकार दुहुँ ग्रोरते मच्चे सार ग्रपार ॥१७४॥
खान पान सुध बीसरी घरी न उरमें धीर ।
मरन मसूर मलेच्छको समर दवलउजीर ॥१७५॥

छन्द मोतीदाम

करे तहि दोलउजीर बिलाप भयो सुरभंग महिख्ख ग्रलाप ।
लख्यो तन तेगनतें चकचूर पुकारत मेक मसूर मसूर ॥१७६॥
बढ्यो उर सोक ग्रसाधि प्रलाप तच्यो बडवानलकी मनु ताप ।
पर्‌यो भुव प्रान दुखी मुख फैन तलफ्फत व्याधि हन्यो मनु मैन ॥१७७॥
यते बहु वीर्य बिरादर ग्राय दयो उर धीर किते समुझाय ।
सुनी रजपूतनकी कुल रीत परी हमको यह सच्च प्रतीत ॥१७८॥
मरै तिनके घर मगल होय, करै बुध मृत्यु बिलाप न कोय ।
करो नन सोक दवल्लउजीर, करा ग्रब पाव धरो उर धीर ॥१७९॥

---

१७२. चपि = दाबना । दव्व लई = दावकी ग्रधिकारसें कर ली । सूमि = मोहोंके सुरोंसे ।
१७३ तनै = तनय, पुत्र । मचक्किय = डरकी हिली, हटी ।
१७६ महिख्ख ग्रलाप = भैंसेकी तरह चिल्लाया ।
१७७ तच्यो = तपा हुग्रा । मैन = हारया ।
१७८. बिरादर = भाई ।

छंद निसानी

मरा मीर मसूरकों दुख धारा तब्बी।
ज्यों घ्रत डारा आगिमें हिय पावक हुब्बी ॥
जानिक तत्ते तेलमें बूँदै परि अब्बी।
जानि मिस्र्तें सेरदी पग सांकल दब्बी ॥१८०॥

कायमखा कपतानसे करि वार्ते चब्बी।
सेख इनायत खानके मुज पलटण डब्बी ॥
टेरि कुतबीखानसे खुद कहा मुरब्बी।
हल्से पूठे ना फिरै कम उसकी फब्बी ॥१८१॥

के तुम किल्ले तोरियो के मरियो सब्बी।
देखो नब्बी क्या करै कर नास तसब्बी ॥
उस बिर यो वज्जीरदौलकू कह कुतब्बी।
जानिक सुर्गे लेनको हिरनाख्य मुरब्बी ॥१८२॥

दोहा

रहो नवाब निसक उर सोक न करहु सयान।
मारा मीर मसूर सह खर्‌यो कुतब्बी खान ॥१८३॥
प्रलय सिंधु सम खिजि असुर गवने तोपन दग्गि।
मही काल वासर समय यहि विधि बसे उमग्गि ॥१८४॥
स्याम बसन सायुध सिली मिली भयानक भेस।
मनहु हलाहलकी सरित पुर मधि कियहु प्रवेश ॥१८५॥

---

१८० तब्बी = तप। हुब्बी = उठी,। अब्बी = आब पानी। मिस्र्ते = कोपित।
१८१ चब्बी = टही, चिढानेको। डब्बी = संमझाइ अधिकारमें दी। पूठे = पीछे।
फब्बी = शोभा लागी। मुरब्बी = मालिक स्वामी।
१८४ मही काल वासर = प्रलयका दिन।

छप्पय

सेन समुख तिह समय आनि 'हाजरियो जुट्टे ।
हुय कोलाहल शब्द किलम हक्वान कुट्टे ॥
खजर सेल कटार तेग सुरकायन तच्छे ।
स्याम काज सिर दयो पाव धर दिये न पिच्छे ॥
सिर माल काज सकर लयो सिर विहीन धर फिर लर्‌यो ।
वरि रंभ गयो सुरलोक मग एम दरोगो हाजर्‌यो ॥१८६॥

दोहा

सुनत मत्त रनजीत यम आगम असुर समाज ।
मनहुं जुत्थ मातग पर लखि गमन्यो मृगराज ॥१८७॥
उठे कुतब्बीखान अरु यत रणजीत सजोर ।
वदन पत्य जयद्रत्य लौं पर्‌यो दहुनि पर जोर ॥१८८॥

छंद भुजंगी

रणों' खांकुतब्बी तणें सीस घल्यो ।
मनो मत्त मातग सूनी मचल्यो ॥
खिज्यो खांकुतब्बी मनूं सिंधू कोप्यो ।
किर्धो पत्थके रत्थपै द्रोम कोप्यो ॥१८९॥
जरासिंध लौं भगमें जोर पायो ।
पनग्गी मनू पाँय पुच्छी दबायो ॥
दहूकी भनी मोसरों मुह चढ्ढी ।
वहूके करों ज्वालसी धूप कढ्ढी ॥१९०॥

---

१८६. कुट्टे = कूटे, मारे । तच्छे = छील दिये । स्याम = स्वामी ।
१९० भनी – फौज । मोसरों – मर्दों, होठोंके पास ।

दुहूँके जुरे छोहते नैन छक्के ।
खरी लाट लग्गी मनू लोह पक्के ॥
दहूँ मेरसों भूमिपै मंडि पाँव ।
सहू वीर वक्के फर दाव घाव ॥१९१॥
गहू प्रान वाजी रची मोह छडु ।
दुहूँ जै पराजै मुर्यों भार मड्डे ॥
सहूँ जेम जुट्टे मधु कीट दानू ।
मनी हेत श्रीकृस्न आमूत मानू ॥१९२॥
किये मेच्छ वोह किते पूर घायं ।
भयो भीम कैलास पत्ती सहाय ॥
वही मग्ग रनाल्य हत्थ रूक ।
तुपक्क फरी मुट्ठि मच्छं विटूक ॥१९३॥
पर्यो साकुतम्बी सबै सेन भग्गी ।
लगे लार हिन्दू लिये वेग मग्गी ॥
भई जीत हिन्दूनकी मेच्छ हारे ।
किले मच्छिते कूट पीछे निकारे ॥१९४॥

दोहा

एक सहस अरु एक सत एकादस शुभ मुद्दित ।
"रैनालय" कट्टे रवद किल्ले बाहिर कुट्टि ॥१९५॥
किल्ले भिरि भग्गो किसम ज नहिं जुद्टन जोग ।
मरे डरे घायल परे भये अमीरन रोग ॥१९६॥

---

१९१ वोह = क्रोध । मेर = मेरु पर्वत ।
१९२ आमूत = आमरण । वोह = वार । घायं = घाव ।
१९३ रूक = तलवार । मेक = एक । रनालय = रणजीतसिंहका स्थान लावाकी युद्ध भूमि । वही = चली । विटूक = दो टुकडे हो गये ।
१९४ रवद = म्लेच्छ, मुसलमान ।

अहुटे दवल्उजीर पैंह जियत रहं जे आय।
अपनी अपनी बुद्धि बल, कहत सकरू समुझाय ॥१६७॥

वचनिका

नवाबके सामने आया, हल्लेका जिकर चलाया। किस तौरसे आजका दग्गा कौन गिरा कौन भग्गा। उस वक्त बोले काल्‌ू मीर, फुरतके फरिस्ता अकलके उजीर। इस किल्लेमें सुजानसिंघ ठाकर, जिसके 'हाजर्‌या' चाकर। 'हाजर्‌या'न आपा विसराया गल्लेके साथ बाहरको आया। 'हाजर्‌या'ने जान झोका आफतायने विमान रोका। निमककी सरीतीप सिर दिया हूरके विमान बैठि आसमानको गया। आजके हल्लेमें नवाबकी दुहाई, सीनासे सीना मिला कर तरवार चलाई। सब जवाम वहां गया था, किल्ला लेनामें कसूर ना रहा था। उस सुन्ने रनि मूठ वालेने जुल्म किया तमाम मुसलमानोंको घेंचि किल्लेकी रनीमें दिया। क्या अच्छी तरवार चलाई जिस वक्त बोले खान दुर्जन काल-पीके सैयद इलाहीबकसके फरजन। हिन्दु जाति कामके काल बाडबके

---

१६७ भटुटे = वापस लौटे।
वचनिकामें-जिकर = चर्चा, प्रसंग। गल्लेके साथ = हल्लेके साथ। जान झोका = तन-मनसे मेहनत करना तन मनसे लगा। सरीतीपै = एवजमें। घेंचि = खींच कर। रनी = खाई। विधुड = छायो। वधास्या = दरवाजेके बीचमें लगा हुआ पत्थर जो किवाड़ोंको रोकता है। (यहां वधास्याकी टक्करका अर्थ है अभिप्राय) वरसं = आकाश। भचट = फेंट, भोड़ा चपेट।

वचनिका = यह भी दवावैतकी तरह होती है। अर्थात् यह भी गद्यका एक रूप है। इसका भी 'रघुनाथ रूपक" में इस प्रकार लक्षण लिखा है—

वचनिका दो प्रकारकी होती है पद्यबंध और गद्यबंध। पद्यबंधके दो भेद हैं। प्रथम भेदमें तो केवल 'वारता' ही रखना चाहिए, दूसरे भेदमें वारतामें मोहरा (अनुप्रास) रखना चाहिए। और दो ही भेद गद्यबंध वचनिकाके होते हैं। प्रथम

स्याम। सेरोंके मुंड, यमके वितुंड। हूरोंके हार दिलके उदार। कालीके चक्र, बलाल्याकी टक्कर। उरसकी तेग मारुतका वेग। पोरसका भीम उदरकी सीम। बीरोंके वीर सागरके धीर। नाहरके थाहर लोहकी लाट, जगके आलम जमकी सी झाट। लावाके किल्लेमें ऐसे रजपूत सारके सगर बलके मजबूत।

दोहा

यम बुल्ले इकसारखां सुनि नवाब मह धाव।
सकल बिरादर बीगरे भव प्रानन पर भात ॥१९८॥
कर कफनी कोपीन कर कर करवा मर माव।
अब मक्का जबो उचित नवर्णो नहीं नवाब ॥१९९॥
आयुषखान अजीमखां यम मक्की दहूँ भाम।
स श्रुति संमर सबनके लगी करेजनि लाय ॥२००॥
कही मीर मारुतखां सुनहु दवलउमीर।
क मरिहैं कै मारिहैं नहि फिर होंय फकीर ॥२०१॥

छंद भुजंगी

चढ्यो	कोपि	उज्जीरदोला	नवाब।
लिये	जुद्धके	सग	अगी सबाब ॥

मेदमें तो आठ मात्राका पद होता है और दूसरे मेदमें मात्राका पद होता है। उक्त भचमिका पदमय भचमिकका दूसरा भेद है। इन सब बातोंको जाननेके लिए रघुनाथ रूपक जो एक उत्तम ग्रंथ है देखना चाहिए।

१९९. करवा = शिकोरा, मटकाना मिट्टीका छोटा गिलासनुमा पात्र। नवणो = नम्र होना।
२०० अय = अग्नि। श्रुति = कान। संमर = सुन कर।
०२. सबाब = असबाब सामान।

करी मग्र तोप किये नद्द थई ।
सदा मादिक पाम मत्ते बुरई ॥२०२॥
किये भूत कप्पाटकी फेट फज्ज ।
परि त्रास सोई भई प्रान तज्ज ॥
सिले टोप सन्नाहके मान सज्जे ।
भयो कोह भेरी भयानक वज्जे ॥२०३॥
मते लागया नै बडे राग सिंधू ।
मिले साजि हल्ल महावीर हिन्दू ॥
नरुकूनि से सस्त्र हत्थौ उकड्डे ।
किधों कोटर्ते सावठे सेर कड्ढे ॥२०४॥
दहू दीन मारानमें प्रान झोंके ।
लगे खेल विम्मानकों भान रोके ॥
मुनि वीर ऊमाहि ले सभू आयो ।
तजे लोक वृन्दारकू वेल छायो ॥२०५॥
घरी धार लों सांवठी सोर दग्गी ।
सप्यो लोक तेगूनकी रीठ बग्गी ॥
भिरे वीर बके गर्जो घाव मड्डे ।
परे पाव हीन हर्य प्रान छंडे ॥२०६॥

---

२ ३. फेटफज्ज = टक्कर देनेके लिए । कप्पाट = किवाड़ । किये भूत = पागल किये । त्रास = डर ।

४ सांवठे = इकट्ठे । कड्ढे = निकले, बाहर आये । मते सिंधु = इधर सिंधुरा (वीर रसकी राग में) 'धूहे' कहे जाने लगे ।

५. मारान = युद्ध । वेल = बेलकी तरह ।

६ रीठ = युद्ध ।

किते भग हीने मुसल्ल कजाकी ।
लरे मृत्य वत्ये रहे प्रान बाकी ॥
कित भूत वैताल भैरु किलक्कै ।
किती जुग्गनी गिद्धनी योन [illegible] ॥२०७॥
घनी जावरेको भनी जोर गिल्यो ।
घनै घाय धारानके घान घल्यो ॥
उतै आवरे टूंक पत्ती मुसल्ले ।
यतै रुक हत्यो करन्नेश मल्लै ॥२०८॥

छन्द दुर्मिला

उतसें तुरकान यतै हिन्दवान दहूं पुर बाहर जुद्ध किये ।
तिह ठोर रठोर 'भरज्जन' से 'रनजीत' उदग्गनि खग्ग लिये ॥
बहु राम रु स्याम' हनू' सनये हरनाथ' 'कुमेर क पूत हुसे ।
बहु रेवतसिंह गुपाल सुजान' 'घनै' सुतनै किरवान मसै ॥२०९॥
'यशतेश' सुजान'गोविन्दरु'पातिस 'गोवरधनरु' सदान'पती ।
करनेश'के पुत्र 'उदैकरनदेव' दहू उमगे मृगराज भती ॥
उगमी किरवान मियाननतें मुगली भद कट्टि परैं बिथुरे ।
घार पेस पिनाकनि बाननकी भवली भनहद्द सबद्द करै ॥२१०॥
भरिवद्ध सिसम्द कराल किते करि कोप कुलाहल घम्म कढे ।
करनेश उजीरववल्लनकी दहूं भोर सुहाई मनुप्प पढे ॥

---

२०८ घोर गिल्यो=बलसे भरा हुआ । घने=अधिक,अनेक । घाय=प्रहारोंस, वारोंसे । घान=समूहमें । घल्यो= सम्मिलित हुआ । रुक=तलवार ।

२१० भती=भांति तरह । उगमी=निकली । भद=गिरनेकी हल्की आवाज, जैसे पट, धप, धम वैसे ही भद है । बिथुरे=बिखर गए, फैल गई ।

बजि सार कुठारन वारनि ले, नर हैमर गैमर देह फटे।
खिर बाढ़ परे खग धारनतें मनु मारनतें चिनगी उछटें ॥२११॥

कछवाह भक्टक भूमि रमैं तुरकान हने खग धारनतें।
मनु सप्त तन खिनि काटि पचास, तलातल भूमि कुदारनतें ॥
हिंदुवान बिमान अपच्छरकी गलबाँह मनो दमनी घनकी।
तुरकान लिए परलोक परी गमनी मनु जुटिटी जुराफनकी ॥२१२॥

हर मुण्डनि हार बनाय हँसे बिहसी सब जुग्गनि श्रोनछकी।
पल खाय अघाय पलच्चर नाचत भूत पिसाचनकी किलकी ॥
बजि भैरव डैरव जन्त्र मुनी धुनि गिद्धनि गृद्द अघाय उडी।
लखि आतुर सार प्रहारयतें किलमी गति सोक समुद्र बडी ॥२१३॥

ढरके मन कुम मजीठनके रनभूमि तलातल रक्त भई।
करनेश हनी खग धारनसें खल सेन चलद्दल भूमि भई ॥
कमनैत खिनोट पटै कुसती उभगी सब सिद्धि किलमनकी।
फिरि तोप न दग्गिय खग्ग न बग्गिय भग्गिय सेन किलममकी ॥२१४॥

२११ खिर=गिरना टूटना। बाढ़=धार, पाँण। आरन=लुहारकी भट्टी। उछटें=उ[illegible]
सवी है। वारनि=प्रहारोंसे। अरिवद्ध=शत्रुसे घायल हुए मनुष्य।

२१ घनै=बमय पुर्ण।कुदारनतें=कुदालसे।दमनी=दामनि बिजली।जुराफनकी=[illegible]
जिराफोंकी जुराफ, अफ्रीकाका एक पशु विशेष जिसकी गरदन बहुत लम[illegible]
होती है।

१२. डैरव=डमरू।
गुद=गृद्ध। अघाय=तृप्त हो कर।

२१४ ढरके=पड़े हुए, गिरे हुए।

दोहा

यम जुटटे हिन्दू असुर जुट्टे माल जसीर।
हुय सग्गो सग्गो सधन भग्गो दवल्उजार ॥२१५॥

छप्पय

जुध जीत्यो करनेस येम मुनि जय बजायो।
जुध जीत्यो करनेश ईश चुनि सीश भयायो ॥
जुध जीत्यो करनेश बीर बावन यम वक्के।
जुध जीत्यो करनेश श्रोन जुग्गनि सब छक्के ॥
पलचार हूर अप्छर सकल भूत प्रेत अगम जती।
नर नाग देव यम उच्चरत जुध जीत्यो पद्धरपती ॥२१६॥
जुध हारयो नब्बाव जुध पद्धरपति जीत्यो।
सर छिल्लर सुकि गयो येम भासुर दल बीत्यो ॥
तिमिर घोर तुरकान भान कूरम लखि भज्ज्यो।
कुंजरकुल संहारि मनहु मृगराज गरज्यो ॥
जुध जीति मेक 'महुकम' जदन 'फतयसिंह' घर भामरन।
भारथ' समान भाररथ करि किलम हूंत जीत्यो 'करन' ॥२१७॥

दोहा

'दांतोपुर' दक्खिन दिसा सीकर' उत्तर कान।
'कूहर' पच्छिम जानिए पूर्व औणका भान ॥२१८॥

---

२१७. छिल्लर—छिछला, कम गहरा। बीत्यो—समाप्त हो गया। भारत्य कर—युद्ध कर।

ताक मद्धि 'उदपुरो', बसत सुकविको ग्राम ।
उन्नत परवत हरसको तहँ भैरवको धाम ॥२१६॥
कवि अन कवियो विध्य कुल, धारन चंडी धाम ।
'प्रभू भक्तके वंशमें यह मम नाम गुपाल ॥२२०॥
सूर वीर रजपूत कुल कवि चारन कुल जानि ।
जो न वहत निज धर्म जुत दहु कुल गौरव हानि ॥२२१॥
आदि धर्म छिति छत्र कुल पूरन पत्र प्रतीत ।
दान करन मारन मरन, रजपूतों यह रीत ॥२२२॥
सँग रहनो सपति विपति सुख दुख सहनो सत्य ।
कीरति कहनो दान जुध, कुल चारन यह करम ॥२२३॥
याते हम यह ग्रन्थमें परिश्रम कियो अपार ।
सुजस कच्छ कुलको कियो अपनी मति अनुसार ॥२२४॥

इति श्री कूर्म यश प्रकाश म्लेच्छ विध्वंस कलह केलि वरणन कवि गोपालदान विरचित द्वितीय सावा जुद्ध समाप्त समाप्तोयं पंचम प्रसंग

इति ग्रन्थ समाप्त ।

---

२२१. पैज=प्रतिज्ञा ।